Teachers' Manual

कक्षा 1 से 5 तक

हिन्दी व्याकरण

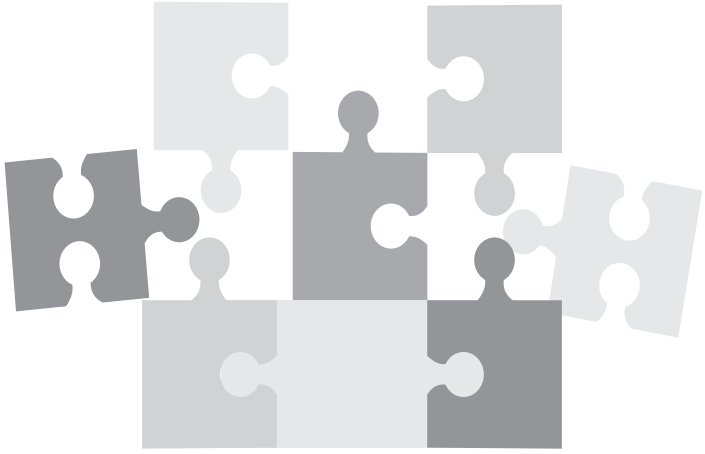

हिन्दी व्याकरण- 1

पाठ—1

भाषा क्या है?

जरा बताइए तो

- पेट में दर्द होने पर नन्हा बच्चा रोकर बताएगा।
- हमारी मम्मी घर में मौखिक भाषा बोलती हैं।
- ठण्ड लगने पर हम मम्मी को बोलकर बताते हैं।
- यह बात हम बोलकर बताएँगे।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) **(i)** पढ़कर
(ख) **(iii)** इशारे से

2. (क) (✗) (ख) (✓)
(ग) (✓) (घ) (✓)

3. 1. लिखना, 2. पढ़ना, 3. बोलना, 4. सुनना

4. (क) (ii) सुनना
(ख) (i) बोलना
(ग) (iv) लिखना
(घ) (iii) पढ़ना

सोचो जरा सोचो

- हम स्कूल जाते समय जानवरों की, पक्षियों की, गाड़ियों की व अनेक लोगों की आवाज सुनते हैं।
- हम अपनी माँ से खाना बोलकर माँगेंगे।

करके देखिए

छात्र-छात्रा स्वयं करें।

पाठ—2

सीखें वर्ण, बनाएँ वर्णमाला

जरा बताइए तो

- मुँह से निकलने वाली ध्वनियों को वर्ण कहते हैं।
- वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट

2. ट माटर, अ नार
त रबूज, ऐ नक
प तंग, अं गूर

सोचो जरा सोचो

- हँसते समय—हा-हा-हा तथा रोते समय ऊँ-ऊँ-ऊँ की आवाजें निकलती हैं।
- कुत्ते के भौंकने पर भों-भों-भों तथा बादल के गरजने पर गड़-गड़-गड़ की आवाजें आती हैं।

करके देखिए

- ताली बजाने पर - चटाक-चटाक तथा गुब्बारा फोड़ने पर 'फट्ट' की आवाजें आती हैं।

पाठ—3

स्वरों के निशान : मात्राएँ

जरा बताइए तो

- हर स्वर के लिए निश्चित चिह्न मात्रा कहलाता है।
- नहीं, 'अ' स्वर के लिए कोई मात्रा नहीं होती है।

आइए, अब लिखते हैं

1. फूल बंदर मोर
पुल सेब मछली

2. मा → माला मु → मुर्गा
मे → मेज मि → मिठाई
मो → मोर म → मछली

सोचो जरा सोचो

छात्र-छात्रा स्वयं करें।

करके देखिए

केला चिड़िया
चूहा गमला
कोमल तितली

पाठ—4

शब्द और वाक्य

जरा बताइए तो

- वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं।
- शब्दों के सही मेल से वाक्य बनते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) सैनिक **(ख)** भवन
(ग) मटर **(घ)** खरगोश

2. (क) घर **(ख)** चिड़िया
(ग) पढ़ा **(घ)** दर्जी

3. (क) माला गीत सुना रही है।
(ख) घोड़ा दौड़ रहा है।
(ग) चिड़िया चहचहा रही है।
(घ) मैं रोज सुबह दूध पीता हूँ।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

अ च क न	**क** ट ह ल	**ब** र ग द
ज	स	र
ग	र	त
र	त	न
प र ब ल	**श** र ब त	
ल	ल	
ट	ग	
न	म	

पाठ-5

नाम वाले शब्द : संज्ञा

जरा बताइए तो

- नाम बताने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।
- छात्र स्वयं करें।

आइए, अब लिखते हैं

1. छात्र स्वयं करें।

2.

मछली	हाथी
छतरी	कमल
कबूतर	जहाज
सूरज	तरबूज

3. (क) स्थान **(ख)** व्यक्ति
(ग) सब्जी **(घ)** वस्तु

सोचो ज़रा सोचो

- मेरा घर
- रविवार
- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें ।

पाठ-6

पुरुष-स्त्री

ज़रा बताइए तो

- पुरुष या स्त्री बताने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं।
- लिंग दो तरह के होते हैं—**1.** पुल्लिंग **2.** स्त्रीलिंग।

आइए, अब लिखते हैं

1. पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
राजा	रानी
चाचा	चाची
नाना	नानी
भाई	बहन
मोर	मोरनी

2.

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
(क) लड़का	**(iii)** लड़की
(ख) दादा	**(iv)** दादी
(ग) मोर	**(i)** मोरनी
(घ) राजा	**(ii)** रानी

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।
हाथी, घोड़ा।
छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

लड़का पुस्तक पढ़ रहा है।
बहन सो रही है।
माताजी खाना पका रही हैं।
दादाजी अखबार पढ़ रहे हैं।
मुर्गी अंडा देती है।
गाय दूध देती है।

पाठ-7

एक और अनेक

जरा बताइए तो

- एक से अधिक को अनेक (बहुवचन) कहते हैं।
- एक-अनेक की जानकारी देने वाले शब्द वचन कहलाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. 1. एक **2.** एक **3.** अनेक
4. एक **5.** अनेक **6.** अनेक

2.

एकवचन	**बहुवचन**
डिब्बा	डिब्बे
टोपी	टोपियाँ
केला	केले
आँख	आँखें

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

एकवचन	बहुवचन
अध्यापिका	पुस्तकें
श्यामपट	पेन्सिलें
कूड़ेदान	मेजें
बोतल	लड़कियाँ
अलमारी	लड़के

पाठ-8

नामों की जगह : शब्द

जरा बताइए तो

- बड़ों के साथ आप लगाकर बात की जाती है।
- नाम की जगह आए शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) तुम्हारा आप उसका
(ख) मेरी उसका मैं
(ग) तुम उसे उसकी
(घ) मुझे यह हमारा

2. (क) आप **(ख)** वे
(ग) वह **(घ)** यह

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

वे	तुम	आप
यह	हमारा	ये
मेरा	वह	हम

पाठ-9

कितना और कैसा बताने वाले शब्द

जरा बताइए तो

- टमाटर का रंग लाल है।
- आम मीठा है।
- दो पक्षी उड़ रहे हैं।
- घना पेड़ है।
- चार फूल हैं।
- इमली खट्टी हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. मीठी → जलेबी कड़वा → करेला
गोल → गेंद लाल → सेब
पीला → आम

2. (क) खट्टे **(ख)** सुंदर
(ग) स्वादिष्ट **(घ)** घने
(ङ) होनहार

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ-10

काम बताने वाले शब्द

जरा बताइए तो

- छात्र स्वयं करें।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) काट **(ख)** देख
(ग) नाच **(घ)** उड़

2. (क) जाना पढ़ना सोना
(ख) चढ़ना उतरना चलना
(ग) कूदना उछलना दौड़ना
(घ) खेलना बचना पहुँचना

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ-11

गिनती

जरा बताइए तो

छात्र स्वयं करें।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) ५ **(iii) 5**
(ख) ४ **(iv) 4**
(ग) ६ **(ii) 6**
(घ) ७ **(iv) 7**
(ङ) ८ **(ii) 8**

2. गिनकर हिन्दी अंकों में लिखिए–
(क) ६ **(ख)** ३
(ग) ७ **(घ)** ५

4 Answer Key 1 to 5

सोचो ज़रा सोचो

- 8 अंगुलियाँ तथा 2 अँगूठे
- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

जाँच-पत्र—1

1. (क) (i) (ख) (i)
(ग) (ii)

2. (क) चिड़िया (ख) आप
(ग) गोल (घ) खेलता

3. (क) (✓) (ख) (✓)
(ग) (✗) (घ) (✗)

4. (क) स्कूल में घंटी बजने पर छुट्टी होने का पता चलता है।

(ख) लिंग दो प्रकार के होते हैं—पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।

(ग) समान अर्थ बताने वाले शब्द समानार्थी कहलाते हैं।

(घ) विपरीत या उलटा अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

जाँच-पत्र—2

1. (क) (i) (ख) (iii)
(ग) (iii)

2. (क) वे (ख) सुन्दर
(ग) काट (घ) पाँच

3. (क) (✗) (ख) (✓)
(ग) (✗) (घ) (✓)

4. (क) हर स्वर के लिए निश्चित चिह्न मात्रा कहलाता है।

(ख) स्त्री तथा पुरुष जाति का ज्ञान करवाने वाले शब्द को लिंग कहते हैं।

(ग) नाम की जगह आए शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(घ) हवा सर-सर सर चलती है।

5. एक गाँव में दो बिल्लियाँ आपस में बहुत प्यार से रहती थीं। एक दिन उन्हें एक रोटी मिली। वे उसे बाँटते समय आपस में झगड़ने लगीं। तभी वहाँ एक बन्दर आता है और बिल्लियों से झगड़े का कारण पूछता है। बिल्लियों ने बन्दर को सारी बात बताई। बन्दर फैसला करने के लिए एक तराजू लाया। बन्दर ने रोटी के दो टुकड़े किए और उन्हें तराजू के दोनों तरफ रख दिया। बन्दर चालाक था। वह तराजू का एक पलड़ा झुका देता और उस पलड़े की रोटी तोड़कर खा जाता। ऐसा करते-करते बन्दर पूरी रोटी खा गया और दोनों बिल्ली एक-दूसरे का मुँह ताकती रह गईं।

शिक्षा : आपस की फूट का फायदा दूसरे उठा सकते हैं।

हिन्दी व्याकरण-2

पाठ—1
हमारी भाषा

जरा बताइए तो

- भाषा के द्वारा हम अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाते हैं।
- बोलते समय हम भाषा के मौखिक रूप का प्रयोग करते हैं।
- स्कूल में छुट्टी होने का पता घण्टी बजने पर चलता है।

आइए अब लिखते हैं

(क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (×)

2. **(i)** मौखिक **(ii)** लिखित **(iii)** मौखिक
(iv) मौखिक **(v)** लिखित **(vi)** सांकेतिक

3. **(क)** **(iv)** रेंकना
(ख) **(v)** हिनहिनाना
(ग) **(i)** दहाड़ना
(घ) **(iii)** कूकना
(ङ) **(ii)** मिमियाना

4. **(क)** मुँह **(ख)** सुनकर
(ग) इशारा देकर **(घ)** भाषा

सोचो जरा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ-2
संज्ञा

जरा बताइए तो

- नाम को संज्ञा कहते हैं।
- होली, दीपावली
- गंगा, यमुना
- प्राणी, वस्तु, स्थान आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

(क) आम **(ख)** इंडिया गेट
(ग) वर्षा **(घ)** किताब

2. **(क)** प्राणी **(ख)** स्थान
(ग) प्राणी **(घ)** वस्तु

1. **(क)** व्यक्ति का नाम **(ii)** विवेकानन्द
(ख) फूल का नाम **(i)** गुड़हल
(ग) पक्षी का नाम **(v)** मोर
(घ) सब्जी का नाम **(iii)** लौकी
(ङ) महीने का नाम **(iv)** जनवरी
(च) दिन का नाम **(vii)** सोमवार
(छ) शहर का नाम **(vi)** आगरा

सोचो ज़रा सोचो

- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार
- प्राणी।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ-3
सर्वनाम

ज़रा बताइए तो

- तुम, मैं, अपना, तुम्हारा, उन्हें आदि शब्द सर्वनाम शब्द हैं।
- संज्ञा शब्द के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. **(क)** **(i)** यह (✓)
(ख) **(iii)** हमारा (✓)
(ग) **(i)** आपने (✓)
(घ) **(i)** तुम्हारा (✓)

2. **(क)** हमारा **(ख)** मेरी
(ग) मैं **(घ)** यह
(ङ) हम

3. (क) उसका (✓) आम (×) तुम्हारा (✓) उसे (✓)
(ख) मेरा (✓) इसका (✓) बगीचा (×) आप (✓)
(ग) तुम (✓) गुड़िया (×) समोसा (×) खिलौना (×)
(घ) नाव (×) अपनी (✓) लकड़ी (×) जिसका (×)

सोचो ज़रा सोचो

- तुम, तुम्हारा, तुम्हें आदि।
- आप, आपने, आपका

करके देखिए

- छात्र स्वयं करें।

- (i) मेरा (ii) मैं (iii) मेरे
  (iv) मैं (v) मेरे (vi) वे
  (vii) मैं, उनके (viii) हम, वहाँ
  (ix) मेरी (x) हम

पाठ-4
लिंग

जरा बताइए तो

- लिंग दो प्रकार के होते हैं—पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।
- गुड्डी।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) (ii) नौकरानी (✓)
(ख) (ii) राजा (✓)
(ग) (iii) दादी (✓)
(घ) (iii) मोरनी (✓)
(ङ) (i) कुत्ता (✓)

2. औरत - आदमी
बकरी - बकरा
हाथी - हथिनी
राजा - रानी
शेर - शेरनी
गाय - बैल
मुर्गा - मुर्गी
मोरनी - मोर

2. पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
राजा	मोरनी
अध्यापक	मालिन
बकरा	चींटी
चाचा	दादी
बैल	हथिनी

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दादा	दादी
ताऊ	ताई
पिता	माता
पुत्र	पुत्री

पाठ-5
वचन

जरा बताइए तो

- संख्या बताने वाले शब्दों को वचन कहते हैं।
- वचन दो प्रकार के होते हैं—
  (i) एकवचन (ii) बहुवचन
- बहुवचन

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) एकवचन (✓)
(ख) बहुवचन (✓)
(ग) एकवचन (✓)
(घ) बहुवचन (✓)

2. (क) पंखा (ख) मछलियाँ
(ग) मोमबत्ती (घ) तोते

3. एकवचन	**बहुवचन**
घोड़ा	घोड़े
लड़का	लड़के
गुड़िया	गुड़ियाँ
बच्चा	बच्चे
रसगुल्ला	रसगुल्ले
आँख	आँखें

4. एकवचन	**बहुवचन**
कलम	गुब्बारे
तोता	मालाएँ
बतख	गन्ने
दरवाजा	मुर्गे

सोचो ज़रा सोचो

- नहीं।
- बहुवचन

करके देखिए

पर्चियाँ - बहुवचन फूलदान - एकवचन
पुस्तकें - बहुवचन माला - एकवचन
खिलौने - बहुवचन मेज - एकवचन
घड़ी - एकवचन

पाठ-6
विशेषण

जरा बताइए तो

- गुण-दोष आदि बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।
- काला तथा खट्टी।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) हरा (✓) छायादार (✓)
(ख) काली (✓) छोटी (✓)
(ग) मीठी (✓) ठंडी (✓)
(घ) मीठा (✓) लाल (✓)

2. (क) छोटी (ख) खट्टा
(ग) सुंदर (घ) रंग-बिरंगे
(ङ) सफेद

3. मीठा → सेब
खट्टा → अचार
कड़वा → करेला
एक → किताब

सोचो ज़रा सोचो

- नीला।
- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ-7
क्रिया

जरा बताइए तो

- 'काम' के करने या होने को बताने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।
- **(i)** बारिश होना
  (ii) हवा चलना
- काम के करने या होने को 'क्रिया' कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) → **(iii)** खेलना
(ख) → **(i)** सेंकना
(ग) → **(v)** काटना
(घ) → धोना
(ङ) → पीसना

2. (क) तैरती (ख) दौड़ता
(ग) टहल (घ) जाती
(ड़) बनाती

3. (क) उड़ा रहा है
(ख) खा रहा है
(ग) तोड़ रहा है
(घ) जोतता है
(ङ) दौड़ता है

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ-8
समान अर्थ वाले शब्द

जरा बताइए तो

- माँ, माता मम्मी।
- समान अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची/समानार्थी शब्द कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं।

1. (क) फूल - पुष्प (✓)
(ख) दिन - दिवस (✓)
(ग) घर - गृह (✓)
(घ) आँख - नयन (✓)

2. (क) फूल- सुमन, पुष्प
(ख) दिन- दिवा, दिवस
(ग) घर- गृह, आवास
(घ) आँख- नयन, चक्षु

3. पक्षी- खग, चिड़िया, नभचर
गृह- घर, सदन, भवन
उपवन- वाटिका, बाग, बगीचा
वृक्ष- पेड़, तरु, विटप
बेटी- सुता, कन्या, पुत्री

सोचो ज़रा सोचो

आसमान - आकाश, गगन, व्योम
बादल - पयोधि, मेघ, जलद
सूरज - सूर्य, रवि, दिनकर
चन्द्रमा - चाँद, शशि, चन्दा

करके देखिए

(i) पक्षी, खग
(ii) पुस्तक, किताब
(iii) घर,
(iv) आँख, नयन
(v) सूरज, सूर्य
(vi) फूल, पुष्प
(vii) चन्दा, चंद्रमा
(viii) पर्वत, पहाड़, नग

पाठ-9

उलटे अर्थ वाले शब्द

ज़रा बताइए तो

- सूरज सुबह उदय होता है और शाम को अस्त होता है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) (i) बाहर
(ख) (iv) नीचे
(ग) (ii) गरमी
(घ) (iii) दुखी

2. शब्द विलोम शब्द

शब्द		विलोम
प्रकाश	→	अंधकार
एक	→	अनेक
देश	→	विदेश
मित्र	→	शत्रु
अपना	→	पराया
अमीर	→	गरीब

3. (क) अस्त (ख) शाम
(ग) पतला (घ) हँस
(ङ) एक

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

- आगे, पीछे, आगे, पीछे

पाठ-10

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जरा बताइए तो

- डाकिया।

आइए, अब लिखते हैं

1. अनेक शब्द	**एक शब्द**
जो साथ में पढ़ते हैं	सहपाठी
जो रोगियों की देखभाल करती है–	नर्स
जो खेत में काम करता है	किसान
जो चित्र बनाता है	चित्रकार

2. (क) निर्धन (✓)
(ख) परिश्रमी (✓)
(ग) ड्राइवर (✓)
(घ) माली (✓)
(ङ) निर्बल (✓)
(च) निर्दय (✓)
(छ) मूर्ख (✓)
(ज) कायर (✓)
(झ) विनम्र (✓)
(ञ) सदाचारी (✓)

सोचो ज़रा सोचो

- नहाने वाला कमरा - स्नानघर
  सोने वाला कमरा - शयनकक्ष

करके देखिए

- चित्रकार, किसान, सैनिक, धोबी, सुनार, जंगली, बढ़ई
- मोची
- दरजी

पाठ-11

कहानी-लेखन एवं चित्र वर्णन

कहानी लेखन

एक कुत्ता था। एक दिन सड़क पर उसे रोटी का एक टुकड़ा मिला । वह उसे मुँह में लेकर अपने घर की तरफ जाने लगा। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। जब कुत्ता नदी के पुल पर से गुजरा तो उसने नदी के पानी में अपनी परछाई देखी। कुत्ते ने समझा कि किसी दूसरे कुत्ते के मुँह में रोटी का टुकड़ा है। उसके मन में लालच आ गया। वह परछाई वाले कुत्ते से रोटी का टुकड़ा छीनने के लिए जैसे ही भौंका तभी उसका रोटी का टुकड़ा भी पानी में गिर गया। लालच के कारण कुत्ता अपनी रोटी भी गँवा बैठा।

चित्र वर्णन

क्रिकेट मेरी पसंद का खेल है। मैं प्रतिदिन क्रिकेट खेलता हूँ। क्रिकेट के खेल में ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इस खेल को मैदान में खेलते हैं। इसे मेरे मित्र भी मेरे साथ खेलते हैं। मेरा भाई एक अच्छा खिलाड़ी है। खेल खेलने से मैं फुर्तीला हो जाता हूँ। खेलने के बाद पढ़ाई में भी खूब मन लगता है।

आओ करें

(क) (i) गुजर
(ii) रस्सी
(iii) हाथी
(iv) हाथी पालक
(v) प्रयास
(vi) विश्वास
(vii) कोशिश

(ख) कछुआ और खगोश की दौड़

(चित्र में कछुआ और खरगोश की दौड़ को दिखाया गया है।)

(1) खरगोश कछुए से दौड़ने की शर्त लगाता है।
(2) खरगोश और कछुए में दौड़ शुरू होती है।
(3) खरगोश बहुत तेज दौड़ता है।
(4) कछुआ बहुत धीरे-धीरे चलता है।
(5) मार्ग में आराम करने के कारण खरगोश दौड़ हार जाता है और कछुआ जीत जाता है।

गतिविधि : श्रवण कौशल

आओ करें

- **(क)** सीधे-सादे, नेक।
  (ख) लड्डू, पेड़ा, रसगुल्ला, टॉफी-बिस्कुट, केक।
  (ग) दादाजी।
  (घ) पापा-मम्मी।
  (ङ) खेलने और ऊधम मचाने पर।
- **(क)** स्यानी।
  (ख) तीन।
  (ग) बिल्ली ने।
  (घ) दिल्ली से।
  (ङ) कुत्ता

जाँच-पत्र — 1

1. (क) (i) (ख) (ii)
(ग) (iii)

2. (क) दिवस (ख) क्रिया
(ग) गायक (घ) तुम

3. (क) (✓) (ख) (✓)
(ग) (✗) (घ) (✓)

4. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
(ख) स्त्री या पुरुष जाति का ज्ञान कराने वाले शब्द को लिंग कहते हैं।
(ग) सूरज सुबह उदय होता है और शाम को अस्त होता है।
(घ) समान अर्थ बताने वाले शब्द समानार्थी/पर्यायवाची कहलाते हैं।

5. छात्र स्वयं सुनाएँ।

जाँच-पत्र — 2

1. (क) (iii) (ख) (ii)
(ग) (ii)

2. (क) सैनिक (ख) हम
(ग) सफेद (घ) तैरती

3. (क) (✓) (ख) (✓)
(ग) (✗) (घ) (✗)

4. (क) माता, मम्मी, मइया आदि।
(ख) नीला।
(ग) प्राणी।
(घ) भाषा द्वारा हम अपनी बात एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं।

5. छात्र स्वयं सुनाएँ।

हिन्दी व्याकरण-3

पाठ—1
भाषा व लिपि

जरा बताइए तो

- हम अपने मन की बात लिखकर, बोलकर, संकेतों से बताएँगे।
- भाषा के लिखने के तरीके को लिपि कहते हैं।
- यदि लिपि न होती तो हम लिखने में असमर्थ होते।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) हिन्दी (ख) देवनागरी
(ग) बोली (घ) सांकेतिक

2. (क) (✓) (ख) (×)
(ग) (×) (घ) (✓)

3. (i) लिखित भाषा (ii) सांकेतिक भाषा
(iii) बोली (iv) मौखिक भाषा
(v) मौखिक भाषा

सोचो ज़रा सोचो

- संकेतों के माध्यम से।
- सांकेतिक भाषा में।

करके देखिए

(1) उड़िया (2) मराठी
(3) उर्दू (4) कश्मीरी
(5) गुजराती (6) हिन्दी
(7) मलयालम (8) कन्नड
(9) पंजाबी (10) मणिपुरी

पाठ—2
वर्ण विचार

जरा बताइए तो

- भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।
- मुँह से निकलने वाली ध्वनियों से भाषा बनती है।
- व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।
- 'अ' हटाकर व्यंजन को 'हलन्त' लगाकर लिखा जाता है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) ब् + अं + द् + अ + र् + अ
(ख) प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ
(ग) ग् + उ + ड् + इ + य् + आ

2. (क) सेब (ख) बच्चा
(ग) केला (घ) मेला

3. (क) का - काला (घ) कि - किताब
(ख) रु - रुई (ङ) रू - रूप
(ग) कृ - कृपा (च) बे - बेलन

4. (क) कैदी (ख) पपीता
(ग) कृषक (घ) त्रिशूल

सोचो ज़रा सोचो

- सांकेतिक भाषा में।
- अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

(1) वानर (2) चावल
(3) मकान (4) तलवार
(5) नट (6) जहाज
(7) कान (8) रथ
(9) गाजर (10) मटर
(11) आम (12) नाव
(13) कागज (14) दवात

पाठ—3
शब्द और वाक्य

ज़रा बताइए तो

- शब्दों के सही मेल से वाक्य बनते हैं।
- नहीं।
- 'न' में दो वर्ण होते हैं— न् + अ।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) कलम (ख) सड़क
(ग) शरबत (घ) गुजराती
(ङ) विद्यालय (च) मलयालम

2. (क) मेढ़क (ख) खेलने
(ग) मछलियाँ (घ) मथुरा
(ङ) डॉक्टर

3. (क) तुम मेरे घर आए।

(ख) यह पुस्तक मेरी है।

(ग) तिरंगा हमारा राष्ट्रीय ध्वज है।

(घ) चिड़िया दाना चुग रही है।

4. (1) दु
म (का) न
न

(2) न
म (ग) न
र

(3) ध
क (र) म
म

(4) प
क (ल) श
क

(5) तो
ब (क) री
री

(6) स
क (ड़) क
क

5. छात्र स्वयं करें।

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

(1) टमटम (2) जलेबी

(3) राजा (4) मगर

(5) संतरा (6) थैला

पाठ—4
संज्ञा

जरा बताइए तो

- साँस लेने वाले जीव—व्यक्ति, पशु, पक्षी, कीट, पतंगे आदि हैं।
- खुशी का।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) श्वेता (ख) चिड़ियाँ

(ग) आगरा (घ) कार

2. (क) (✓) (ख) (×)

(ग) (×) (घ) (×)

3. (क) आम, मिठास

(ख) रोहन, पतंग, छत

(ग) सीता, बाजार, दूध, दही, मिठाई

(घ) राधा, मोहन, हवाईजहाज, अमेरिका

(ङ) खरबूज, तरबूज, गर्मी, दिनों

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

1. (क) राम, मोहन (ख) गाय, भैंस

(ग) मोर, तोता (घ) विद्यालय, पार्क

(ङ) किताब, पेन (च) मिठास, खुशी

(छ) गुलाब, कमल (ज) आम, अनार

पाठ—5
सर्वनाम

ज़रा बताइए तो

- मैं, मेरा, मेरी, मुझे, मुझको, मैंने, मुझमें आदि।
- सर्वनाम का प्रयोग करने से भाषा सरल और सुन्दर हो जाती है।
- क्या, क्यों, कैसे, कितना, किसका, कौन आदि प्रश्नवाचक शब्दों का।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) मुझे (ख) हम

(ग) मेरी, मेरा (घ) वह

(ङ) मेरी

2. (क) चिड़िया (ख) पतंग

(ग) कौआ (घ) रमा

(ङ) नीम

3.

संज्ञा	सर्वनाम
सीता	वह
चाचाजी	आप
पत्र	उसका
नाव	मेरी
घर	तुम्हारा
आम	इसका
मिठास	इन्होंने
कंप्यूटर	उसको

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

वह	उसके
उसे, उसका, उसे	उसने
मैंने	उसे
मुझे	हमारी

पाठ—6
लिंग

ज़रा बताइए तो

- दो जाति के—स्त्री और पुरुष।
- क्रिया से लगता है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) माली फूल तोड़ रहा है।
(ख) बैल घास चर रहा है।
(ग) शेरनी गुफा के पास बैठी है।
(घ) गायिका गीत गा रही है।

2. (क) मोरनी → (iii) मोर
(ख) गाय → (iv) बैल
(ग) अध्यापक → (ii) अध्यापिका
(घ) शेरनी → (i) शेर

3. (क) कबूतरी (ख) नौकरानी
(ग) रानी (घ) पिताजी
(ङ) भाई

4. (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग
(ग) स्त्रीलिंग (घ) स्त्रीलिंग
(ङ) पुल्लिंग (च) स्त्रीलिंग
(छ) स्त्रीलिंग (ज) पुल्लिंग
(झ) पुल्लिंग (छ) स्त्रीलिंग

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

	स्त्री जाति	पुरुष जाति
1.	चिड़िया	लड़का
2.	लड़की	कुत्ता
3.	तितली	फव्वारा
4.		झूला

पाठ—7
वचन

ज़रा बताइए तो

- बहुवचन।
- दो प्रकार के-एकवचन और बहुवचन।
- व्यक्ति को आदर देने के लिए, एक से अधिक संख्या का ज्ञान कराने के लिए।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) (✗) (ख) (✓)
(ग) (✓) (घ) (✗)
(ङ) (✓)

2. (क) बहुवचन (ख) बहुवचन
(ग) बहुवचन (घ) एकवचन
(ङ) एकवचन

3. (क) बच्चे (ख) पाठशाला
(ग) पानी (घ) आँखें
(ङ) पंखा (च) सोना

4. (क) तोते (ख) केले
(ग) बच्चे (घ) तारे
(ङ) तितलियाँ

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ—8
विशेषण

ज़रा बताइए तो

- आम का रंग पीला होता है।
  आम खाने में मीठा लगता है।
- छात्र स्वयं करें।

आइए, अब लिखते हैं

1. हरी - सब्जियाँ चालाक - लोमड़ी
घना - जंगल ताजे - फल
वफादार - कुत्ता काला - भालू

2. (क) पुराना (ख) गोरी
(ग) समझदार (घ) बड़ा

(ङ) चौड़ी

3. (क) मोटा (ख) ऊँची
(ग) मीठी (घ) रंग-बिरंगा
(ङ) चौकोर (च) गोल, रंग-बिरंगी

4. अति सुंदर नीला
ऊँचा मेरा

सोचो ज़रा सोचो

● छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

(क) नीला (ख) काला
(ग) नारंगी (घ) मीठी

पाठ—9
क्रिया

ज़रा बताइए तो

● हवा अपने आप चलती है।

● काम को करने या होने को क्रिया कहते हैं।

● नहीं।

आइए, अब लिखते हैं

1. पढ़ना, लिखना, भौंकना, खाना, सोना।

2. (क) काटना—रोहन फल काटता है।
(ख) कूदना— माला रस्सी कूद रही है।
(ग) रोना—बच्चा जोर-जोर से रो रहा है।
(घ) जाता—किसान खेत पर जाता है।
(ङ) पढ़ना—राम किताब पढ़ता है।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ—10
पर्यायवाची शब्द

ज़रा बताइए तो

● पर्यायवाची।

● माता, मम्मी, जननी, अम्बा।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) मेघ, बादल (ख) वृक्ष, तरु
(ग) गृह, सदन (घ) सिंह, केसरी
(ङ) गज, मतंग (च) पुष्प, कुसुम

2. (क) सूरज (ख) गगन
(ग) धरा (घ) पवन

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

(1) सु (2) वा रि
मी त यु

(3) स द न (4) ध र ती
रि ज
ता नी

पाठ—11
विलोम शब्द

जरा बताइए तो

● हाँ।

● नहीं, पुण्य होगा।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) निर्धन (ख) दु:ख
(ग) भलाई (घ) मीठे
(ङ) छोटा

2. (क) सरल (ख) खुशबू
(ग) पाताल (घ) लिखित
(ग) भारी (घ) मूर्ख

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

1. सच्चा - झूठा शत्रु - मित्र
अमीर - गरीब अंदर - बाहर
उल्टा - सीधा पतला - मोटा

2. (क) सर्दी - गरमी (ख) छोटा - बड़ा
(ग) मोटा - पतला (घ) हँसना - रोना

पाठ—12
अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

ज़रा बताइए तो

● एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

● ग्रामीण।

14 Answer Key 1 to 5

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) जल में रहने वाला - जलचर

(ख) सप्ताह में होने वाला - साप्ताहिक

(ग) आलस्य करने वाला - आलसी

(घ) अधिक बोलने वाला - वाचाल

(ङ) पत्र बाँटने वाला - डाकिया

2. (क) हलवाई (ख) दैनिक

(ग) पुस्तकालय (घ) लुहार

(ङ) स्वदेशी

सोचो ज़रा सोचो

- विद्यालय।
- एक शब्द का प्रयोग करके।

करके देखिए

बायें से दायें	ऊपर से नीचे
(1) असंभव	(1) अमूल्य
(2) अमर	(2) अनाथ
(3) लेखक	(3) चित्रकार
(4) पत्रकार	(4) कवि

पाठ—13
मुहावरे

ज़रा बताइए तो

- विशेष तरीके से कही गई बात मजेदार लगती है।
- विशेष अर्थ देते हैं।
- विशेष अर्थ देने वाले वाक्यांश को मुहावरा कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

(1) मुँह में पानी आना → मन ललचाना

(2) टाँग अड़ाना → बाधा डालना

(3) नाक में दम करना → बहुत परेशान करना

(4) आँख का तारा होना → बहुत प्यारा होना

2. (क) टाँग अड़ाना

(ख) नाक में दम करना

(ग) नौ दो ग्यारह होना

(घ) अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

3. (क) नौ दो ग्यारह होना

(ख) भीगी बिल्ली बनना

(ग) लाल-पीला होना

(घ) आँख का तारा होना

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

आँख— आँख दिखाना, आँखों में धूल झोंकना, आँख भर आना

नाक— नाक में दम करना, नाक पर मक्खी न बैठने देना, नकेल कसना

उल्लू— उल्लू सीधा करना, उल्लू बनाना, काठ का उल्लू होना

अँगूठा— अँगूठा दिखाना, अँगूठा चूसना, अँगूठा टेक होना

हाथ— हाथ मलना, हाथ पर हाथ धरे बैठना, हाथ साफ करना

चाँद— ईद का चाँद होना, चार चाँद लगाना, चाँद चमकना

पाठ—14
पत्र लेखन

ज़रा बताइए तो

1. सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य जी

ग्लोबल स्कूल

मेरठ

महोदय जी,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा तीन का छात्र हूँ। मेरे बड़े भाई का विवाह दिनांक 14 जनवरी 20_ _ को होने जा रहा है। बारात यहाँ से दिल्ली जाएगी। इसलिए मैं स्कूल में उपस्थित नहीं हो पाऊँगा। अत: मुझे 14 फरवरी से 18 फरवरी तक का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

विशाल शर्मा

कक्षा- 3 ब

2. सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य

जेवियर, इंटर कॉलेज

पुरुलिया रोड (राँची)

दिनांक - 11 जुलाई, 20.....

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा तीन का छात्र हूँ। महोदय, यह गर्मी का मौसम है। इस समय गर्मी बहुत तेज पड़ रही है। हमारी कक्षा के पंखे भी काम नहीं कर रहे हैं। अत: आपसे निवेदन है कि आप आज्ञा देकर हमारी कक्षा के पंखे जल्द-से-जल्द ठीक करवाएँ। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

गोविन्द अग्रवाल

कक्षा - 3 स

3. 12 नवरंग अपार्टमेंट

कृष्णापुरम्

कानपुर - 28007

जुलाई - 12- 20.....

प्रिय मुकुल,

हम लम्बे समय से नहीं मिले हैं। अगर तुम 17 जुलाई को मेरे जन्मदिन पर मेरे घर आओगे तो मुझे बहुत खुशी होगी। मेरे माता-पिता मेरे जन्मदिन पर एक पार्टी का आयोजन कर रहे हैं। तुम मेरे सबसे प्रिय मित्र हो। माताजी भी तुम्हें बहुत याद कर रही हैं। तुम आओगे तो उन्हें भी बहुत प्रसन्नता होगी। मैं उस दिन तुम्हारा इन्तजार करूँगा।

शुभकामनाओं सहित

तुम्हारा मित्र

नरेश कुमार

4. पूजा गर्ल्स हॉस्टल,

भोपाल

दिनांक- 5/02/20_ _

पूज्य माताजी,

मुझे आशा है कि आपका स्वास्थ्य ठीक होगा और आप कुशलमंगल होंगी।

मैं भी यहाँ ठीक हूँ। मैं अपनी कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहती हूँ। समय पर आने पाठ सीखती और याद करती हूँ। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैंने अपने साप्ताहिक टेस्टों में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

जैसा कि आप जानते हैं कि मेरी वार्षिक परीक्षा निकट आ रही है, इसलिए मुझे तैयारी करने के लिए कुछ पुस्तकें खरीदने की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप जल्द से जल्द ₹ 1000 भेजने की कृपा करें। जिससे मैं पुस्तकें खरीदकर अपनी तैयारी कर सकूँ।

धन्यवाद

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री

सुनीता कुमारी

करके देखिए

छात्र-छात्रा स्वयं करें।

पाठ—15
संवाद लेखन

ज़रा बताइए तो

आरव - क्या, तुमने कल रात का क्रिकेट मैच देखा है।

समीर - हाँ, बहुत ही रोचक अच्छा खेल था। भारत भारी अंतर से जीता।

आरव - हाँ, मुझे पता है लेकिन न्यूजीलैंड का प्रदर्शन भी शानदार था।

समीर - हाँ, वे भी बहुत अच्छा खेले। बल्लेबाज शानदार फॉर्म में थे और गेंदबाज भी अच्छी बॉलिंग कर रहे थे।

आरव - काश भारतीय टीम हमेशा ऐसे ही खेले।

समीर - मुझे यकीन है कि भारतीय टीम आगामी मैचों में भी अच्छा प्रदर्शन करेगी।

2. (क) मरीज और डॉक्टर के बीच संवाद

रोहन : हेलो, डॉक्टर

डॉक्टर : हेलो रोहन, क्या हुआ तुम्हें।

रोहन : डॉक्टर मुझे गले में बहुत दर्द है।

डॉक्टर : दिखाओ मैं देखता हूँ, तुम अपना मुँह खोलो।

रोहन : ठीक है।

16 Answer Key 1 to 5

डॉक्टर : रोहन, तुम्हारे गले में इन्फेक्शन हुआ है।

रोहन : क्या डॉक्टर, लेकिन यह जल्दी ठीक तो हो जाएगा ना! मेरी परीक्षा नज़दीक हैं।

डॉक्टर : हाँ रोहन, जल्दी ठीक हो जाएगा, डरने की बात नहीं है। बस कुछ ठंडा, खट्टा और तला, भुना नहीं खाना।

रोहन : ठीक है, डॉक्टर।

डॉक्टर : मैं कुछ दवाई दे रहा हूँ, वह ले लेना।

रोहन : जी डॉक्टर, धन्यवाद।

(ख) परीक्षा कक्ष के बाहर दो छात्रों का संवाद

अमर : अरे, विनय, सारी तैयारी कर ली?

विषय : हाँ अमर, मैंने तो सारा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है। और तुमने?

अमर : नहीं विनय, मेरा तो मन घबरा रहा है। कहीं प्रश्न पत्र पूरा हल न कर पाया तो।

विनय : इस तरह घबराते नहीं हैं।

अमर : विनय, यह वाला सवाल कैसे हल होगा? एक बार समझा दो।

विनय : ठीक है। अच्छा कुछ और?

अमर : नहीं, धन्यवाद विनय।

विनय : चलो, अब अंदर चलते हैं।

करके देखिए

किसी विषय पर अपनी माता से हुए संवाद को लिखिए।

माँ – अरे! बेटा तुम इतनी देर से घर क्यों वापस आए?

बेटा – माँ! आज स्कूल में बहुत सारा काम था?

माँ – कैसा काम?

बेटा – हमारे स्कूल में वार्षिकोत्सव की तैयारी चल रही थी।

माँ – क्या तुम भी किसी कार्यक्रम में भाग ले रहे हो?

बेटा – हाँ माँ, मैं मंचसंचालक की भूमिका निभाऊँगा।

माँ – यह तो बहुत अच्छी बात है। चलो, अब जल्दी से हाथ-मुँह धोकर खाना खा लो।

बेटा – जी माँ, अभी आया।

पाठ—16
अनुच्छेद लेखन

आइए, अब लिखते हैं

(क) मेरा विद्यालय

मैं अपने शहर के प्रतिष्ठित विद्यालय में पढ़ता हूँ। मेरा विद्यालय शहर के सबसे प्रसिद्ध विद्यालयों में से एक है। यह एक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय है। यह बहुत ही सुन्दर और विशाल है। मेरा विद्यालय मेरे घर से एक किमी की दूरी पर स्थित है। मेरे विद्यालय की सभी कक्षाएँ साफ-सुथरी हैं। इसमें एक विशाल खेल का मैदान है। मेरे विद्यालय में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है। इसमें विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें हैं। यहाँ हम सभी अपने-अपने खाली पीरियड्स में पुस्तकें पढ़ने आते हैं। मेरे विद्यालय के सभी अध्यापक बहुत विनम्र, शिक्षित और अनुभवी हैं। वे सभी छात्रों और विद्यालय के प्रति बहुत समर्पित हैं। वे सभी विद्यार्थियों को अनुशासन में रहना सिखाते हैं। वे हमें बहुत ही सरल और आसान तरीके से पढ़ाते हैं। यही कारण है कि यहाँ के सभी विद्यार्थी परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त करते हैं। मेरे विद्यालय की सफलता और प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण हमारे प्रधानाध्यापक महोदय हैं। वे 50 साल के हैं, फिर भी बहुत सक्रिय और अनुशासित हैं। वह विद्यालय के प्रत्येक छात्र और अध्यापक को सदैव प्रोत्साहित करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं इस विद्यालय का छात्र हूँ।

(ख) जब मैं पहली बार रेल में बैठा/बैठी

जब विद्यालय में गर्मियों की छुट्टियाँ हुईं तब मेरे माता-पिता ने हमारे गाँव जाने का कार्यक्रम बनाया। मेरे पिताजी ने रेल से ही यात्रा करने की योजना बनाई। यह मेरी पहली रेलयात्रा थी इसलिए मैं बहुत उत्साहित था। हमारी ट्रेन शाम की थी। हम सब पूरी तैयारी करके स्टेशन पर पहुँच गए। अपनी टिकट लेकर हम रेल का इंतजार करने लगे। कुछ समय बाद हमारी भी रेल आ गई। हम सभी रेल में चढ़ गए तथा अपनी सीट पर बैठ गए। रेल के डिब्बे में बहुत भीड़ थी। थोड़ी ही देर में रेल चल पड़ी। रेल के डिब्बे में चाय बेचने वाले, पानी और

खाने का सामान बेचने वाले बार-बार आ जा रहे थे। डिब्बे में कोई किताब पढ़ रहा था, कोई खाना खा रहा था तो कोई चाय पी रहा था। रेल तेज गति से चल रही थी। मैं खिड़की के पास बैठा हुआ था। वहाँ से देखने पर लग रहा था कि मानो पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सभी भाग रहे हों। मुझे रेल में बड़ा आनन्द आ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो मैं झूला झूल रहा हूँ। थोड़ी देर में रात हो गई। माताजी ने अपने साथ लाया हुआ खाने का सामान निकालकर हमें खाने के लिए दिया। खाना खाने के बाद हम अपनी-अपनी बर्थ पर लेट गए। थोड़ी देर में ही मुझे नींद आ गई। जब हमारा स्टेशन आया तो मेरी माता जी ने मुझे जगाया। यह मेरी पहली रेल यात्रा थी जो बहुत ही सुखद और अच्छी थी।

(ग) शिष्टाचार

एक समाज में सही और आदर्श व्यवहार का सूचक शिष्टाचार है। शिष्टाचार शब्द 'शिष्ट-आचार' दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है, उचित व्यवहार। शिष्टाचार का महत्व व्यक्ति और समाज दोनों के लिए है। इससे समाज में एक स्वस्थ और सकारात्मक वातावरण बनता है। शिष्टाचार हमें दूसरों से अच्छा व्यवहार करना और मिलकर रहना सिखाता है। बचपन में हमारे माता-पिता ही हमें शिष्टाचार के बारे में बताते हैं और इसका ज्ञान देते हैं। शिष्टाचार हमें अपने से बड़ों का सम्मान करना, उन्हें आदर देना सिखाता है। छोटों के साथ विनम्रता और प्रेम से पेश आना सिखाता है। शिष्टाचारी मनुष्य समाज में मान-सम्मान प्राप्त करता है। शिष्टाचार में व्यक्ति को नैतिक मूल्यों का समर्पण होता है जो उसे सही और उचित निर्णय लेने में मदद करता है। शिष्टाचार का पालन करने से परिवार में एकता बनी रहती है और सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध मजबूत होते हैं। शिष्टाचार का पालन करने से समाज में सुधार होता है। समरसता और सहयोग की भावना उत्पन्न होती है। शिष्टाचार समाज में आदर्श व्यवहार की महत्त्वपूर्ण और अभिन्न भाषा है। यह व्यक्ति को नैतिकता और सही मार्गदर्शन के साथ जीवन जीने की क्षमता प्रदान करता है।

(घ) वृक्ष बचाओ

प्रकृति ने हमें वृक्ष के रूप में सबसे बड़ा उपहार दिया है, जो पृथ्वी पर हमारे जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। वृक्ष बचाने का अर्थ है-जीवन बचाना। पृथ्वी पर वृक्ष का होना सभी जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक है। वृक्ष ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जिससे हमें सभी व अन्य प्राणी जीवित रहते हैं और साँस लेते हैं। वृक्ष से प्राप्त फल और सब्जियाँ मनुष्यों और जानवरों का भोजन होते हैं। वृक्ष जंगलों के अंदर और बाहर रहने वाले पशु-पक्षियों को आश्रय और छाया प्रदान करते हैं। वृक्ष वर्षा कराने में सहयोगी होते हैं। वृक्षों की जड़ें भूमि के कटाव को रोकती हैं। वृक्षों से न केवल भोजन अपितु विभिन्न प्रकार की औषधियाँ, इमारती लकड़ी और हरियाली मिलती है। अत: हमें वृक्ष बचाकर पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए।

2. (क) स्कूल का पहला दिन

मैं कक्षा तीन की छात्रा हूँ। इसी वर्ष मैंने इस स्कूल में दाखिला लिया है। इस स्कूल का पहला दिन मुझे अच्छी तरह से याद है। मेरे लिए यह बड़ा ही रोमांचक और यादगार दिन था। मैं एक दिन पहले से ही बहु खुश और उत्तेजित थी। पिताजी मेरे लिए नया स्कूल बैग, पुस्तकें लाए थे और मेरे लिए नई यूनिफार्म भी सिलवाई थी। माँ और पिताजी ने उत्साह भरे शब्दों के साथ स्कूल बस में बैठाया। स्कूल बस से मैं समय पर स्कूल पहुँच गई। प्रधानाध्यापक व अध्यापिकाओं ने सभी नए बच्चों का स्वागत किया। कक्षा में भी उत्साह का वातावरण था। कक्षा अध्यापिका ने सभी नए विद्यार्थियों से उनके नाम आदि की जानकारी ली। लंच होने पर पर मैंने सभी साथियों के साथ बैठकर अपना लंच किया। इसके बाद हम अपनी अपनी कक्षा में लौट आए। दो पीरियड बाद गेम्स पीरियड लगा। मुझे इसमें बहुत आनंद आया था। छुट्टी की घंटी बजने के बाद मैं सभी बच्चों के साथ विद्यालय से बाहर आ गई। बाहर खड़ी स्कूल बस में बैठकर जब मैं वापस अपने घर पहुँची थी, तब अपने माता-पिता को मैंने अपने नए स्कूल के विषय में जानकारी दी।

(ख) मेरा घर

हम जिस जगह रहते हैं उसे घर कहते हैं। मेरा घर प्रताप नगर में स्थित है। मेरे घर का मेरे जीवन में

बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। मेरे घर का रंग नीला है। मेरा घर बहुत हवादार है। मेरे घर में कुल तीन कमरे, एक रसोई, बड़ा-सा आँगन और शौचालय है। मेरे घर में अध्ययन के लिए एक कमरा और पूजाघर भी है। मेरे घर के सामने एक बड़ा-सा बगीचा है जिसमें मैं खेलता हूँ। मेरे घर की बालकनी में बहुत सुन्दर-सुन्दर फूलों के पौधे लगे हुए हैं। मेरे घर में कुल चार सदस्य रहते हैं। परिवार के सभी सदस्य घर को साफ और सुन्दर रखते हैं। घर हमें धूप, मौसम और जंगली जानवरों से सुरक्षित रखता है।

(ग) मेरी पहली बस यात्रा

बस में सफर करना बहुत सारे लोगों को काफी अच्छा लगता है। मुझे भी बहुत अच्छा लगता है लेकिन जब मैंने पहली बार बस से यात्रा की तो मुझे अच्छे के साथ थोड़ा अजीब भी लगा। बस में सफर करना मेरे लिए एक नया अनुभव था। मैंने अपने परिवार के साथ पहली बार बस यात्रा की थी। तब मैं अपने नाना जी के घर जा रही थी। हम सुबह 7:00 बजे बस स्टैण्ड पहुँचे। बस में पहली बार बैठने की जिज्ञासा से मैं बहुत उत्साहित थी। हम बस में आगे की सीट पर बैठे। मैं खिड़की वाली सीट पर बैठी थी। मेरे पास वाली सीट पर मेरी माँ बैठी थी, पीछे मेरा भाई और पापा बैठे थे। कुछ देर में बस अपने गंतव्य की ओर चलने लगी। बस जब किसी जगह एकदम से रुकती तो मैं आगे की तरफ झुक जाती।

मैंने रास्ते में कई तालाब, पेड़-पौधे, फूल, कई तरह की फसलों से भरे खेत देखे। बस में सफर करना सच में मुझे बहुत अच्छा लगा। लगभग डेढ़ घंटे में हम अपने नाना के शहर जा पहुँचे। बस का पहला सफर मुझे बहुत उत्साहित करने वाला था। इस सफर के बाद मैंने अपने माता-पिता से कहा कि हम अगली बार भी बस से ही यात्रा करेंगे।

(घ) सुबह का दृश्य

सुबह का दृश्य अत्यंत शांत और मनोहारी होता है। जब सूरज की पहली किरण आसमान में फैलती है तो प्रकृति एक नई ऊर्जा से भरी हुई प्रतीत होती है। आसमान थोड़ा-सा लाल-काला रंग लिए होता है। ऐसा लगता है मानो किसी ने ईंट में थोड़ा-सा कोयला पीस कर मिला दिया हो। सुबह फूलों, पौधे की पत्तियों पर छोटे-छोटे पानी के कण दिखाई देते हैं। सुबह की ठंडी-ठंडी हवा प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर नई स्फूर्ति और ताजगी का संचार करती है। सुबह के समय प्रदूषण भी बेहद कम होता है। इस समय का आनंद प्रत्येक व्यक्ति को लेना चाहिए। सुबह व्यायाम करने या टहलने से भी मन को बेहद सुकून मिलता है। सुबह का दृश्य जीवन में नवीनता और ताजगी लेकर आता है। यही समय व्यक्ति को अपने जीवन के उद्देश्य और लक्ष्य की ओर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है और उसे नए दिन के लिए ऊर्जा प्रदान करता है।

पाठ—17
कहानी लेखन

आइए अब लिखते हैं

1. (क) नकलची बंदर

एक टोपी बेचने वाला था। वह टोकरी में रखकर टोपियाँ बेचने जाता था। एक दिन वह टोपियाँ बेचते-बेचते थक गया और आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। बैठे-बैठे उसकी आँख लग गई। उस पेड़ पर बहुत सारे बंदर रहते थे। सभी बंदर उसकी रंग-बिरंगी टोपियाँ देखकर बहुत खुश हुए। उन सभी बंदरों ने उसकी टोकरी में टोपियाँ उठाकर पहन लीं। जब टोपी वाले की आँख खुली तो उसने देखा कि सभी बंदर उसकी टोपियाँ लगाकर पेड़ की डालियों पर बैठे हैं। टोपी वाला सोचने लगा कि वह अब इन बंदरों से अपनी टोपियाँ कैसे वापस लेगा। अचानक उसे याद आया कि बंदर तो नकलची होते हैं। यह विचार आते ही उसने अपनी पहनी हुई टोपी उतारकर जमीन पर फेंक दी। उसको ऐसा करते देखकर सभी बंदरों ने भी अपनी-अपनी टोपियाँ उतारकर नीचे फेंक दीं। टोपी वाले की योजना काम कर गई। उसने सारी टोपियाँ समेटी और मुस्कुराता हुआ अपनी टोपियों की टोकरी लेकर वहाँ से चला गया।

2. आलसी टिड्डा

एक जंगल में एक चींटी और एक टिड्डा रहते थे। चींटी बहुत मेहनती थी परंतु टिड्डा बहुत आलसी था। वह पूरे दिन सोता तथा उछल-कूद करता था। चींटी बरसात के दिनों के लिए कड़ी मेहनत करके

अन्न इकट्ठा करती, परंतु टिड्डा कुछ काम नहीं करता था। चींटी उससे अन्न इकट्ठा करने को कहती तो वह बहाना बना देता। उसने बरसात के दिनों के लिए अन्न का एक भी दाना इकट्ठा नहीं किया। बरसात का मौसम आ गया। कई दिनों से लगातार बारिश हो रही थी। चींटी के पास अपने परिवार के लिए खाने-पीने की पूरी व्यवस्था थी, परन्तु टिड्डे के पास कुछ न था। जब कई दिनों तक बारिश नहीं रुकी तो टिड्डा भीगता हुआ चींटी के पास आया और बोला-"चींटी बहन! मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ। मुझे कुछ अन्न दे दो। मैं वर्षा के रुकने पर तुम्हें वापस कर दूँगा।" टिड्डे की यह बात सुनकर चींटी को क्रोध आ गया, वह क्रोध से बोली-"मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया पर तुमने कुछ नहीं किया। अब तुम भूखे मरो, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती।" चींटी की बात सुनकर टिड्डा अपना-सा मुँह लेकर बारिश में भीगता हुआ अपने घर वापस चला गया। शिक्षा - आलसी सदा दु:ख पाता है।

3. कछुआ और खरगोश

एक समय की बात है, किसी घने जंगल में एक खरगोश रहता था, उसे अपनी तेज चाल पर बहुत घमण्ड था। उसे जंगल में जो दिखाई देता, उसे वो अपने साथ दौड़ लगाने की चुनौती दे देता था। वह दूसरे जानवरों की धीमी चाल का मजाक भी उड़ाता था। एक दिन उसे एक कछुआ दिखाई दिया। कछुए की धीमी चाल देखकर उसने कछुए को दौड़ लगाने के लिए ललकारा। कछुए ने खरगोश की चुनौती स्वीकार कर ली और दौड़ लगाने के लिए मान गया। जंगल के सभी जानवर खरगोश और कछुए की दौड़ देखने के लिए जमा हो गए। दौड़ शुरू हो गई। खरगोश तेज दौड़ने लगा और कछुआ अपनी धीमी चाल से आगे बढ़ने लगा। थोड़ी दूर पहुँचने के बाद खरगोश ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे कछुआ कहीं भी दिखाई नहीं दिया। घमण्डी खरगोश ने सोचा कि सुस्त कछुए को यहाँ तक पहुँचने में बहुत समय लगेगा। क्यों न थोड़ी देर आराम कर लूँ। वह एक पेड़ के नीचे आराम करने लगा। आराम करते-करते वह सो गया। इधर कछुआ बिना रुके लगातार चलते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँच गया। यह देखकर जंगल की सभी जानवर खुश होकर ताली बजाने लगे। तालियों की आवाज सुनकर खरगोश की नींद खुल गई। जागने पर उसे जब उसे कछुआ नहीं दिखा तो वह खुश होकर वापस से तेज दौड़ने लगा। लेकिन जब वह जीत रेखा तक पहुँचा तो उसने देखा कि कछुआ पहले से वहाँ पर है। उसकी जीत पर ही बाकी जानवर ताली बजा रहे हैं। यह देखकर खरगोश बहुत लज्जित हुआ।

शिक्षा - घमंडी का सिर नीचा

4. किसान और डाकू

बहुत समय पहले की बात है। एक किसान पशु मेला देखने गया हुआ था। उसे वहाँ पर एक भैंस पसंद आ गई। उसने सोचा कि यह भैंस खरीद ली जाए तो उससे कुछ कमाई भी हो जाएगी और घर में भी दूध-दही की कमी नहीं रहेगी। यही सोचकर उसने वह भैंस खरीद ली। वह भैंस को लेकर अपने गाँव जा रहा था। तभी रास्ते में उसे एक डाकू मिला। उसके हाथ में एक बहुत मोटा-सा डंडा था। डाकू ने उस डंडे के बल पर उस किसान से उसका सारा पैसा और भैंस छीनने की योजना बनाई। किसान एक बुद्धिमान व्यक्ति था। उसने डरते-डरते उस डाकू से कहा कि भाई आप भले ही मुझसे मेरी भैंस और पैसा ले लो किन्तु मुझे अपना डंडा दे दो। जिससे यदि रास्ते में कोई जानवर पीछे पड़ जाए तो उससे अपना बचाव कर सकूँ। डाकू को यह सौदा बड़ा अच्छा लगा, उसने झट से अपना डंडा उस किसान को दे दिया। डंडा हाथ में आते ही किसान निर्भय हो गया। उसने उसी डंडे से डाकू को पीटना शुरू कर दिया। डाकू पैरों पर गिरकर माफी माँगने लगा। किसान बोला—अब लूटने का प्रयास करेगा? डाकू ने कहा कि अब मैं किसी को भी नहीं लूटूँगा। इस प्रकार किसान ने डंडे के बल पर डाकू से अपनी भैंस और रुपया-पैसा सब वापस ले लिया और अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

शिक्षा - जिसकी लाठी उसकी भैंस।

पाठ—18
अपठित गद्यांश

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) अमन एक अनुशासनप्रिय बालक है।

(ख) अमन रोज समय पर विद्यालय जाता है तथा अनुशासन में रहता है।

(ग) अमन ने बताया कि वह एक बुजुर्ग व्यक्ति की सड़क पार करने में सहायता कर रहा था।

(घ) शिक्षिका ने कहा कि हमें बड़ों का आदर करना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए।

2. (क) कछुआ (✓)

(ख) दो हंसों के साथ (✓)

(ग) लकड़ी को मुँह से पकड़ ले और रास्ते में बोलना मत (✓)

(घ) मुँह खोल दिया। (✓)

जाँच-पत्र—1

ज़रा बताइए तो

- हम अपने मन की बात लिखकर या बोलकर बताएँगे।
- भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) मेंढ़क (ख) खेलने

2. (क) (✓) (ख) (✗)

3. (क) माली फूल तोड़ रहा है।

(ख) बैल घास चर रहा है।

4. (क) बच्चे (ख) पाठशाला

5. (क) नीला (ख) काला

6. छात्र स्वयं करें।

7. केसरी, सिंह

8. स्कूल

9. मरीज और डॉक्टर के बीच संवाद

रोहन : हेलो, डॉक्टर

डॉक्टर : हेलो रोहन, क्या हुआ तुम्हें।

रोहन : डॉक्टर मुझे गले में बहुत दर्द है।

डॉक्टर : दिखाओ मैं देखता हूँ, तुम अपना मुँह खोलो।

रोहन : ठीक है।

डॉक्टर : रोहन, तुम्हारे गले में इन्फेक्शन हुआ है।

रोहन : क्या डॉक्टर, लेकिन यह जल्दी ठीक तो हो जाएगा ना! मेरी परीक्षा नज़दीक हैं।

डॉक्टर : हाँ रोहन, जल्दी ठीक हो जाएगा, डरने की बात नहीं है। बस कुछ ठंडा, खट्टा और तला, भुना नहीं खाना।

रोहन : ठीक है, डॉक्टर।

डॉक्टर : मैं कुछ दवाई दे रहा हूँ, वह ले लेना।

रोहन : जी डॉक्टर, धन्यवाद।

10. मेरा विद्यालय

मैं अपने शहर के प्रतिष्ठित विद्यालय में पढ़ता हूँ। मेरा विद्यालय शहर के सबसे प्रसिद्ध विद्यालयों में से एक है। यह एक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय है। यह बहुत ही सुन्दर और विशाल है। मेरा विद्यालय मेरे घर से एक किमी की दूरी पर स्थित है। मेरे विद्यालय की सभी कक्षाएँ साफ-सुथरी हैं। इसमें एक विशाल खेल का मैदान है। मेरे विद्यालय में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है। इसमें विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें हैं। यहाँ हम सभी अपने-अपने खाली पीरियड्स में पुस्तकें पढ़ने आते हैं। मेरे विद्यालय के सभी अध्यापक बहुत विनम्र, शिक्षित और अनुभवी हैं। वे सभी छात्रों और विद्यालय के प्रति बहुत समर्पित हैं। वे सभी विद्यार्थियों को अनुशासन में रहना सिखाते हैं। वे हमें बहुत ही सरल और आसान तरीके से पढ़ाते हैं। यही कारण है कि यहाँ के सभी विद्यार्थी परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त करते हैं। मेरे विद्यालय की सफलता और प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण हमारे प्रधानाध्यापक महोदय हैं। वे 50 साल के हैं, फिर भी बहुत सक्रिय और अनुशासित हैं। वह विद्यालय के प्रत्येक छात्र और अध्यापक को सदैव प्रोत्साहित करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं इस विद्यालय का छात्र हूँ।

जाँच-पत्र—2

ज़रा बताइए तो

- लिपि।
- स्वरों की।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) कमल (ख) सड़क

2. (क) आम, मिठास (ख) रोहन छत पतंग

3. (क) कबूतरी

(ख) नौकरानी

4. (क) भलाई (ख) मीठे

5. (क) लाल पीला होना

(ख) नौ दो ग्यारह होना

6. 12 नवरंग अपार्टमेंट

कृष्णापुरम्

कानपुर - 28007

12 जुलाई 20_ _

प्रिय मुकुल,

हम लम्बे समय से नहीं मिले हैं। अगर तुम 17 जुलाई को मेरे जन्मदिन पर मेरे घर आओगे तो मुझे बहुत खुशी होगी। मेरे माता-पिता मेरे जन्मदिन पर एक पार्टी का आयोजन कर रहे हैं। तुम मेरे सबसे प्रिय मित्र हो। माताजी भी तुम्हें बहुत याद कर रही हैं। तुम आओगे तो उन्हें भी बहुत प्रसन्नता होगी। मैं उस दिन तुम्हारा इन्तजार करूँगा।

शुभकामनाओं सहित

तुम्हारा मित्र

नरेश कुमार

7. किसान और डाकू

बहुत समय पहले की बात है। एक किसान पशु मेला देखने गया हुआ था। उसे वहाँ पर एक भैंस पसंद आ गई। उसने सोचा कि यह भैंस खरीद ली जाए तो उससे कुछ कमाई भी हो जाएगी और घर में भी दूध-दही की कमी नहीं रहेगी। यही सोचकर उसने वह भैंस खरीद ली। वह भैंस को लेकर अपने गाँव जा रहा था। तभी रास्ते में उसे एक डाकू मिला। उसके हाथ में एक बहुत मोटा-सा डंडा था। डाकू ने उस डंडे के बल पर उस किसान से उसका सारा पैसा और भैंस छीनने की योजना बनाई। किसान एक बुद्धिमान व्यक्ति था। उसने डरते-डरते उस डाकू से कहा कि भाई आप भले ही मुझसे मेरी भैंस और पैसा ले लो किन्तु मुझे अपना डंडा दे दो। जिससे यदि रास्ते में कोई जानवर पीछे पड़ जाए तो उससे अपना बचाव कर सकूँ। डाकू को यह सौदा बड़ा अच्छा लगा, उसने झट से अपना डंडा उसे किसान को दे दिया। डंडा हाथ में आते ही किसान निर्भय हो गया। उसने उसी डंडे से डाकू को पीटना शुरू कर दिया। डाकू पैरों पर गिरकर माफी माँगने लगा। किसान बोला—मुझे लूटने का प्रयास करेगा? डाकू ने कहा कि अब मैं किसी को भी नहीं लूटूँगा। इस प्रकार किसान ने डंडे के बल पर डाकू से अपनी भैंस और रुपया-पैसा सब वापस ले लिया और अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

शिक्षा - जिसकी लाठी उसकी भैंस।

8. अपठित गद्यांश में गद्यांश पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

हिन्दी व्याकरण-4

पाठ—1
भाषा और व्याकरण

ज़रा बताइए तो

- अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने का साधन भाषा कहलाता है।
- ध्वनियों को लिखने के निर्धारित चिह्न लिपि कहलाते हैं
- हमारी राजभाषा हिन्दी है।
- भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।
- मुख से बोलकर और कानों से सुनकर समझाना **मौखिक भाषा** कहलाता है। जबकि अपने मन के भावों को लिखकर प्रकट करना या लिखित रूप से पढ़कर समझना **लिखित भाषा** कहलाता है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) व्याकरण (ख) लिपि
(ग) भाषाएँ (घ) गुरुमुखी
(ङ) देवनागरी

2. (क) (×) (ख) (×)
(ग) (✓) (घ) (✓)
(ङ) (×)

3. (क) उर्दू → (ii) फारसी
(ख) अंग्रेजी → (i) रोमन
(ग) बांग्ला → (iv) बाँग्ला
(घ) गुजराती → (v) देवनागरी
(ङ) पंजाबी → (iii) गुरुमुखी

4. (क) सांकेतिक भाषा का
(ख) मौखिक भाषा का
(ग) लिखित भाषा का
(घ) मौखिक भाषा का

सोचो ज़रा सोचो

- हम घर में हिन्दी भाषा बोलते हैं। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
- यह (English) अंग्रेजी भाषा है। यह रोमन लिपि में लिखी गई है।
- व्याकरण से हम भाषा को शुद्ध लिखना, पढ़ना और बोलना सीखते हैं।

करके देखिए

- (i) Aaj mera janmdin hai. (Today is my birthday.)
  (ii) Kal mera Cricket match hai. (Tomorrow is my cricket match.)

भारतीय भाषाएँ	विदेशी भाषाएँ
गुजराती	अंग्रेजी
हिन्दी	चीनी
कश्मीरी	फ्रेंच
उड़िया	जापानी
पंजाबी	नेपाली

पाठ—2
वर्ण - विचार

सोचकर बताइए तो

- भाषा की वह छोटी से छोटी ध्वनि (इकाई) जिसके टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है।
- वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय किसी अन्य ध्वनि की आवश्यकता नहीं पड़ती, स्वर कहलाते हैं।
- व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है।
(1)	स्वर	11 मूल + 4 अन्य
(2)	व्यंजन	33 मूल + 2 अन्य
(3)	संयुक्त व्यंजन	4
(4)	कुल वर्ण	52
- ये संयुक्त व्यंजन हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) जवाहर (ख) नाम
(ग) ताजमहल (घ) भारत

2. अ – अचकन/अश्व
उ – उत्तर, उत्साह
इ – इमली/इस
ए – एक, एकता
ऋ – ऋषभ, ऋषि

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

सही क्रम- च, चा, चि, ची, चु, चू, चृ, चे, चै, चो, चौ, चं, चः

पाठ—3
शब्द विचार

ज़रा बताइए तो

- भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं।
- दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।
- अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं—
  (i) सार्थक शब्द (ii) निरर्थक शब्द
- वर्णों का ऐसा समूह जिसका कोई अर्थ निकलता है, उसे सार्थक शब्द कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) लोमड़ी (ख) लड़का
(ग) सूरज (घ) खाना
(ङ) पढ़ाई (च) परीक्षा

2.

सार्थक शब्द	निरर्थक शब्द
खाना	वाना
चाय	वाय
रोना	धोना
घर	बार
रोटी	वोटी
गगन	हाकनी
लकड़ी	मराटर
	जलीबि

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

(क) घोड़ागाड़ी (ख) चिड़ियाघर
(ग) मकान (घ) अकेला
(ङ) तालाब

पाठ—4
वाक्य

ज़रा बताइए तो

- सार्थक शब्दों के मेल से वाक्य बनते हैं।
- शब्दों का वह समूह जो किसी अर्थ को स्पष्ट करता हो, वाक्य कहलाता है।
- वाक्य के अंग-उद्देश्य और विधेय।
- उद्देश्य-वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, वह वाक्य का उद्देश्य कहलाता है।
- विधेय- वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कहा जाता है वह विधेय कहलाता है।

आइए, अब लिखते हैं

	उद्देश्य	विधेय
1.	(क) हम	(क) परसों आगरा जाएँगे।
	(ख) रीना	(ख) अपना गृहकार्य कर रही है।
	(ग) आकाश में बहुत से पक्षी	(ग) उड़ रहे हैं।
	(घ) मैं	(घ) तीन दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।
	(ङ) तुम	(ङ) शाम को मेरे घर आना।

2. (क) मेरी मम्मी स्वादिष्ट खाना बनाती है।
(ख) मैं अपना काम खुद करता हूँ।
(ग) राहुल ईमानदार लड़का है।
(घ) हम सब चिड़ियाघर गए थे।
(ङ) कृष्ण और सुदामा बहुत अच्छे मित्र थे।

3. (क) बीमार पड़ने पर हम डॉक्टर के पास जाते हैं।
(ख) शेर जंगल का राजा कहलाता है।
(ग) हिमालय भारत की उत्तर दिशा में स्थित है।
(घ) हमें सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए।
(ङ) मोहन को क्रिकेट खेलना बहुत पसंद है।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

अध्यापक कक्षा-कक्ष में करवाएँ।

पाठ—5
संज्ञा

ज़रा बताइए तो

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण—राम, आगरा, किताब, पागलपन।
- संज्ञा तीन प्रकार की होती है— 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक 3. भाववाचक

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) (✓) (ख) (✗)
(ग) (✗) (घ) (✓)
(ङ) (✗)

2.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
कुतुबमीनार	बच्चा	सुंदरता
आगरा	शहर	चढ़ाई
महाभारत	पेड़	पागलपन
जनवरी	खिलाड़ी	चतुराई

3. (क) दीपावली, हिन्दुओं, त्योहार
(ख) बाग, दिशाओं, हरियाली
(ग) अतुल, पढ़ाई
(घ) लड़के, फुटबॉल
(ङ) ताजमहल

4. (क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक
(ग) नाम (घ) लड़कपन

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

चुहिया	शेर
आगरा	बुढ़ापा
महल	ताजमहल
हिरन	किला

पाठ—6
सर्वनाम

ज़रा बताइए तो

- संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
- सर्वनाम के भेद-
  1. पुरुषवाचक 2. प्रश्नवाचक
  3. निश्चयवाचक 4. संबंधवाचक
  5. अनिश्चयवाचक 6. निजवाचक।
- भाषा को सुंदर और स्पष्ट बनाने के लिए सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
- मैं, मेरा, मेरी, मुझमें, हम, हमने, हमसे, हममें, हमें, हमारा।

आइए, अब लिखते हैं

1. एक बार सूरज और हवा में बहस हुई। सूरज ने हवा से कहा कि वह अधिक बलवान है। हवा ने कहा कि मैं अधिक बलवान हूँ। बहस करते हुए दोनों चंद्रदेव के पास गए और उनसे पूछा कि हम दोनों में कौन बलवान है। चंद्रदेव ने कहा कि जो राहगीर के कपड़े उतरवाने में सफल होगा वही बलवान होगा।

2.

सर्वनाम शब्द	भेद
(क) मैं	पुरुषवाचक सर्वनाम
(ख) जो, वह	संबंधवाचक सर्वनाम
(ग) कुछ	अनिश्चयवाचक
(घ) क्या, तुम	प्रश्नवाचक, पुरुषवाचक
(ङ) यह, मेरी	निश्चयवाचक, पुरुषवाचक

3. (क) ये केले हैं।
(ख) दूध में कुछ गिर पड़ा है।
(ग) तुम कहाँ जाओगे।
(घ) वह खाना खा रहा है।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

पुरुषवाचक	प्रश्नवाचक	निश्चयवाचक
मैं	कौन	यह
तुम	क्या	वह
निजवाचक	**अनिश्चयवाचक**	**संबंधवाचक**
खुद	कुछ	जो
स्वयं	कोई	सो

पाठ—7
लिंग

ज़रा बताइए तो

- पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं।
- जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं। इसके विपरीत पुरुषजाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं।
- 'राष्ट्रपति' शब्द के साथ प्रयोग होने वाले विशेषण और क्रिया से होती है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) (✓) (ख) (✗)
(ग) (✗) (घ) (✓)
(ङ) (✓)

2. चूहा - पुल्लिंग, डॉ. साहब - पुल्लिंग
मौसा - पुल्लिंग, साम्राज्ञी - स्त्रीलिंग
धोबी - पुल्लिंग, अभिनेत्री - स्त्रीलिंग

2. (क) लड़की कपड़े धो रही है।
(ख) बंदरिया नाच रही है।
(ग) कवयित्री ने सुंदर कविता लिखी।
(घ) वह एक अच्छी गायिका है।

4. पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
(क) टमाटर	भिण्डी
(ख) राम	पेंसिल
(ग) मरीज	डॉक्टर
(घ) पत्र	नानी

सोचो ज़रा सोचो

- उनके साथ प्रयोग की गई क्रिया और विशेषण के द्वारा की जाती है।
- छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुनार	सुनारिन
सेठ	सेठानी
शेर	शेरनी
शिक्षक	शिक्षिका
छात्र	छात्रा
नाग	नागिन
कैसा	कैसी
वर	वधु
राजा	रानी

पाठ—8
वचन

ज़रा बताइए तो

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से वचन की पहचान होती है।
- बहुवचन।
- बहुवचन।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) बच्चे गुब्बारे खरीद रहे हैं।
(ख) टोकरियों में सेब रखे हैं।
(ग) सड़क पर गाड़ियाँ जा रही हैं।
(घ) पौधे उग रहे हैं।

2. (क) आँसू (ख) हैं
(ग) पुस्तकें (घ) मछलियाँ

3. एकवचन	**बहुवचन**
गुड़िया	चादरें
नानी	सहेलियाँ
मुर्गा	नदियाँ
बोतल	केले

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें

करके देखिए

• एक	अनेक
गुड़िया	तोते

ड्रम	गुब्बारे
चूहा	पेन्सिलें
केला	चेरी
	खिलौने

- एकवचन - किताब बहुवचन - किताबें
- एकवचन - प्रधानाध्यापक बहुवचन - अध्यापक

पाठ—9
विशेषण

ज़रा बताइए तो

- संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता या गुण बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
- जिन शब्दों की विशेषता या गुण बताए जाते हैं, वे शब्द विशेष्य कहलाते हैं।
- विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. गुणवाचक 2. संख्यावाचक
3. परिमाणवाचक 4. संकेतवाचक

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) बेईमान (ख) लाल
(ग) तीन (घ) तिरंगे
(ङ) चार लीटर

2.

(क) ताकतवर	शेर
(ख) सफेद	खरगोश
(ग) लाल	टमाटर
(घ) चालाक	लोमड़ी
(ङ) ठंडी	आइस्क्रीम
(च) गरम	चाय

3.

विशेषण	**विशेषय**
रंगीन	तितलियाँ
ऊँची	इमारत
सुंदर	औरतें
काला	हाथी
2. विशाल	हाथी
हरा	पालक
छोटा	बच्चा
घमासान	युद्ध
पाँच	आम
सुगंधित	फूल
वीर	सैनिक

सोचो ज़रा सोचो

1. परिमाणवाचक विशेषण का
2. संकेतवाचक विशेषण का प्रयोग है दोनों वाक्यों में।
3. परिमाणवाचक विशेषण का

करके देखिए

एक पेड़

1. एक हरा पेड़
2. एक घना हरा पेड़
3. एक घना फलदार हरा पेड़

एक गुलाब

1. एक लाल गुलाब
2. एक सुगंधित लाल गुलाब
3. एक ताजा सुगंधित लाल गुलाब

एक तितली

1. एक छोटी तितली
2. एक रंग-बिरंगी छोटी तितली
3. एक प्यारी रंग-बिरंगी छोटी तितली

2.

विशेषण	**भेद**
(1) अच्छा	गुणवाचक
(2) थोड़ा	परिमाणवाचक
(3) बुरा	गुणवाचक
(4) प्यासा	गुणवाचक
(5) गोरा	गुणवाचक
(6) भूखा	गुणवाचक
(7) मीटर	परिमाणवाचक
(8) सुंदर	गुणवाचक
(9) नीचा	गुणवाचक
(10) हरी	गुणवाचक
(11) तीन	संख्यावाचक
(12) चार	संख्यावाचक
(13) प्यारा	गुणवाचक
(14) ऊँचा	गुणवाचक

पाठ—10
क्रिया

ज़रा बताइए तो

- किसी काम का करना या होना क्रिया कहलाता है।
- क्रिया के दो भेद होते हैं—सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया।

3. प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग करके क्रिया की पहचान की जाती है।

4. वाक्य में क्रिया से पहले 'क्या' या 'किसे' लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर मिलता है, तो क्रिया सकर्मक क्रिया है और यदि नहीं मिलता तो क्रिया अकर्मक क्रिया होती है।

आइए, अब लिखते हैं

1. रोना (✓) 2. सोना (✓)
3. खाना (✓) 4. पढ़ना (✓)

2. तेज़ वर्षा के बाद आकाश साफ हो गया। सूरज चमक रहा था और नीले गगन में सात रंगों वाला इंद्रधनुष दिख रहा था। चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। वरुण अपने मित्रों को बुलाने गया। मैदान में बच्चे खेलने लगे।

3. सकर्मक	अकर्मक
खाना	सोना
लिखना	उठना
पढ़ना	बैठना
पीना	हँसना
काटना	जागना

4. (1) सकर्मक क्रिया
(2) अकर्मक क्रिया
(3) सकर्मक क्रिया
(4) अकर्मक क्रिया
(5) सकर्मक क्रिया

5. (1) कल मैं घूमने गया।
(2) छुट्टियों में हमने बहुत से खेल खेले।
(3) बगीचे में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
(4) गणेश ने कहानी सुनाई।

सोचो ज़रा सोचो

- अकर्मक क्रिया—आना, जाना, सोना, उठना, बैठना, जागना, चलना, भागना, रुकना, निकलना, हँसना होना आदि।
- हवा का चलना, बादल का बरसना, नदी का बहना, सूरज का चमकना, चाँद का निकलना आदि।

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ—11
काल

ज़रा बताइए तो

- समय तीन प्रकार का होता है—
  1. बीता हुआ समय
  2. आज का समय
  3. आने वाला समय
- काल समय को कहते हैं।
- काल के तीन भेद होते हैं—
  1. वर्तमान काल
  2. भूतकाल
  3. भविष्यत् काल

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) भूतकाल (ख) भूतकाल
(ग) वर्तमान काल (घ) भविष्यत् काल
(ङ) वर्तमान काल

2.

	भूतकाल	वर्तमानकाल	भविष्यकाल
(क) पीना -	पीया	पी रहा है।	पीएगा।
(ख) सोना -	सोया	सो रही है।	सोएगी।
(ग) नाचना-	नाची	नाच रहा है।	नाचेगी
(घ) खाना -	खाया	खा रहे हैं।	खाएँगे
(च) होना -	हुआ	हो रहा है।	होगा

3. (क) मैं गाना गा रहा था।
(ख) मैं बाज़ार जाता हूँ।
(ग) मैं दिल्ली जाऊँगा।
(घ) राम दिल्ली गया।
(ङ) वह खाना बनाता है।

सोचो ज़रा सोचो

- छात्र स्वयं करें

करके देखिए

- छात्र स्वयं करें

पाठ—12
शब्द भण्डार

(क) पर्यायवाची शब्द

ज़रा बताइए तो

- समानार्थी शब्द के नाम से भी जानते हैं।
- पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (ख) नदी - सरिता, तटिनी, तरंगिनी
(ग) पेड़ वृक्ष, तरु, विटप
(घ) बादल- मेघ, घन, जलद
(ङ) फूल - पुष्प, सुमन, कुसुम
(च) आँख - नयन, लोचन, चक्षु

2. (क) अध्यापक - **शीर्षक**, गुरु, शिक्षक
(ख) नमस्कार - नमस्ते, **धन्यवाद**, प्रणाम
(ग) पत्र - **पत्नी**, चिट्ठी, खत
(घ) राजा - नृप, **राजकुमार**, भूपति
(ङ) पृथ्वी - भू, धरा, **भूपति**

1. (क) औरत (ii) नारी
(ख) पक्षी (iii) खग
(ग) पुत्री (i) सुता
(घ) जल (vi) पानी
(ङ) सूर्य (iv) सूरज
(च) मित्र (v) सखा

1. (क) कपड़ा - वस्त्र (✓) बेटा (×) गिरा (×)
(ख) शंकर - शिव (✓) लंबोदर (×) कुंज (×)
(ग) समुद्र - भानु (×) द्रोण (×) जलधि (✓)
(घ) कमल - जलद (×) जलधि (×) जलज (✓)

सोचो ज़रा सोचो

- अध्यापक- गुरु, शिक्षक, आचार्य
- पुस्तक

करके देखिए

छात्र अध्यापक की सहायता से करें।

(ख) विलोम शब्द

ज़रा बताइए तो

- एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।
- विलोम का अर्थ - विपरीत या उल्टा।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) अहिंसा (ख) दु:ख
(ग) जीतता (घ) आजादी

2. (क) पाना - खोना
(ख) खोना - पाना
(ग) उचित - अनुचित
(घ) प्रतिकूल - अनुकूल
(ङ) अँधेरा - उजाला

3. (क) निर्धन (ख) कुपुत्र
(ग) पाताल (घ) निराशा

सोचो ज़रा सोचो

1. दूर - पास
2. आना - जाना
3. उगना - डूबना
4. ऊपर - नीचे
5. आगे - पीछे

करके देखिए

	दादाजी	**दादीजी**	
चाचाजी	चाचाजी	परिवार पिताजी	**माताजी**
	भाई	बहन	

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

ज़रा बताइए तो

- कम शब्दों के प्रयोग से भाषा स्पष्ट व संक्षिप्त हो जाती है।
- अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले एक शब्द अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) अपठित (ख) वार्षिक
(ग) खंडित (घ) मूक

(ङ) निराकार

2. (क) जो लोहे की वस्तुएँ बनाता हो - लोहार

(ख) जो कभी न मरे - अमर

(ग) जो खेत में काम करता हो - किसान

(घ) जो लकड़ी का काम करे - बढ़ई

(ङ) जिससे बहुत खतरा हो - खतरनाक

3. (क) गाँधीजी अद्वितीय हैं।

(ख) ये शीशा पारदर्शी नहीं है।

(ग) रामू बेसहारा है।

(घ) राधा विधवा है।

सोचो ज़रा सोचो

- सप्ताह
- अध्यापक

करके देखिए

बायें से दायें

(1) मूल्यवान (2) निराकार

(3) दुर्बल (4) अमर

(5) सुगम

ऊपर से नीचे

(1) मूक (2) निडर

(3) दुर्गम (4) अनंत

(5) सुलभ

पाठ—13
विराम-चिह्न

ज़रा बताइए तो

- बात को स्पष्ट करने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
- पूर्ण विराम।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) प्रश्नवाचक चिह्न (?)

(ख) अल्पविराम (,)

(ग) विस्मयबोधक चिह्न (!)

(घ) पूर्ण विराम (।)

2. (क) आप कहाँ रहती हैं?

(ख) अरे ! तुम फिर आ गए।

(ग) माँ ने कहा- "तुम पढ़ाई करो।"

(घ) यह पुस्तक किसकी है?

(ङ) हँसो, मत रोओ।

(च) छि: ! दूर हटो।

(छ) हाथी, धीरे-धीरे चल रहा है।

(ज) राजू, ज्योति और राधा कहाँ हैं?

3. (क) (✗) (ख) (✗)

(ग) (✗) (घ) (✓)

सोचो ज़रा सोचो

1. गंदगी का ढेर देखकर घृणा का भाव उत्पन्न होता है। इसे प्रकट करने के लिए विस्मयबोधक चिह्न लगाएँगे।

2. उत्साह का भाव उत्पन्न होगा। विस्मयबोधक चिह्न से प्रकट किया जाएगा।

करके देखिए

- प्रश्नवाचक चिह्न (?) - राम कहाँ रहता है?
- अल्प विराम (,) - राधा, गीता और मीरा बहुत अच्छी सहेलियाँ हैं।
- पूर्ण विराम (।) - राधा नाचती है।
- विस्मयबोधक चिह्न (!) ओहो! हम मैच जीत गए।

पाठ—14
मुहावरे

ज़रा बताइए तो

- ऐसे वाक्यांश जो एक विशेष अर्थ देकर भाषा को रोचक और प्रभावशाली बनाते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।
- मुहावरे आस-पास की वस्तुओं और प्राणियों के विशेष गुणों को देखकर बनाए जाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) (✓) (ख) (✗)

(ग) (✓) (घ) (✗)

2. (क) कमर कसना - तैयार होना

वाक्य- रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध कमर कस ली।

(ख) उँगली पर नचाना - अपनी इच्छानुसार चलाना

वाक्य- मोहन अपने कर्मचारियों को उँगली पर नचाता है।

(ग) जान हथेली पर रखना - मृत्यु की परवाह न करना।

वाक्य- भारतीय सैनिक जान हथेली पर रखकर देश की रक्षा करते हैं।

(घ) आँखों में धूल झोंकना - धोख देना

वाक्य- चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

(ङ) आँखें नीली-पीली करना - गुस्सा करना

वाक्य- रमा तो ज़रा-सी बात पर भी आँखें नीली-पीली करने लगती है।

1. (क) इधर-उधर की हाँकना (iv) गप्पें मारना

(ख) खून खौलना (iii) जोश में आना

(ग) चार-चाँद लगाना (v) शोभा बढ़ाना

(घ) कमर टूटना (i) हिम्मत टूट जाना

(ङ) खून-पसीना एक करना (ii) कड़ी मेहनत करना

सोचो ज़रा सोचो

- हाथ-पैर जोड़ना – मिन्नतें करना
- नाक रगड़ना – दीनतापूर्वक प्रार्थना करना
- मुँह छिपाना – लज्जित होना
- सिर पीटना – शोक करना

करके देखिए

एक लोमड़ी थी। भूख से उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। तभी उसने पेड़ पर बैठे एक कौए की चोंच में रोटी देखी। रोटी देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। उसे भूख से व्याकुल देखकर कौए ने उसे आधी रोटी देनी चाही। परंतु लोमड़ी पूरी रोटी चाहती थी। उसने कौए की तारीफों के पुल बाँधने शुरू कर दिए। तभी वहाँ एक शिकारी कुत्ता आ गया। उसे देखकर लोमड़ी भीगी बिल्ली बन गई और नौ-दो ग्यारह हो गई। उसने आधी रोटी न लेकर अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मार ली।

पाठ—15
अपठित गद्यांश

सोचकर बताइए तो

- बिना पढ़े हुए को अपठित कहते हैं।
- गद्यांश पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. 1. स्वतंत्रता दिवस

2. हमारा देश लगभग 200 वर्षों तक विदेशी शासकों के अधीन रहा और 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन हुआ।

3. चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, सरदार वल्लभभाई पटेल, लाला लाजपतराय आदि।

4. स्वतंत्रता दिवस बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

5. स्वतंत्रता दिवस के दिन प्रधानमंत्री लाल किले पर झंडा फहराते हैं।

2. 1. (i) दीपावली (✓)

2. (ii) दो बार (✓)

3. (iv) 25 दिसंबर के दिन (✓)

4. (iii) पारसी समुदाय (✓)

5. (i) कार्तिक मास में (✓)

पाठ—16
पत्र लेखन

1. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

बाल विद्या मन्दिर

जोधपुर।

विषय- पुस्तकालय से पाठ्यपुस्तकें पाने के लिए पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा चार का छात्र हूँ। पिछली सभी कक्षाओं में मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मेरे पिताजी एक गरीब किसान हैं। जिन पर मेरे पूरे परिवार का भार है। वह खेती करके ही हम तीन भाई-बहनों को पढ़ा रहे हैं। मेरी कक्षा की अंग्रेजी, विज्ञान व गणित की पुस्तकें बहुत महँगी हैं, जिन्हें मेरे पिताजी बाज़ार से खरीदने में असमर्थ हैं। पुस्तकें न होने के कारण मैं पढ़ाई में पिछड़ रहा हूँ।

अत: आपसे निवेदन है कि विद्यालय के पुस्तकालय

से मुझे पुस्तकें प्रदान करवाने की कृपा करें, जिससे मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

मोहित कुमार

कक्षा - 4 ब

दिनांक- .....

2. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

सरस्वती बाल विद्या मन्दिर

मेरठ।

विषय- पानी की समुचित व्यवस्था हेतु प्रधानाचार्य को पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में पिछले कई दिनों से गन्दा पानी आ रहा है। कभी-कभी तो बिल्कुल भी पानी नहीं आता है। इस कारण छात्र जल्दी ही बीमार पड़ जाते हैं। गर्मी के मौसम में तो यह एक गंभीर समस्या बन जाती है, जब पीने के लिए पानी की कमी हो जाती है।

अत: आपसे अनुरोध है कि विद्यालय में स्वच्छ पेयजल की समुचित व्यवस्था करने की कृपा करें।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोहित शर्मा

कक्षा-IV

3. सेवा में,

श्रीमान थाना प्रभारी महोदय

इंदौर पुलिस थाना (मध्यप्रदेश)

विषय- मोटर साइकिल चोरी होने पर शिकायती पत्र।

महोदय,

सविनय निवदेन है कि मेरा नाम अवनीश कुमार है। मैं इंदौर जिले का निवासी हूँ। आज सुबह 8 बजे मैं अपनी बाइक से घर का सामान लेने बाजार गया था। बाजार में बहुत अधिक भीड़ होने के कारण मैंने अपनी बाइक कुछ दूरी पर खड़ी कर दी और सामान लेने के लिए बाजार के अंदर चला गया। जब मैं सामान लेकर वापस आया तो मुझे वहाँ मेरी बाइक नहीं मिली। मैंने आस-पास बहुत तलाश की और लोगों से भी पूछा किन्तु मुझे मेरी बाइक का कुछ पता न चला। मुझे लगता है कि किसी ने मेरी बाइक उस स्थान से चोरी कर ली है।

श्रीमान मेरी बाइक नीले और काले रंग की हीरो होंडा है, जिसका नंबर MP 18_ _ है तथा मेरी बाइक का मॉडल नंबर 28_ _ है।

अत: आपसे मेरा नम्र निवेदन है कि इस मामले को गंभीरता से लेते हुए इसकी जाँच करवाएँ और मेरी बाइक को जल्द से जल्द ढुँढ़वाने का प्रयास करें। इसके लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

दिनांक-.....

प्रार्थी- अवनीश कुमार

हस्ताक्षर-

4. सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी

बयाना, नगर-पालिका

बयाना।

दिनांक-.....

विषय:-क्षेत्र में डेंगू फैलने पर स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान सुभाष नगर क्षेत्र में फैले डेंगू बुखार की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पूरे इलाके में डेंगू का भयंकर प्रकोप है। प्रत्येक परिवार का कोई-न-कोई सदस्य इससे ग्रसित है। किन्तु जिला अस्पताल में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण लोग निजी अस्पतालों में इलाज करवाने के लिए मजबूर हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिसके पास इतना धन नहीं है कि वह निजी अस्पताल में जाकर इस रोग का इलाज करवा सकें।

अत: आपसे अनुरोध है कि शीघ्र से शीघ्र जिला अस्पताल में चिकित्सा व्यवस्था ठीक करवाएँ, साथ ही इस क्षेत्र में विस्तृत रूप से सफाई अभियान चलवाएँ, डी. डी. टी पाउडर का छिड़काव और मच्छर मारने वाली दवा का भी मशीन से छिड़काव करवाएँ, जिससे जल्द से जल्द यह क्षेत्र डेंगू मुक्त

हो सके।

धन्यवाद

भवदीय

सोहन प्रताप सिंह

5. राजीव विद्यालय

जोधपुर

दिनांक-.....

पूज्य माताजी

सादर प्रणाम

मैं यहाँ पर कुशल हूँ और आशा करता हूँ कि घर भी सभी कुशल मंगल होंगे। माँ, मुझे यह पत्र लिखते हुए बहुत अधिक खुशी हो रही है कि मैंने वार्षिक परीक्षा बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। आपका पत्र मिला था, जिसमें आपने मुझसे मेरी पढ़ाई कैसी चल रही है, यह पूछा था किन्तु उस समय मैं अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारियों में बहुत अधिक व्यस्त था। इसी कारण आपके पत्र का उत्तर नहीं दे पाया। मेरे अंकों से आपको ज्ञात हो ही गया होगा कि मैंने मन लगाकर खूब पढ़ाई की है।

इसी तरह मन लगाकर मैं आगे की भी परीक्षाएँ उत्तीर्ण करूँगा। आप चिंता न करें। अपना और पिताजी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

आपके अगले पत्र का इंतजार रहेगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

हर्षवर्धन

6. 45 शिव विहार कॉलोनी

एयरपोर्ट रोड,

जोधपुर।

दिनांक-.....

आदरणीय पिताजी

सादर चरण स्पर्श,

आपका पत्र मिला। आपके स्नेह वचन पढ़कर मन गद्‌गद हो गया। आपने मुझसे परीक्षा की तैयारी के विषय में पूछा था। पिताजी, मेरी परीक्षा की तैयारी अच्छी चल रही है। अच्छे अंकों को प्राप्त करने के लिए मैं विद्यालय में चलने वाली अतिरिक्त कक्षाओं को भी ले रहा हूँ। मुझे कुछ सहायक पुस्तकें खरीदनी हैं, किन्तु पैसे न होने के कारण अभी तक खरीद नहीं पाया हूँ। अत: आपसे निवेदन है कि आप यथाशीघ्र मुझे एक हजार रुपये भेजने की कृपा करें जिससे मैं वे किताबें खरीदकर अपने कमजोर विषयों को भी परीक्षा से पहले तैयार कर सकूँ।

पूज्यनीय माताजी को सादर प्रणाम

आपका प्रिय पुत्र

निखिल श्रीवास्तव

7. गाँधी नगर, बस्ती

जयपुर

दिनांक-.....

प्रिय मित्र राजेश

सप्रेम नमस्कार,

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और तुम्हारी कुशलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। मित्र, दीवाली का त्योहार आ रहा है। याद है, पिछले साल हमने बहुत उत्साह के साथ यह त्योहार मिलकर मनाया था, किन्तु इस बार हम दीवाली पर साथ नहीं होंगे। कोई बात नहीं मित्र आप दु:खी नहीं होना। दीपावली दीपों का त्योहार है। यह त्योहार तुम्हारे जीवन को भी जगमग दीपों की तरह उज्ज्वल कर दे।

माता लक्ष्मी की कृपा सदा तुम पर और तुम्हारे परिवार पर बनी रहे। ढेर सारी शुभकामनाओं और प्यार के साथ तुमको और तुम्हारे परिवार को इस पावन पर्व की शुभकामनाएँ।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

जय प्रकाश

8. 24/58, वेस्ट पटेल नगर

नई दिल्ली

दिनांक- 8 मार्च 20.....

प्रिय मित्र सुरेश

मैं यहाँ पर ठीक प्रकार से हूँ और आशा करता हूँ तुम भी वहाँ पर ठीक होगे। मेरी परीक्षाएँ एक सप्ताह बाद समाप्त हो रही हैं और मैं तुम्हें इस पिकनिक में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर रहा हूँ। हम सभी ने दिनांक 15 मार्च 20_ _ दिन रविवार को इस पिकनिक पर जाने की योजना बनाई है। मित्र, तुम्हारे साथ गुजारे हर पल को याद करके मुझे लगता है कि हमें फिर से एक मजेदार समय साथ बिताना चाहिए। अत: मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम मेरा यह निमंत्रण अवश्य स्वीकार करो और

शनिवार को ही यहाँ आ जाओ। हम सभी यहीं से साथ चलेंगे और खूब मजा करेंगे।

तुम्हारा प्रिय मित्र

गौरव

करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ—17
अनुच्छेद-लेखन

1. (क) मेरी कक्षा

मेरा नाम हर्ष अग्रवाल है। मैं दिल्ली पब्लिक स्कूल का कक्षा चार का छात्र हूँ। मुझे मेरी कक्षा बहुत प्रिय लगती है। यह एक बहुत बड़ा कमरा है, जिसमें दो दरवाजे हैं। यह विद्यालय की दूसरी मंजिल पर है। इसमें दोनों तरफ बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ हैं, जहाँ से विद्यालय का मैदान दिखाई देता है। मेरी कक्षा में तीन पंखे और चार ट्यूबलाइट लगी हुई हैं। इसमें छात्रों के बैठने के लिए तीस बेंच और अध्यापक के बैठने के लिए एक कुर्सी तथा मेज भी है। मेरी कक्षा में पढ़ाने के लिए प्रोजेक्टर लगा है, जिसके कारण हमें पढ़ने में बहुत आनंद आता है। मेरी कक्षा में पीछे की तरफ एक नोटिस बोर्ड लगा है। कक्षा की दीवारों पर हमारे देश के महापुरुषों के चित्र लगे हुए हैं। मेरी कक्षा में भारत का नक्शा भी टँगा हुआ है। कक्षा के एक कोने में कूड़ेदान भी रखा हुआ है। यह एक हवादार और रोशनी से परिपूर्ण कक्षा है। इस कक्षा का प्रत्येक छात्र कक्षा को स्वच्छ रखने में सहयोग देता है। कक्षा के स्वच्छ वातावरण में हम सभी छात्र शांति से पढ़ाई करते हैं।

(ख) मेरी पहली मेट्रो यात्रा

मैंने पहले भी बहुत-सी जगहों पर रेल से यात्रा की है। लेकिन मेरी पहली मेट्रो यात्रा मुझे आज भी याद है। निश्चित दिन और समय पर मैं पिताजी के साथ मेट्रो स्टेशन पहुँचा। वहाँ पहुँचकर हमने मेट्रो की यात्रा के लिए टोकन लिया। मेट्रो स्टेशन एकदम साफ-सुथरा था। कुछ समय बाद मेट्रो आ गई। इसके दरवाजे स्वचालित हैं। दरवाजा खुलते ही मैं और मेरे मित्र मेट्रो में चढ़ गए। जब मैं ट्रेन के अन्दर पहुँचा तो मुझे बहुत खुशी हुई। मेट्रो ट्रेन के बीच में साफ-सफाई बहुत थी। बहुत ही अच्छा वातावरण था। जब मेट्रो ट्रेन चलना शुरू हुई तो मुझे बहुत अच्छा आराम लगा। मेट्रो ट्रेन में जब मैंने पहली बार यात्रा की तो मुझे ऐसा लगने लगा कि मुझे रोजाना ही इस ट्रेन में यात्रा करनी चाहिए। वास्तव में मेट्रो ट्रेन में बैठने का मेरा अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। मेट्रो ट्रेन भीड़भाड़ से मुक्त होती है। मेरी यह यात्रा एक नए अनुभव के साथ बहुत रोचक रही ।

(ग) पालतू जानवर

पालतू जानवर हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये हमारे साथ खेलते हैं। हमारे साथ समय बिताते हैं और हमें आनंद प्रदान करते हैं। ये हमारे साथी, हमारे मित्र होते हैं। पालतू जानवर हमें अपनी अनकही भाषा से समझते हैं और हमें अपना प्यार और स्नेह दिखाते हैं। पालतू जानवर अपने स्वामी की रक्षा करते हैं और अकेलेपन से बचाते हैं। इनका प्यार और स्नेह हमारे मन की शांति प्रदान करता है और हमें खुश रखता है। पालतू जानवरों में कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा, मछली, गाय, भैंस, बकरी आदि जानवर शामिल हैं। ये हमारे जीवन में खुशियाँ भरते हैं और हमारे जीवन को सुंदर बनाते हैं।

हमें पालतू जानवरों के प्रति सम्मान और प्यार रखना चाहिए। उनकी उचित देखभाल करनी चाहिए। उनके भोजन-पानी की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। उनके साथ समय बिताना चाहिए।

(घ) यदि मैं देश का प्रधानमंत्री होता

प्रधानमंत्री का पद अत्यंत महत्वपूर्ण पद होता है। सम्पूर्ण देश की बागडोर, अहम् फैसलों का दायित्व और अनगिनत जिम्मेदारियाँ प्रधानमंत्री को निभानी होती हैं। प्रधानमंत्री बिना रुके देश के प्रति दैनिक जिम्मेदारियों को अपनी पूरी निष्ठा के साथ निभाता है। यदि मैं अपने देश का प्रधानमंत्री होता तो सबसे पहले मैं अपने देश को एक मजबूत और स्वाभिमानी राष्ट्र बनाने के लिए अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूँगा जिससे भारत एक महान शक्ति बनेगा और कोई भी दुश्मन देश हमारे देश पर हमला करने की हिम्मत भी नहीं करेगा। इसके बाद मेरा दूसरा काम होगा- देश के सबसे गरीब और निम्नतर लोगों के स्तर को ऊँचा उठाना, उन्हें सभी सुविधाएँ प्रदान करना। मैं प्रत्येक घर से कम से कम एक व्यक्ति को रोजगार प्रदान करने की कोशिश करूँगा। मैं शिक्षा प्रणाली का स्तर ऊँचा उठाऊँगा। देश में महिला शिक्षा को बढ़ावा दूँगा। महिलाओं को

रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराऊँगा। साथ ही साथ बेरोजगार युवाओं और आतंकवाद से मुक्त करने का प्रयास करूँगा। जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाने का प्रयास करूँगा। एक प्रधानमंत्री होने के नाते मैं समाज में फैली हुई कई सारी समस्याओं को दूर करने का प्रयास करता, ताकि मेरा देश एक विकसित देश बन पाए।

3. मोबाइल फोन

मोबाइल फोन को हिन्दी में चलयंत्र कहा जाता है। यह विज्ञान की एक ऐसी देन है जिसने टी. वी. फोन, घड़ी, टॉर्च आदि सभी की आवश्यकता को कम कर दिया है। इसके छोटे आकार, वजन में हल्के होने और कहीं भी लाने-ले जाने की सुविधा जैसे गुणों ने इसे इतना लोकप्रिय बना दिया है कि इसके बिना प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अधूरा समझता है। बिना तारों वाला मोबाइल फोन जगह-जगह लगे ऊँचे टावरों से तरंगों को ग्रहण करके मनुष्य को दुनिया के प्रत्येक कोने से जोड़ता है। मोबाइल फोन से संदेश भेजना सरल, सस्ता और सहज हो गया है। छोटे से मोबाइल से हम एम. एम. एस और एम. एम. एस. भेज सकते हैं, फोटो खींच सकते हैं, वीडियो बना सकते हैं। गाने सुन सकते हैं, समय देख सकते हैं, गणना कर सकते हैं और ना जाने कितने ही काम इस छोटे से यंत्र पर आसानी से किए जा सकते हैं। बैंक के कई काम इस पर आसानी से किए जा सकते हैं। मोबाइल फोन के जहाँ कई लाभ हैं, वही नुकसान भी बहुत हैं। इसके कारण मनुष्य अनेक रोगों से ग्रसित हो जाता है। बच्चे शारीरिक क्रियाकलाप छोड़कर इसे ही पकड़कर बैठे रहते हैं जिससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास रुक जाता है। अत: इसका प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए।

(घ) मेरे प्रिय अध्यापक

मैं कक्षा चार का छात्र हूँ। मेरी कक्षा में कुल पाँच अध्यापक पढ़ाते हैं। वे सभी हमें समान रूप से प्यार करते हैं। लेकिन मेरे प्रिय अध्यापक श्री रामचंद्र जी हैं। वे हमारी कक्षा को अंग्रेजी पढ़ाते हैं। वे एक लम्बे-चौड़े और भव्य व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वे हमेशा बहुत साफ और स्वच्छ कपड़े पहनते हैं। समय पर विद्यालय आते हैं। वे कभी भी अवकाश नहीं लेते हैं। इनका पढ़ाने और समझाने का तरीका भी बहुत अलग है। वह प्रत्येक पाठ को सहज और सरल तरीके से पढ़ाते हैं जिससे कमजोर छात्र भी आसानीपूर्वक समझ जाते हैं। वे छात्रों को हमेशा अच्छी-अच्छी ज्ञानवर्धक बातें भी बताते हैं। वह छात्रों को कठिन परिश्रम करने और अच्छे अंक लाने के लिए प्रेरित भी करते हैं। वह पढ़ाई के बीच-बीच में छात्रों का मनोरंजन भी करते हैं, जिससे छात्रों में नीरसता नहीं आए। उनके इन्हीं सब गुणों के ही कारण वे मेरे प्रिय अध्यापक हैं।

(छ) प्रात:काल का दृश्य

प्रात:काल का समय सबसे खास होता है। यह वह समय है जब प्रकृति अपने सबसे शांत और सुन्दर रूप से दिखाई देती है। इस समय सभी जगह हरियाली का सजीव और ताजा दृश्य दिखाई देता है। प्रातकाल: में आकाश एकदम साफ होता है। सूरज की पहली किरण पृथ्वी को अपनी गोद में लेती है। पेड़-पौधों की हरियाली और फूलों की खुशबू सबको मोहित कर देती है। पक्षियों की चहचहाट मन को आंनदित कर देती है। प्रात:काल का यह दृश्य हमारे स्वास्थ्य के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस समय वायुमंडल में अधिक मात्रा में ऑक्सीजन होती है और वायु भी सबसे शुद्ध होती है। जो हमारे शरीर को स्वस्थ और फुर्तीला बनाती है। यह हमें प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द प्रदान करता है। यह हमारे स्वास्थ्य और मानसिक शांति में बढ़ोत्तरी करता है। प्रात: काल के इस दृश्य को अपने जीवन में शामिल करके हम अपने जीवन को खुशी और प्रसन्नता से भर सकते हैं।

(ज) क्रिकेट मैच का वर्णन

हमारा विद्यालय प्रतिवर्ष खेल का आयोजन करता है। इस बार हमारे विद्यालय का बैतूल के हाई स्कूल के साथ क्रिकेट मैच होना था। इस मैच का आयोजन हमारे विद्यालय के मैदान में ही रखा गया था। निश्चित तिथि पर यह मैच शुरू हुआ। दोनों टीमों के कप्तान और एम्पायर टॉस के लिए ग्राउंड पर आए और टॉस किया गया। हमारे विद्यालय ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। हमारे विद्यालय के खिलाड़ियों ने 50 ओवर में 6 विकेट खोकर बैतूल हाई स्कूल के समक्ष 272 रन का स्कोर खड़ा किया। थोड़े समय बाद बैतूल की टीम बल्लेबाजी करने के लिए मैदान

में उतरी। शुरुआती 40 ओवर में उनके 5 विकेट गिर चुके थे। हमारे खिलाड़ियों ने अच्छी गेंदबाजी करते हुए जल्दी-जल्दी उनके 5 विकेट गिरा दिए थे जिससे हमारा मनोबल बढ़ गया था किन्तु इसके बाद उनके दोनों बल्लेबाज काफी सँभलकर और तेजी से रन बनाने लगे। यह हमारे लिए निराशा का कारण था। साथ ही इससे मैच एक रोमांचक स्थिति में पहुँच गया था। इसी बीच उनका एक विकेट गिर गया जिससे मैच में हमारी पुन: वापसी हो गई और उनके एक-एक करके 48 ओवर में सभी खिलाड़ी आउट हो गए। हमारे विद्यालय की टीम यह मैच 20 रनों से जीत गई। सभी ने मिलकर हमारी क्रिकेट टीम को बधाई दी और जीतने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया।

2. (क) वृक्षारोपण की आवश्यकता

वर्तमान वैज्ञानिक युग में वृक्षारोपण की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान में विकास के नाम पर पृथ्वी पर स्थित वनों का दोहन किया जा रहा है। वृक्ष, प्रकृति का एक अमूल्य वरदान हैं। सदा से ही मनुष्य और वृक्षों का एक अटूट सम्बन्ध रहा है। वृक्षों से प्राप्त लकड़ी, जड़ी-बूटियाँ, औषधियाँ, फल-फूल आदि का प्रयोग मनुष्य अपने लाभ के लिए करता ही रहता है। वृक्ष सदैव परोपकारी की भाँति अपने प्रत्येक अंग से प्रकृति का संतुलन स्थापित करते हैं। वृक्ष वर्षा कराने में सहयोगी होते हैं। यह भूमि को उर्वरक बनाते हैं। वृक्ष प्रदूषण समाप्त करके हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वृक्ष बाढ़-सूखा एवं मिट्टी का कटाव जैसी प्राकृतिक आपदाओं से हमारी रक्षा करते हैं। यदि मनुष्य जाति को बचाना है तो पहले वृक्षों को बचाना होगा। अत: अधिक से अधिक मात्रा में वृक्षारोपण करना होगा। वृक्षारोपण का उद्देश्य केवल वृक्षों को लगाना ही नहीं अपितु उचित देखभाल करना भी है।

(ख) शौचालय की जरूरत

स्वच्छता को बनाए रखने में सबसे बड़ी चुनौती है, घरों में शौचालयों का न होना। अक्सर गाँवों में देखने को मिलता है कि वहाँ रहने वाले स्त्री-पुरुष, बच्चे, वृद्ध सभी खुले में शौच करने जाते हैं। इसके कारण वहाँ अस्वच्छता फैलती है, जो अनेक बीमारियों को जन्म देता है। मानव मल में भारी संख्या में गंभीर बीमारी फैलाने वाले कीटाणु होते हैं। यदि लोगों को शौचालय की आवश्यकता के प्रति जागरूक किया जाए तो इन बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। शौचालय न सिर्फ स्वच्छता के प्रतीक हैं अपितु यह अच्छे स्वास्थ्य का भी प्रतीक हैं। शरीर को स्वच्छ रखना प्रत्येक मानव का पहला कर्त्तव्य है। इस कार्य में शौचालय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मानव मल का निपटान उचित और सुरक्षित तरीके से करते हैं। साथ ही घर में शौचालय महिलाओं को असुरक्षित और असहज शौच मुक्त होने से भी बचाता है। यदि देश को स्वच्छ और स्वस्थ बनाना है, उसके लिए खुले में शौच मुक्त और घर-घर शौचालय की भावना को जगाना होगा तभी भारत वास्तविक अर्थ में स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत बनेगा।

पाठ—18
कहानी लेखन
खट्टे अंगूर

1. एक दिन भरी दोपहर में एक लोमड़ी भूख से व्याकुल होकर जंगल में भोजन की तलाश में भटक रही थी। चलते-चलते उसे अंगूर की बेल दिखाई दी। बेल पर अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। पके-पके अंगूरों को देखकर लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया। उसने अंगूर खाने के लिए छलाँग लगाई। लेकिन अंगूर बेल में बहुत ऊँचाई पर लटक रहे थे। इसलिए लोमड़ी वहाँ तक नहीं पहुँच पाई। इस बार लोमड़ी ने पहले से ऊँची छलाँग लगाई। किंतु इस बार भी उसे असफलता ही हाथ लगी। लोमड़ी ने कई बार प्रयास किया किंतु हर बार वह अंगूर खाने में विफल रही। कई बार प्रयास करने पर भी जब लोमड़ी को अंगूर नहीं मिले तो उसने यह कहकर अपने मन को समझा लिया कि अंगूर खट्टे हैं, इन्हें खाकर कोई फायदा नहीं। अंत में बेचारी लोमड़ी थक-हार कर वहाँ से चली गई।

शिक्षा- जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह अपनी कमजोरी छिपाने के लिए, उस वस्तु को ही तुच्छ सिद्ध कर देता है।

2. **झूठ का फल**

किसी गाँव में बंगाली नाम का एक लड़का रहता था। वह प्रतिदिन जंगल में भेड़-बकरियाँ चराने जाता था। एक दिन जब वह अपनी भेड़-बकरियाँ चरा रहा था, तब उसे एक शरारत सूझी। वह एक

पेड़ पर चढ़ गया और जोर से चिल्लाने लगा-बचाओ भेड़िया आया भेड़िया आया। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर गाँव वाले उसकी सहायता करने दौड़े-दौड़े आए। गाँव वालों ने पूछा—कहाँ है भेड़िया? बंगाली ने मुस्कुराते हुए कहा-भेड़िया तो आया ही नहीं। मैं तो झूठ-मूठ में यों ही मजाक कर रहा था। गाँव वालों ने बंगाली को बहुत भला-बुरा कहा और तुरंत गाँव वापस चले गए।

कुछ दिन बाद जब बंगाली रोजाना की तरह जंगल में अपनी भेड़-बकरियाँ चरा रहा था, तभी वास्तव में ही भेड़िया आ गया। बंगाली भेड़िए से भयभीत होकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा—बचाओ! बचाओ! बचाओ! भेडिया। सचमुच ही भेड़िया आ गया है! गाँव वालों ने उसकी आवाज सुनी, परन्तु सहायता के लिए कोई नहीं आया। उन्होंने सोचा-बंगाली उसी दिन की तरह झूठ बोलकर हमें मूर्ख बना रहा है। भेड़िए ने बंगाली की आठ-दस भेड़ें मार दीं और बंगाली को भी घायल कर दिया।

शिक्षा-हमें कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

3. एकता में बल

किसी गाँव में कबूतरों का एक समूह रहता था। एक बार पूरा समूह भोजन की तलाश में उड़ रहा था। वहीं जंगल में एक शिकारी ने पक्षी पकड़ने के लिए जाल बिछाया हुआ था। ऊपर उड़ते कबूतरों के समूह में से एक कबूतर की नज़र नीचे बिछे चावलों पर पड़ी। चावल के दाने देखकर वह बहुत खुश हुआ, उसने समूह के सरदार को चावल के दाने दिखाए। उस समूह में एक वृद्ध कबूतर भी था, उसे जंगल में चावल के दाने बिखरे होने पर संदेह हुआ। उसने समूह को समझाया कि यह अवश्य ही किसी शिकारी का जाल है, किंतु भूखे कबूतरों ने उसकी बात नहीं मानी। वे सभी दाने चुगने के लिए नीचे उतर गए। पेट भरने के बाद जैसे ही उन्होंने उड़ने की कोशिश की तो उन्होंने स्वयं को जाल में फँसा पाया। सभी कबूतर जाल से निकलने के लिए छटपटाने लगे। उन्हें दूर से शिकारी आता हुआ दिखाई दिया। तब उस वृद्ध कबूतर ने उन सभी कबूतरों को समझाया और एक साथ ताकत लगाकर जाल को अपने साथ उड़ा ले जाने की सलाह दी। सभी कबूतरों ने वैसा ही किया। जैसे ही शिकारी पास आने को हुआ सभी कबूतर जाल को उड़ा ले गए। वह वृद्ध कबूतर पूरे समूह को लेकर अपने परम मित्र चूहे के पास पहुँचा और उसे पूरी बात बताई। चूहे ने तुरंत ही अपने नुकीले दाँतों से जाल को काट दिया। जाल के कटते ही सभी कबूतर आज़ाद हो गए। जाल से छूटने के बाद उन सभी ने उस बूढ़े कबूतर से उसकी सलाह न मानने के लिए माफी माँगी।

जाँच-पत्र—1

ज़रा बताइए तो

- भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाला शास्त्र 'व्याकरण' कहलाता है।
- वर्णों का सार्थक समूह जिसका अर्थ होता है, **सार्थक शब्द** कहलाता है।
- संज्ञा तीन प्रकार की होती है—1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक, 3. भाववाचक संज्ञा।
- शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसके **लिंग** कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) नाम

(ख) भारत

2. (क) ये

(ख) कुछ

(ग) तुम्हारा

3. एकवचन	**बहुवचन**
नानी	चादरें
बोतल	सहेलियाँ
मुर्गा	गुड़ियाँ
	नदियाँ, केले
4. ताकतवर	सफेद
लाल	चालाक

जाँच-पत्र—2

ज़रा बताइए तो

- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता या गुण बताते हैं, वे **विशेषण** कहलाते हैं।
- अपठित गद्यांश में गद्यांश आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) गया

(ख) खिले हैं

2. (क) मैं दिल्ली गया था।

(ख) राम कानपुर जाता है।

3. (क) सरिता तटिनी तरंगिनी

(ख) मेघ घन जलद

4. (क) ?

(ख) , ।

5. (क) आँखों में धूल झोंकना— धोखा देना

अपराधी पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

(ख) उँगली पर नचाना—अपनी इच्छानुसार चलाना

मालिक नौकरों को अपनी उँगली पर नचाता है।

6. सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी

बयाना, नगर-पालिका

बयाना (भरतपुर)।

दिनांक-.....

विषय:-क्षेत्र में डेंगू फैलने पर स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान सुभाष नगर क्षेत्र में फैले डेंगू बुखार की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पूरे इलाके में डेंगू का भयंकर प्रकोप है। प्रत्येक परिवार का कोई-न-कोई सदस्य इससे ग्रसित है। किन्तु जिला अस्पताल में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव हैं जिसके कारण लोग निजी अस्पतालों में इलाज करवाने के लिए मजबूर हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिसके पास इतना धन नहीं है कि वह निजी अस्पताल में जाकर इस रोग का इलाज करवा सकें।

अत: आपसे अनुरोध है कि शीघ्र-से-शीघ्र जिला अस्पताल में चिकित्सा व्यवस्था ठीक करवाएँ, साथ ही इस क्षेत्र में विस्तृत रूप से सफाई अभियान चलवाएँ, डी. डी. टी. पाउडर का छिड़काव और मच्छर मारने वाली दवा का भी मशीन से छिड़काव करवाएँ जिससे जल्द से जल्द यह क्षेत्र डेंगू मुक्त हो सके।

धन्यवाद

भवदीय

सोहन प्रताप सिंह

7. **एकता में बल**

किसी गाँव में कबूतरों का एक समूह रहता था। एक बार पूरा समूह भोजन की तलाश में उड़ रहा था। वहीं जंगल में एक शिकारी ने पक्षी पकड़ने के लिए जाल बिछाया हुआ था। ऊपर उड़ते कबूतरों के समूह में से एक कबूतर की नज़र नीचे बिछे चावलों पर पड़ी। चावल के दाने देखकर वह बहुत खुश हुआ, उसने समूह के सरदार को चावल के दाने दिखाए। उस समूह में एक वृद्ध कबूतर भी था, उसे जंगल में चावल के दाने बिखरे होने पर संदेह हुआ। उसने समूह को समझाया कि यह अवश्य ही किसी शिकारी का जाल है, किंतु भूखे कबूतरों ने उसकी बात नहीं मानी। वे सभी दाने चुगने के लिए नीचे उतर गए। पेट भरने के बाद जैसे ही उन्होंने उड़ने की कोशिश की तो उन्होंने स्वयं को जाल में फँसा पाया। सभी कबूतर जाल से निकलने के लिए छटपटाने लगे। उन्हें दूर से शिकारी आता हुआ दिखाई दिया। तब उस वृद्ध कबूतर ने उन सभी कबूतरों को समझाया और एक साथ ताकत लगाकर जाल को अपने साथ उड़ा ले जाने की सलाह दी। सभी कबूतरों ने वैसा ही किया। जैसे ही शिकारी पास आने को हुआ सभी कबूतर जाल को उड़ा ले गए। वह वृद्ध कबूतर पूरे समूह को लेकर अपने परम मित्र चूहे के पास पहुँचा और उसे पूरी बात बताई। चूहे ने तुरंत ही अपने नुकीले दाँतों से जाल को काट दिया। जाल के कटते ही सभी कबूतर आज़ाद हो गए। जाल से छूटने के बाद उन सभी ने उस बूढ़े कबूतर से उसकी सलाह न मानने के लिए माफी माँगी।

हिन्दी व्याकरण- 5

पाठ—1
भाषा और व्याकरण

ज़रा बताइए तो

1. अपने भावों और विचारों को बोलकर, लिखकर या पढ़कर प्रकट करने के माध्यम को भाषा कहते हैं।
2. विचारों का आदान-प्रदान तीन प्रकार से किया जाता है—1. बोलकर, 2. लिखकर, 3. संकेत के द्वारा।
3. किसी देश के अधिकतर निवासियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है।
4. बच्चा जो भाषा अपने माता-पिता तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों से सर्वप्रथम सीखता है, वह उसकी 'मातृभाषा' कहलाती है।
5. व्याकरण हमें वर्णों, शब्दों और वाक्यों के शुद्ध प्रयोग की जानकारी देता है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) सीमित
   (ख) मौखिक
   (ग) लिखित
   (घ) सांकेतिक
2. (क) ✓
   (ख) ×
   (ग) ✓
   (घ) ×
3. (क) लिपि
   (ख) व्याकरण
   (ग) देवनागरी
   (घ) 14 सितंबर

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

छात्र स्वयं करें

पाठ—2
वर्ण-विचार

ज़रा बताइए तो

1. हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं। इनमें 11 स्वर, 33 व्यंजन, 2 उत्क्षिप्त व्यंजन, 2 अयोगवाह और 4 संयुक्त व्यंजन हैं।
2. दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन 'संयुक्त व्यंजन' कहलाते हैं; जैसे— क + ष = क्ष - क्षमा, श + र + श्र = श्रमदान।
3. हिंदी वर्णमाला में अं और अः दो अयोगवाह होते हैं। अं को अनुस्वार (ं) तथा अः को विसर्ग (:) कहते हैं।
4. ङ्, ञ्, ण्, न् तथा म् को पंचम वर्ण कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) ऑ — ऑफिस, ऑफिसर, डॉक्टर
   (ख) ज़ — चीज़, ज़रा, ज़ोर
   (ग) फ़ — फ़ारसी, फ़कीर, फरिश्ता
2. राम — र् + आ + म् + अ
   दिनेश — द् + इ + न् + ए + श् + अ
   महेश — म् + अ + ह् + ए + श् + अ
   विनय — व् + इ + न् + अ + य् + अ
   दीपिका — द् + ई + प् + इ + क् + आ
   बिल्ली — ब् + इ + ल् + ल् + ई
   फुब्बारा — फ् + उ + ब् + ब् + आ + र् + आ
   कुत्ता — क् + उ + त् + त् + आ
   चिल्लाना — च् + इ + ल् + ल् + आ + न् + आ
   नियमित — न् + इ + य् + अ + म् + इ + त् + अ
3. (क) ढोलक (ख) तबला
   (ग) ठठेरा (घ) भेडिया
   (ङ) चमक (च) चीतल
   (छ) बकरी (ज) जलेबी
4. (क) चाँदनी (ख) आँख
   (ग) अंगूर (घ) पाँच
   (ङ) व्यंजन (च) बंदूक

5. (क) ×

(ख) ✓

(ग) ✓

(घ) ×

(ङ) ✓

सोचो ज़रा सोचो

1. नहीं, बिना स्वयं के व्यंजन नहीं बोले जा सकते हैं।

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

करके देखिए

स्थान	वर्ण
1. होठ	उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म
2. दाँत	ऌ, त, थ, द, ध, न, ल, स
3. मूर्धा	ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष
4. तालु	इ, ई, च, छ, ज, झ, म, य, श
5. गला (कंठ)	अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, अः
6. नाक	अं, ङ, ञ, ण, न्, म्
7. जीभ की जड़ (जिह्वामूल)	क, ख, ग, घ, ङ

पाठ—3
शब्द-विचार

ज़रा बताइए तो

1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं।

2. तत्सम शब्द—वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में ज्यों-के-त्यों आ गए हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे-गृह, पत्र।

तद्भव शब्द—संस्कृत के जिन शब्दों का रूप बदलकर हिन्दी में प्रयोग किया जाता है, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। उदाहरण—घी, दही, खेत आदि।

3. यौगिक शब्द—जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने हैं और जिनके टुकड़े करने पर टुकड़ों का कोई विशेष अर्थ हो, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं जैसे—हिमालय = हिम + आलय

योगरूढ़ शब्द—जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं, और किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे—जलज = जल + ज (जल में उत्पन्न होने वाला अर्थात् कमल)

4. जो शब्द लिंग, वचन, काल आदि के कारण अपना रूप बदल लेते हैं, विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द विकारी होते हैं।

आइए अब लिखते हैं

1.

हस्त	— हाथ	घृत	— घी
दुग्ध	— दूध	मातृ	— माता, माँ
अग्नि	— आग	कर्ण	— कान
पुत्र	— बेटा	नासिका	— नाक
पाद	— पैर	पितृ	— पिता
गृह	— घर	पत्र	— पत्ता, चिट्ठी
दधि	— दही	क्षेत्र	— खेत

2.

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	विदेशी शब्द
चर्म	आम	खिचड़ी	तोप
उच्च	कान	छटपटाना	रिश्वत
कृषक	ऊँचा	सटकना	कॉलेज
सर्प	आठ	लकड़ी	आसमान

3.

रूढ़ शब्द	यौगिक शब्द	योगरूढ़
आँख	हिमालय	पंचानन
घर	दूधवाला	दशानन
पानी	कुपुत्र	वंशीधर

सोचो ज़रा सोचो

1. छात्र स्वयं करें।
2. कम्प्यूटर को **संगणक**, स्कूल को **विद्यालय** तथा टेलीफोन को **दूरभाष यन्त्र** कहते हैं।

करके देखिए

चीनी से — लीची, चीकू

अरबी से — इज्जत, दुआ

तुर्की से — कुली, तोप, काबू

पुर्तगाली से — आलपिन, गमला, आलू

फारसी से — प्याला, चिलम, अचार, आसमान, अनार

अंग्रेजी से — आइसक्रीम, स्कूल, हाईकोर्ट, डायरी, कैमरा

पाठ—4
संज्ञा

ज़रा बताइए तो

1. वे शब्द जिनके द्वारा किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, जाति या भाव के नाम का बोध हो, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

2. संज्ञा के तीन भेद हैं-1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा।

3. जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान आदि के नाम का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, जबकि वे संज्ञा शब्द जिनसे एक ही जाति या वर्ण के सभी प्राणियों, वस्तुओं अथवा स्थानों के नाम का पता चलता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

4. भाववाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण से बनाई जाती हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) ✓
(ख) ✓
(ग) ×
(घ) ×
(ङ) ✓

2.

जाति वाचक	व्यक्ति वाचक	भाव वाचक	समूह वाचक	पदार्थ वाचक
चोर	कबीरदास	सुंदरता	कक्षा	सोना
सेब	वाराणसी	पुस्तकालय	पत्थर	
	सचिन तेन्दुलकर	सेना		
नदी	यमुना			
मोर	दिल्ली			

3. कवि – कवित्व
व्यक्ति – व्यक्तित्व
मम – ममत्व
मित्र – मित्रता
मुस्कुराना – मुस्कुराहट
पराया – परायापन
मीठा – मिठास
स्व – स्वत्व
फैलना – फैलाव

4. गुलाब, कमल, चमेली — फूल
रामायण, कुरान, महाभारत — पुस्तकें
गंगा, यमुना, कावेरी — नदी
रूस, भारत, अमेरिका — देश
ताजमहल, कुतुबमीनार, लाल किला — इमारत
जयपुर, अजमेर, आगरा — शहर

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

छात्र स्वयं करें

पाठ—5
सर्वनाम

ज़रा बताइए तो

1. जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—वह गाना गा रही है।

2. सर्वनाम के भेद: 1. पुरुषवाचक सर्वनाम, 2. निश्चय वाचक सर्वनाम, 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम, 5. निजवाचक सर्वनाम, 6. संबंधवाचक सर्वनाम।

3. वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं, तथा वे सर्वनाम शब्द जो किसी पास अथवा दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चित बोध न कराएँ, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

4. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-स्वयं, खुद, अपने, आप आदि।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) ✓
(ख) ×
(ग) ×
(घ) ✓
(ङ) ✓

2. रोहन कक्षा पाँच का छात्र है। उसके पिताजी सरकारी

कर्मचारी हैं और उसकी माताजी अध्यापिका हैं। वह अपने दादा-दादी व माता-पिता के साथ रहता है। वह कक्षा में सदैव प्रथम आता है। वह अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करता है। वह खेल में भी हमेशा अव्वल आता है। उसके इन्हीं गुणों पर सभी अध्यापक गर्व करते हैं।

3. (क) मुझे भूख लगी है।

(ख) जल्दी से मुझे गाना सुना दो।

(ग) इस बारे में आप नहीं जानते।

(घ) आप अपना काम स्वयं कीजिए।

4.

पुरुषवाचक	निजवाचक	संबंधवाचक
मैं	स्वयं	जो-सो
तुम्हारा	खुद	जैसा-वैसा
आपका	अपने-आप	जिसे-उसे

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

छात्र स्वयं करें

पाठ—6
लिंग

ज़रा बताइए तो

1. पुरुष या स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।

2. वे शब्द जिनका प्रयोग पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों के लिए समान रूप से किया जाता है, उभयलिंग कहलाते हैं। जैसे—मरीज, वकील।

3. हिंदी में दो लिंग होते हैं-1. पुल्लिंग, 2. स्त्रीलिंग।

आइए, अब लिखते हैं

1.

लड़की - लड़का	अभिनेता - अभिनेत्री
विद्वान - विदुषी	पंडित - पंडिताइन
नरमक्खी - मादा मक्खी	श्रीमान - श्रीमती
बाल - बाला	गुड्डा - गुड़िया
बलवान - बलवती	सम्राट - सम्राज्ञी
वर - वधू	गाय - बैल

2.

पुल्लिंग शब्द	स्त्रीलिंग शब्द
घड़ा	मटर
आम	दादी
गुलाब	यमुना
अप्रैल	देवनागरी
सोमवार	ऐनक
भारत	बोतल
पकौड़े	लीची

3. (क) दासी सेवा करती है।

(ख) माता के साथ पुत्र जा रहा है।

(ग) मेरी अध्यापिका बहुत बुद्धिमती हैं।

(घ) वह भाग्यवती है।

सोचो ज़रा सोचो

4. **मैना** - नर मैना - मादा मैना

तोता - नर तोता - मादा तोता

उल्लू - नर उल्लू - मादा उल्लू

चीता - नर चीता - मादा चीता

लोमड़ी - नर लोमड़ी - मादा लोमड़ी

खरगोश - नर खरगोश - मादा खरगोश

कौआ - नर कौआ - मादा कौआ

कोयल - नर कोयल - मादा कोयल

करके देखिए

बालिका

विद्वान

भगवान

श्रीमान्

अभिनेता

पाठिका

पाठ—7
वचन

ज़रा बताइए तो

1. संख्या बताने वाले शब्दों को वचन कहते हैं।

2. वचन के दो भेद होते हैं - 1. एकवचन, 2. बहुवचन

3. आँसू, प्राण, हस्ताक्षर, दर्शन

4. साधु, छात्र

आइए, अब लिखते हैं

1.

	एकवचन	बहुवचन
(क)	चिड़िया	चिड़ियाँ

(ख) पहाड़ी — पहाड़ियाँ

(ग) कुटी — कुटियाँ

(घ) लता — लताएँ

2. (क) चिड़िया उड़ रही है।

(ख) बच्चे खेल रहे हैं।

(ग) गाय घास चर रही है।

(घ) वे पुस्तकें पढ़ रहे हैं।

3. (क) मिठाइयों पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं।

(ख) रंग-बिरंगे फूल सुंदर लग रहे हैं।

(ग) सभी खिड़कियों से हवा अंदर आ रही है।

(घ) आजकल सड़कें पक्की बनने लगी हैं।

4. (क) **छात्र** (एकवचन) - राम कक्षा पाँच का छात्र है।

(बहुवचन) - कक्षा पाँच के सभी छात्र बहुत होशियार हैं।

(ख) साधु (एकवचन) - दरवाजे पर साधु आया है।

साधु (बहुवचन) - कुंभ के मेले में साधु आए हैं।

(ग) बात (एकवचन) - उसकी बात में सत्यता दिखती है।

(बहुवचन) - राधा बहुत बातें बनाती है।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

1. छात्र स्वयं करें

2. एकवचन - खिलौना, आम, पत्ता, गेंद

बहुवचन - केले, बल्ले, किताबें, धातुएँ

पाठ—8
कारक

ज़रा बताइए तो

1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ इनका संबंध पता चलता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

2. कारक के भेद - 1. कर्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. संप्रदान, 5. अपादान, 6. संबंध, 7. अधिकरण, 8. संबोधन।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) की,

(ख) में,

(ग) पर,

(घ) की,

(ङ) से।

2. (क) ने — **(iii)** कर्त्ता

(ख) का — **(iv)** संबंध

(ग) के लिए — **(v)** संप्रदान

(घ) के द्वारा — **(ii)** करण

(ङ) में — **(i)** अधिकरण

3. (क) **हे!** - हे! भगवान ये क्या हो गया?

(ख) **पर** - दीवार पर मत लिखो।

(ग) **को** - कृष्ण ने कंस को मारा।

(घ) **से** (अलग होना) - पेड़ से पत्ता गिरता है।

(ङ) **की** - यह मोहन की दुकान है।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

4. (क) अध्यापिका श्यामपट्ट से पढ़ाती हैं।

परसर्ग - से

कारक - करण

(ख) महिला छत पर बैठी है।

परसर्ग - पर

कारक - अधिकरण

(ग) छात्रा विद्यालय को जा रही है।

परसर्ग - को

कारक - कर्म

(घ) पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

परसर्ग - से (अलग होना)

कारक - अपादान

पाठ—9
विशेषण

ज़रा, बताइए तो

1. संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों

को विशेषण कहते हैं।

विशेषण के चार भेद होते हैं, 1. गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, 3. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण, 4. परिमाणवाचक विशेषण।

2. वे शब्द जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं जबकि जो विशेषण संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

3. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं जैसे—पहला, दूसरा।

जिन शब्दों से किसी वस्तु की माप-तौल का बोध कराने वाले विशेषणों का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—एक लीटर, सौ किलो, थोड़ा।

4. जहाँ क्रिया के साथ कर्म हो, वहाँ सकर्मक क्रिया होती है तथा जहाँ क्रिया के साथ कर्म न हो, वहाँ अकर्मक क्रिया होती है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) तालाब में पीले, नीले और गुलाबी कमल खिले हैं। —गुणवाचक विशेषण

(ख) तीन किलो सेब खरीदे।
—निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(ग) मुझे तीन सेब दे दो।
—निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(घ) मुझे कुछ रुपये दे दीजिए।
—अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ङ) दाल में चुटकी भर नमक डाल दीजिए।
—अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(च) कुरते में तीन मीटर कपड़ा लगता है।
—निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(छ) इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए।
—सार्वनामिक विशेषण

2. (क) सुरीला **(iii)** गला

(ख) हरी **(iv)** घास

(ग) कोई **(v)** व्यक्ति

(घ) इसकी **(vi)** माताजी

(ङ) थोड़ा **(ii)** दूध

(च) सात **(i)** रुपये

3. (क) **विशेषण** – यह, हरा
वाक्य—यह तोता हरे रंग का है।

(ख) **विशेषण** – लाल, मीठा
वाक्य—लाल सेब खाने में मीठा होता है।

(ग) **विशेषण** – फुर्तीला, तेज
वाक्य—फुर्तीला घोड़ा तेज दौड़ता है।

(घ) **विशेषण** – वह, थोड़ा
वाक्य—वह लड़का थोड़ा पानी पीता है।

4. (क) मैंने मीठे आम खरीदे।

(ख) उसने काले कपड़े पहने हैं।

(ग) हाथी बहुत बुद्धिमान होता है।

(घ) सीमा की आवाज बहुत मधुर है।

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

विशेषण	विशेष्य
लड़ाकू	विमान
काला	घोड़ा
छोटा	खेत
दयालु	महिला
वार्षिक	परीक्षा
कपटी	मित्र
देशी	घोड़ा

पाठ—10
क्रिया

ज़रा बताइए तो

1. जिन शब्दों से काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. जहाँ क्रिया के साथ कर्म होता है, ऐसी क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं।

3. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु से ही क्रिया शब्दों की रचना होती है।

आइए, अब लिखते हैं

1. वाक्य	**क्रिया शब्द**	**क्रिया भेद**
अनामिका खेलती है।	खेलती है	अकर्मक

मेरी कहानी कौन सुनेगा? सुनेगा अकर्मक

मैंने कल अपना पाठ याद किया?

याद किया सकर्मक

कल मैं अपना पाठ याद करूँगा।

याद करूँगा सकर्मक

मैं सो रहा हूँ। सो रहा हूँ अकर्मक

2. (क) खाना- मुकेश खाना खाता है।

(ख) लिखता - राम पत्र लिखता है।

(ग) जाऊँगा - मैं विद्यालय जाऊँगा।

(घ) उड़ा - राधा का छाता उड़ गया।

3. (क) बैठना (अकर्मक) — राम बैठा है।

बिठा रही है (सकर्मक) — माता बालक को जमीन पर बिठा रही है।

(ख) चलना (अकर्मक) — कुत्ता चल रहा है।

चलाना (सकर्मक) — मोहन साइकिल चलाता है।

(ग) भागना (अकर्मक)—चोर भाग गया।

भगाया (सर्कमक)—मैंने डंडा मारकर कुत्ते को भगाया।

(घ) करना (अकर्मक) — मैं करती हूँ।

किया (सकर्मक) — गीता ने अपना पाठ याद किया।

4. (क) आना **(iv)** आ

(ख) बोलना **(v)** बोल

(ग) जाना **(ii)** जा

(घ) घूमना **(vi)** घूम

(ङ) लिखना **(iii)** लिख

(च) गाया **(i)** गा

सोचो ज़रा सोचो

छात्र स्वयं करें

करके देखिए

(क) रोना

(ख) लिखना

(ग) पीना

पाठ—11
काल

ज़रा बताइए तो

1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

2. काल के तीन भेद होते हैं: 1. भविष्यत काल, 2. वर्तमान काल 3. भूतकाल

3. समय का मतलब काल होता है।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) वह खेल रहा था।

(ख) वह कल दिल्ली गया था।

(ग) नवनीत पुस्तक पढ़ता है।

(घ) मैं कल सर्कस देखूँगा।

(ङ) भाई कपड़े धोएगा।

(च) राहुल फल खरीदता है।

2. (क) भूतकाल

(ख) भूतकाल

(ग) भविष्य काल

(घ) भूतकाल

(ङ) भूतकाल

3. (क) आने वाला समय **(iv)** भविष्यत् काल

(ख) चल रहा समय **(iii)** वर्तमान काल

(ग) बीता हुआ समय **(ii)** भूतकाल

(घ) काल का मतलब **(i)** समय

सोचो ज़रा सोचो

1. कल - बीता हुआ समय

आज - वर्तमान समय

कल - आने वाला समय

2. छात्र स्वयं करें।

करके देखिए

1. (क) मोहन ने पढ़ा।

(ख) मोहन कहानी पढ़ता है।

(ग) मोहन कल कहानी पढ़ेगा।

पाठ—12
अविकारी शब्द

ज़रा बताइए तो

1. वे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन और काल के प्रभाव से कोई परिवर्तन न हो, अविकारी शब्द कहलाते हैं।

अविकारी शब्दों को अव्यय इसलिए कहा जाता है

क्योंकि इन शब्दों का कुछ भी व्यय (विकार) नहीं होता है, जैसे हैं। वैसे ही रहते हैं।

2. क्रिया का स्थान, काल (समय), रीति (तरीका) और परिमाण (मात्रा) बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—स्थानवाचक, कालवाचक, रीतिवाचक और परिमाणवाचक।

3. संबंध बोधक शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जोड़ते हैं और समुच्चयबोधक शब्द दो शब्द या दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं।

4. विस्मयादिबोधक मन के हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, प्रशंसा, भय, क्रोध आदि भावों को प्रकट करते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. **वाक्य** **क्रिया-विशेषण भेद**

मोर धीरे-धीरे नाच रहा है। **धीरे-धीरे रीतिवाचक**

मैं कल विद्यालय जाऊँगा। **कल कालवाचक**

हम लोग ऊपर खेल रहे हैं। **ऊपर स्थानवाचक**

मुझे खीर बिलकुल मत देना। **बिलकुल परिमाणवाचक**

2. (क) मथुरा <u>के पास</u> आगरा है।

(ख) मैं भाई <u>के साथ</u> नहीं खेलती।

(ग) मैं जुलूस <u>के पीछे</u> चल दिया।

(घ) हमें लक्ष्य पाने के लिए चींटी <u>की तरह</u> परिश्रम करना चाहिए।

3. (क) राम, सीता <u>और</u> लक्ष्मण वन को गए।

(ख) घर जाइए <u>और</u> पढ़ने बैठ जाइए।

(ग) तुम आते हो <u>या</u> नहीं।

(घ) खूब परिश्रम करो, <u>ताकि</u> अच्छे अंक आ सकें।

(ङ) मैं दौड़ कर गया <u>परंतु</u> बस नहीं पकड़ पाया।

4. (क) शाबाश! तुमने अच्छा काम किया।

(ख) बाप रे! इतना बड़ा दरवाज़ा।

(ग) छी:! पार्क में कितनी गंदगी है।

(घ) काश! मैं चंद्रमा पर जा पाता।

(ङ) हाय! सब जलकर राख हो गया।

5.

(क) पर	संबंधबोधक
(ख) जोर-जोर	रीतिवाचक
(ग) के कारण	संबंधबोधक
(घ) और	समुच्चयबोधक
(ङ) बाप रे बाप!	विस्मयादिबोधक

सोचो ज़रा सोचो

1. छात्र स्वयं करें।

2. राम-लक्ष्मण — राम <u>और</u> लक्ष्मण

सुबह-शाम — सुबह <u>और</u> शाम

करके देखिए

थोड़ा	लेकिन
कम	अंदर
ऊपर	आगे
किंतु	छि:
जो	या
मगर	बाहर
बहुत	सावधान

पाठ-13

विराम चिह्न

ज़रा बताइए तो

1. लिखित भाषा में विराम को प्रदर्शित करने वाले चिह्न विराम चिह्न कहलाते हैं।

2. योजक चिह्न (-) दो शब्दों के बीच संबंध बताने के लिए लगाया जाता है।

आइये अब लिखते हैं

1. 1. (क) ✓ 2. (ख) ✓

3. (ग) ✗ 4. (घ) ✓

2.

(क) ;	(iii) अद्‌र्धविराम
(ख) ?	(v) प्रश्नवाचक चिह्न
(ग) ।	(i) पूर्ण विराम
(घ) !	(vi) विस्मयादिबोधक चिह्न
(ठ) " "	(viii) उद्‌धरण चिह्न
(च) -	(vii) योजक चिह्न
(छ) .	(ii) लाघव चिह्न
(ज) ,	(iv) अल्पविराम

3. नीम, -"अरे भाई पीपल! तुम आज इतने मुरझाए

से क्यों लग रहे हो?" पीपल- "क्या करूँ? पर्यावरण असंतुलन के कारण गर्मी बहुत पड़ रही है, बारिश कम हो रही है।" नीम-"हाल तो मेरा भी कुछ ऐसा ही है। सुना है, बाहर के रास्ते पर होटल बन रहा है। सभी छोटे-बड़े पेड़ों को काट दिया जाएगा।" पीपल-"अरे! यह ठीक नहीं है। जाओ, उन्हें पेड़ काटने से रोको।" इतने में पास ही रेडियो पर कोई कह रहा है कि हरियाली है जहाँ समृद्धि है वहाँ।

4. (क) आप कहाँ से आए हैं?

(ख) सुबह उठकर, अपने माता-पिता को प्रणाम करो।

(ग) दीपावली हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है।

(घ) पूजा, बबली और रेनू सहेलियाँ हैं।

(ङ) वाह ! कितना स्वादिष्ट भोजन है।

सोचो ज़रा सोचो

1. ट्रैफिक लाइट और ट्रैफिक पुलिस के द्वारा।

2. बोलते समय थोड़ा रुककर और किसी कार्यक्रम के बीच में विज्ञापन दिखाकर।

करके दिखाइए

एक समय की बात है। एक घने जंगल में एक बारहसिंगा रहता था। वह बहुत घमंडी था। एक बार वह जंगल के तालाब में पानी पी रहा था। पानी पीते समय उसने अपनी परछाई तालाब के पानी में देखी। वह अपने सुन्दर सींगों को देखकर बहुत खुश हुआ, परंतु अपनी पतली टाँगों को देखकर वह बहुत दु:खी हुआ और वह टाँगों को कोसने लगा। एक दिन कुछ शिकारी उस जंगल में आ गए। उन्होंने जब उस बारहसिंगा को देखा तो उन्होंने उसके पीछे शिकारी कुत्ते दौड़ा दिए। उन्हें अपने पीछे आता देखकर वह तेज दौड़ने लगा। आज उसकी पतली टाँगें ही उसे उन कुत्तों से बचा रही थीं। भागते-भागते अचानक उसके सींग एक पेड़ की टहनियों में फँस गए। उसने अपने सींगों को बाहर निकालने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह कामयाब नहीं हुआ। तब तक शिकारी कुत्तों ने पास आकर उसे मार दिया। वह मरते समय सोचता रहा, "जिन सुंदर सींगों पर मुझे घमंड था, उन्होंने ही मुझे मृत्यु के मुख में ढकेल दिया।"

पाठ - 14

शब्द भंडार

ज़रा बताइए तो

1. मिलते-जुलते अर्थ देने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. विलोम शब्दों को विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।

3. वे शब्द जो बोलने और सुनने में समान लगते हैं किन्तु अर्थ की दृष्टि से अलग होते हैं, उन्हें श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है।

1. एक से अधिक अर्थ वाले शब्दों को अनेकार्थी कहते हैं।

(ङ) अंधा

आइए, अब लिखते हैं

1. राजा - नृप, भूपति

औरत - महिला, नारी

हाथी - गज, कुंजर

कमल - नीरज, पंकज

2. (क) जय - पराजय

(ख) प्रेम - घृणा

(ग) मान - अपमान

(घ) न्याय - अन्याय

3. अंबर - आकाश - अंबर में अनेक तारे झिलमिला रहे हैं।

कपड़ा - श्रीकृष्ण पीतांबर धारण करते हैं।

फल - फल (खाने वाला) - आम फलों का राजा कहलाता है।

परिणाम - कल पाँचवीं के छात्रों का परीक्षाफल (परिणाम) आने वाला है।

तीर - किनारा - यमुना के तीर पर कृष्ण बाँसुरी बजाया करते थे।

बाण - राजा के तीर से घायल पक्षी ज़मीन पर गिर पड़ा।

रस - आनंद - पुराने गानों को सुनने में आनंद (रस) आता है।

खाने का स्वाद - कोई नया मसाला डाला है शायद तभी खाने में रस (स्वाद) आ रहा है।

4. (क) कुल
(ख) और
(ग) परिमाण
(घ) उपयुक्त

5. (क) जो कठिनाई से मिले (iv) दुर्लभ
(ख) जो अपने देश का हो (iii) स्वदेशी
(ग) जिसका भाग्य अच्छा न हो (v) भाग्यहीन
(घ) जिसे गिना न जा सके (i) अनगिनत
(ङ) जो बहुत बोलता हो (ii) वाचाल

सोचो ज़रा सोचो

1. पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुति भिन्नार्थक तथा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द जैसे शब्द-समूहों को शब्द भण्डार में इकट्ठा करके रखा जाता है।

2. मिलते-जुलते अर्थ देने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं जब एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्द अनेकार्थी कहलाते हैं।

करके देखिए

ऊपर से नीचे	दायें से बायें
(1) गजानन	(1) गंदगी
(2) नहीं	(2) नवीन
(3) खतरनाक	(3) खग
(4) कार्य	(4) कर

पाठ-15

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

ज़रा बताइए तो

1. जो वाक्यांश साधारण अर्थ न देकर विशिष्ट अर्थ प्रकट करते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

2. जब कोई वाक्य स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होकर साधारण अर्थ न देकर विशेष अर्थ देता है तो उसे लोकोक्ति या कहावत कहते हैं।

3. मुहावरे वाक्यांश होते हैं तथा लोकोक्तियाँ अपने आप में पूरी और वाक्य के समानान्तर होती हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) बहुत तेज दौड़ना
(ख) बहुत साहस करना
(ग) आश्चर्यचकित होना, हैरान होना
(घ) शोर मचाना
(ङ) गायब हो जाना

2. (क) परीक्षा में प्रथम आने के लिए अर्पिता ने रात-दिन एक कर दिया।
(ख) माँ बहुत बीमार थी पर बेटे ने उसके इलाज में आकाश-पाताल एक कर दिया।
(ग) भूख लगने के कारण मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।
(घ) सिम्मी के विचार हर समय बदलते रहते हैं; वह अपनी अक्ल के घोड़े दौड़ाती रहती है।

3. (क) आ बैल मुझे मार—स्वयं मुसीबत बुलाना।
(ख) एक पंथ दो काज—एक काम करते समय दूसरा काम भी हो जाना।
(ग) ऊँट के मुँह में जीरा—बहुत परिश्रम करने के बाद नाममात्र का लाभ मिलना।
(घ) खोदा पहाड़ निकली चुहिया—आवश्यकता से कम मिलना।

4. (क) सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली
(ख) ओखली में सिर देना
(ग) एक अनार सौ बीमार
(घ) चिराग तले अंधेरा
(ङ) आम के आम गुठलियों के दाम

करके देखिए

छात्र स्वयं करें

पाठ-16

अपठित गद्यांश

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) समय का मूल्य समझने वाले ही जीवन में सफल होते हैं और उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं।
(ख) समय का सही नियोजन न कर पाने के कारण कुछ लोग समय का सदुपयोग नहीं कर पाते हैं।
(ग) नहीं, समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है।
(घ) संसार की सबसे अनमोल वस्तु समय है।
(ङ) समय

2. 1. (क) पुस्तकें
2. (घ) ये सभी

3. (ख) सामान्य मित्र

4. (ग) पुस्तकों का

5. (ख) स्त्रीलिंग, बहुवचन

पाठ-17

संवाद लेखन

आइए, अब लिखते हैं

1. आरव—कहो मित्र, आज सुबह ही सुबह कहाँ जा रहे हो?

समीर—मित्र, मैं पास ही के खेल-मैदान में जा रहा हूँ।

आरव—क्या आज वहाँ कोई खेल हो रहा है?

समीर—हाँ, आज वहाँ कबड्डी का खेल हो रहा है।

आरव—क्या तुम भी कबड्डी खेलते हो?

समीर—हाँ मैं भी खेलता हूँ, उसी में भाग लेने जा रहा हूँ। आओ, तुम भी साथ चलो।

आरव—हाँ-हाँ, क्यों नहीं, मैं दर्शकदीर्घा में बैठकर तुम्हारा और तुम्हारी टीम का उत्साहवर्धन भी करूँगा।

समीर—कबड्डी खेलने से शरीर स्वस्थ और तंदुरुस्त रहता है। मेरा मानना है, तुम्हें भी कबड्डी अवश्य खेलनी चाहिए।

आरव—हाँ, तुम ठीक कहते हो। आज के इस खेल के बाद तुम मुझे भी अपनी टीम में शामिल कर लेना और इस खेल से जुड़े सभी नियम भी समझाना।

समीर—अवश्य मित्र, तुम्हारा हमारी टीम में स्वागत हैं। अभी चलें, मैदान में पहुँचने में कहीं देर न हो जाए।

2. चिराग—स्नेह, आज तुम्हारी कक्षा में इतना शोर क्यों आ रहा था?

स्नेहा—भैया, आज हमारी कक्षाध्यापिका ने विद्यालय में होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता के विषय में जानकारी दी थी।

चिराग—तो इसमें इतना शोर करने वाली क्या बात है?

स्नेहा—अरे भैया! उन्होंने हम सभी से वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए विषयों पर सुझाव माँगा था।

चिराग—तो, क्या सुझाव दिए तुम लोगों ने।

स्नेहा—मैंने प्रदूषण की समस्या पर, किसी ने विज्ञान के लाभ-हानि, मोबाइल फोन आदि अनेक विषय पर सुझाव दिए।

चिराग—फिर, तुम्हारी कक्षाध्यापिका को कौन-सा विषय पसंद आया?

स्नेहा—उन्हें 'मोबाइल फोन' वाला विषय अधिक सटीक लगा इस प्रतियोगिता के लिए।

चिराग—तुम इसमें पक्ष या विपक्ष किस ओर रहोगी?

स्नेहा—भैया मैं तो विपक्ष में रहूँगी।

चिराग—बहुत अच्छी बात, अच्छे से और प्रभावी ढंग से अपनी तैयारी करना और प्रतियोगिता जीतना।

स्नेहा—जी भैया।

3. (क) **चन्द्रयान-3 के विषय में शिक्षक और छात्र के बीच संवाद**

शिक्षक—मोहन क्या तुम्हें पता है कि हमारे देश भारत ने चन्द्रयान-3 को सफलतापूर्वक लाँच कर लिया है।

मोहन—जी सर! मुझे पता है।

शिक्षक—बहुत अच्छा, तो क्या तुम मुझे बता सकते हो कि भारत ने यह कारनामा कब कर दिखाया?

मोहन—सर, भारत के वैज्ञानिकों की टीम ने चन्द्रयान-3 को 14 जुलाई 2023 के दिन शुक्रवार को 2 बजकर 30 मिनट पर लाँच किया था।

शिक्षक—बहुत खूब, पर क्या तुम जानते हो कि इस चन्द्रयान-3 में एक लैंडर और एक रोवर है।

मोहन—जी सर! मैं जानता हूँ, इसमें लैंडर और रोवर हैं।

शिक्षक—क्या तुम मुझे चन्द्रयान-3 का लक्ष्य बता सकते हो?

मोहन—इसका लक्ष्य है, लैंडर और रोवर को चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारना है।

शिक्षक—मोहन मुझे तुम पर गर्व है। तुम्हें चन्द्रयान-3 के संबंध में पूरी जानकारी है। शाबाश, ऐसे ही हर क्षेत्र से संबंधित ज्ञान प्राप्त करते रहो।

मोहन—धन्यवाद सर!

(ख) **मरीज और डॉक्टर के बीच संवाद**

मरीज—नमस्कार, डॉक्टर साहब!

डॉक्टर—नमस्कार, कहिए क्या समस्या है?

मरीज—डॉ. साहब, मुझे कल रात से बुखार आ गया है।

डॉक्टर—बुखार के साथ-साथ ठण्ड भी महसूस हो रही है, क्या है?

मरीज—जी, हल्की-सी सर्दी भी लग रही है और साथ में बदन दर्द भी हो रहा है।

डॉक्टर—इसके अतिरिक्त कोई अन्य भी समस्या है, क्या?

मरीज—नहीं, बस कँपकँपी के साथ बुखार और बदन दर्द ही है।

डॉक्टर—ये लक्षण तो मलेरिया के लग रहे हैं। मैं कुछ दवाइयों के साथ खून की जाँच भी लिख रहा हूँ। जाँच करा कर मुझे रिपोर्ट दिखा देना, फिर उसी के आधार पर आगे की दवाइयाँ दूँगा।

मरीज—ठीक है, डॉ. साहब आप लिख दीजिए, मैं कल जाँच करवाकर आपको रिपोर्ट दिखा दूँगा।

डॉक्टर—यह लो पर्चा, बाहर से दवा ले लो।

मरीज—धन्यवाद डॉ. साहब।

(ग) **परीक्षा कक्षा के बाहर दो छात्रों के बीच संवाद**

सीता— अरे विजया, सारी तैयारी हो गई आज की परीक्षा की?

विजया— हाँ, हो गई, और मैंने अपना हिन्दी का पूरा पाठ्यक्रम भी दोहरा लिया। तुम बताओ तुम्हारी तैयारी कैसी है?

सीता— तैयारी तो मेरी भी हो गई, बस जीवनी में कवि और लेखकों की जन्मतिथियों को लेकर थोड़ा असमंजस है?

विजया— कैसा असमंजस है, अब सब अच्छे से दोहरा लिया तो डर कैसा?

सीता— दोहरा तो सब लिया बस प्रेमचन्द और बाबू गुलाब राय इन दोनों की ही जन्म- तिथियाँ याद नहीं आ रही हैं। क्या तुम इसमें मेरी सहायता कर सकती हो?

विजया— हाँ, अवश्य, प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था और बाबू गुलाब राय का जन्म 17 जनवरी 1880 को उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में हुआ था।

सीता— ओह! तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद विजया, तुमने तो परीक्षा से ठीक पहले मेरी सारी दुविधा ही मिटा दी।

विजया— अच्छा, अब चलो भी परीक्षा शुरू होने वाली है। गुडलक।

सीता— धन्यवाद, गुडलक तुम्हें भी।

करके देखिए

माता से पुत्री का संवाद

माँ— सारिका, देख रही हूँ, तुम जब से स्कूल से आई हो किसी सोच में डूबी हुई हो, क्या तुम्हारे विद्यालय में सब ठीक है?

सारिका— जी माँ, विद्यालय में सब ठीक है।

माँ— जब, सब ठीक है तो इतनी परेशान क्यों लग रही हो?

सारिका— माँ, आज कक्षा में हम सब सहेलियाँ अपनी आगे की कक्षा में लेने वाले विषय पर चर्चा कर रहे थे।

माँ— कैसी चर्चा?

सारिका— यही कि हमें किस वर्ग को चुनना है, कला, वाणिज्य या विज्ञान?

माँ— अच्छा, तो तुम किस वर्ग में जाना चाहती हो?

सारिका— माँ, मैं सोच रही हूँ कि मैं आगे की कक्षा में कला वर्ग के विषय चुनूँ। परन्तु?

माँ— परन्तु क्या सारिका?

सारिका— माँ, मैं इतिहास और अर्थशास्त्र विषय को लेकर दुविधा में हूँ?

माँ— इसमें दुविधा वाली क्या बात है, जिस विषय में तुम्हें अधिक रुचि हो, वह ले लेना?

सारिका— माँ, मेरी रुचि तो इतिहास में है किन्तु मेरी सहेली अर्थशास्त्र लेना चाहती है। इसलिए मैं भी अर्थशास्त्र लेने की सोच रही हूँ।

माँ— लेकिन यह तो गलत निर्णय होगा, यदि तुम अपनी पसंद का विषय न लेकर अपनी सहेली की रुचि को ध्यान में रखकर विषय चुनोगी, तो न तुम मन लगाकर उस विषय को तैयार कर पाओगी और न ही परीक्षा में उस विषय में अच्छे अंक प्राप्त कर सकोगी। बेटा, तुम्हारा भविष्य तुम्हारी रुचि पर

निर्भर करता है न कि सहेली की रुचि पर।

सारिका— धन्यवाद माँ, आपने तो मेरी सारी दुविधा ही मिटा दी। अब मैं इतिहास को ही विषय के रूप में चुनूँगी।

पाठ-18

पत्र लेखन

ज़रा, अब लिखते हैं

1. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

सिटी मांटेसरी स्कूल,

लखनऊ

दिनांक - .....

विषय—पीने के पानी की उचित व्यवस्था न होने पर पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में पिछले कुछ दिनों से पीने के साफ पानी की व्यवस्था नहीं हो रही है। बारिश के कारण पानी की टंकी के आसपास बहुत गंदगी और काई जमा हो गई है। पानी की टंकी के अन्दर भी काई जमा हो जाने के कारण पानी बहुत गंदा आ रहा है और उस पानी में महीन-महीन काई भी आने लगी है। टंकी और उसके आसपास की जगह की उचित सफाई न होने के कारण छात्रों को टंकी का यही गंदा पानी पीने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यद्यपि हम अपने घरों से पानी की बोतलें लाते हैं किन्तु उतना पानी पर्याप्त नहीं होता। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि जल्दी से जल्दी पानी की टंकी की सफाई करवाकर, पीने के पानी के उचित व्यवस्था करें। हम सभी छात्र आपके अति आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

मनोज अग्रवाल

कक्षा-IV ब

2. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

संत बिनोवा पब्लिक स्कूल

आगरा।

विषय—शुल्क माफी के लिए प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा पाँच का छात्र हूँ। श्रीमानजी, मैंने पिछली सभी कक्षाएँ बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की हैं। मैं एक अति निर्धन छात्र हूँ। मेरे पिताजी एक साधारण किसान हैं। इस वर्ष फसल अच्छी न हो पाने के कारण वह मेरे विद्यालय का शुल्क जमा कर पाने में असमर्थ हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है, कृपया आप मेरा इस वर्ष का विद्यालय शुल्क माफ कर दें, जिससे मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी अति कृपा होगी

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

विजय श्रीवास्तव

कक्षा-V अ

3. सेवा में,

प्रधानचार्य महोदय,

बाल भारती विद्यालय

कानपुर (उ. प्र.)

विषय—स्थानांतरण प्रमाण पत्र हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा V-ब का छा1त्र हूँ। मेरे पिताजी वायु सेना में हैं और उनका स्थानांतरण यहाँ से आगरा हो गया है। अत: हमें पूरे परिवार के साथ आगरा स्थानांतरित होना पड़ रहा है। आगरा के ही एक विद्यालय में मेरे पिताजी ने मेरा दाखिला कराना सुनिश्चित किया है। वहाँ के विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए मुझे स्थानांतरण प्रमाण पत्र की आवश्यकता है।

अत: मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे स्थानांतरण प्रमाण पत्र प्रदान करें, जिससे मैं वहाँ दाखिला प्राप्त कर सकूँ। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

ब्रजेश पाठक

कक्षा-V अ

4. सेवा में,

सहायक अभियन्ता

बी. एस. ई. एस.

राजधानी पावर लिमिटेड,

लखनऊ (उ. प्र.)

दिनांक .....

विषय—बिजली की अनियमित आपूर्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र में बार-बार बिजली जाने की समस्या की ओर दिलाना चाहता हूँ। आजकल हमारी परीक्षाएँ चल रही हैं। ऐसी स्थिति में बार-बार बिजली जाने से छात्रों को पढ़ाई करने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बार-बार बिजली जाने से पढ़ाई में रुकावट आती है। जिसका प्रभाव हमारे परीक्षा परिणाम पर भी पड़ेगा।

अत: आपसे अनुरोध है कि हम छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए हमारे क्षेत्र में बिजली की नियमित आपूर्ति की व्यवस्था करवाने का कष्ट करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद

भवदीय

राकेश शर्मा

5. 43 शांति नगर,

नई दिल्ली

दिनांक .....

प्रिय मोहित

कल तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि तुमने जिला निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी बचपन से ही लेखन में रुचि थी। तुमने प्रथम आकर अपनी प्रतिभा और गुणों का परिचय दिया है। यह सम्मान वास्तव में गौरव का विषय है। तुम्हारे प्रथम आने पर मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही है। मुझे तुम जैसे प्रतिभाशाली मित्र पर बहुत गर्व है। इस सफलता की तुमको हार्दिक बधाई, ईश्वर करे तुम ऐसे ही अन्य सभी प्रतियोगिताओं में भी प्रथम स्थान प्राप्त करो।

तुम्हारा प्रिय

शरद कुमार

6. 108, गांधी आश्रम

शिवपुरी

दिनांक .....

आदरणीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श!

मैं यहाँ पर सकुशल हूँ, आशा करता हूँ आप सब भी वहाँ पूरी तरह कुशल होंगे। मेरी परीक्षा निकट आ रही है, मैंने समय से अपनी तैयारी शुरू कर दी थीं। अत: सभी विषयों का अध्ययन अच्छी तरह से हो गया है। थोड़ी सी कठिनाई गणित विषय में हुई थी किन्तु मैंने पुस्तकालय से पुस्तक लेकर व गणित के अध्यापक से अतिरिक्त कक्षा लेकर, उसमें भी कुशलतापूर्वक अपना अध्ययन पूर्ण कर लिया है। अब मुझे चिन्ता नहीं है। विश्वास है कि विगत वर्षों की ही तरह इस वर्ष भी प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करने में सफल रहूँगा।

आप चिंता न करें। परीक्षा समाप्त होते ही आपको अगला पत्र लिखूँगा। पूज्य माताजी को प्रणाम।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

गौरव

7. बाल भवन

मनीतिया-नगर

गोरखपुर (उ. प्र.)

दिनांक .....

प्रिय मित्र रविश,

आशा करता हूँ तुम सपरिवार कुशल होगे। मित्र 20 मई से हमारे विद्यालय में गर्मियों की छुट्टियाँ प्रारम्भ हो रही हैं। शायद, आपका भी विद्यालय इसी समय बंद रहेगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस वर्ष यह छुट्टियाँ तुम मेरे साथ बिताओ। हम साथ मिलकर दिल्ली घूमेंगे और खूब मजे करेंगे। दिल्ली में बहुत-सी ऐतिहासिक इमारतें और पर्यटक स्थल हैं। तुम्हें भी वहाँ खूब आनंद आएगा। तुम अपने माता-पिता से विचार-विमर्श करके शीघ्र ही अपने आने की सूचना देना।

तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र

रजनीश सिंह

8. 95, रामकृष्णपुरम

ब्लॉक 'ब' कानपुर

दिनांक .....

प्रिय शरद,

सस्नेह नमस्कार

तुम्हें यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई कमलपाल का शुभ विवाह दिनांक 11 अप्रैल 20_ _ को होना निश्चित हुआ है। तुम्हें इस विवाहोत्सव में सपरिवार अवश्य सम्मिलित होना है। बारात निज निवास से बरेली जाएगी। तुम घर से निकलने से पहले मुझे फोन से सूचित कर देना। मैं रेलवे स्टेशन पर ही तुम्हें लेने आ जाऊँगा। अपने माता-पिताजी को मेरा नमस्कार कहना। शेष मिलने पर।

तुम्हारा मित्र

रंजीत पाल

पाठ-19

कहानी लेखन

कौआ और गिलहरी

आइए, अब लिखते हैं

1. जंगल में नीम का पेड़ था। उस पेड़ पर एक गिलहरी और कौआ रहते थे। एक दिन गिलहरी ने कहा-"कौआ भैया, क्यों ना हम भी खेती करके कुछ अनाज इकट्ठा कर लें।" गिलहरी की बात सुनकर कौआ बोला- "ठीक है, कल से काम शुरू करते हैं। पहले खेतों की जुताई करनी पड़ेगी।" गिलहरी ने कहा- "हाँ, कौआ भैया हम सुबह जल्दी उठकर अगर खेतों पर पहुँच जाएँगे तो शाम तक खेतों की जुताई हो जाएगी, फिर अगले दिन हम बीज बो देंगे। अगले दिन गिलहरी कौए को खेत जोतने के लिए बुलाने गई, लेकिन कौए ने बीमारी का बहाना बना दिया। गिलहरी ने अकेले ही पूरा खेत जोता। कौआ रोज नया बहाना बना देता, जिससे उसे खेत में कोई काम न करना पड़े। बेचारी गिलहरी ने अकेले ही पूरा खेत जोता, बीज बोए, पानी दिया। आलसी कौआ बस बैठा ही रहता था। जब फसल पककर तैयार हो गई तब भी परिश्रमी गिलहरी ने अकेले ही पूरी फसल काटी। गिलहरी ने ईमानदारी से फसल के दो भाग किए। गिलहरी ने अपने हिस्से का अनाज उठाकर सम्भालकर रख लिया। कौआ अपने आलस के कारण रोज 'कल रख लूँगा' यही सोचता रहता। एक दिन बहुत जोर की बारिश हुई। इस बारिश में कौए का पूरा अनाज बह गया और आलसी कौआ पछताता रह गया।

(2) ईमानदार लकड़हारा

एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह बहुत गरीब किन्तु बहुत ईमानदार भी था। एक दिन वह लकड़हारा एक नदी के किनारे लकड़ी काट रहा था। लकड़ी काटते समय उसकी कुल्हाड़ी, उसके हाथ से छूटकर नदी में जा गिरी। ऐसा होने पर वह लकड़हारा जोर-जोर से रोने लगा तो उसका रोना सुनकर नदी से जल-देवता बाहर आए। जल देवता

ने लकड़हारे से रोने का कारण पूछा। लकड़हारे ने उन्हें पूरी घटना बताई। लकड़हारे की बात सुनकर जल देवता ने नदी में डुबकी लगाई और हाथों में एक सोने की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आए। उन्होंने लकड़हारे से पूछा, क्या यह कुल्हाड़ी तुम्हारी है? सोने की कुल्हाड़ी देखकर उस लकड़हारे ने कहा– "हे देव! यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है। जल देवता ने वापस नदी में डुबकी लगाई। इस बार वह चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर आए। उन्होंने फिर वही प्रश्न लकड़हारे से पूछा। लकड़हारे ने इस बार भी यह कहकर मना कर दिया कि यह उसकी कुल्हाड़ी नहीं है। जल देवता ने तीसरी बार नदी में डुबकी लगाई। इस बार वह लकड़हारे की लोहे की कुल्हाड़ी लेकर बाहर निकले। लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी देखकर खुश हो गया। उसने जल देवता से कहा- यही उसकी कुल्हाड़ी है। जल देवता उसकी ईमानदारी से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने लकड़हारे को उसकी कुल्हाड़ी के साथ सोने और चाँदी की भी कुल्हाड़ी दे दी। लकड़हारा तीनों कुल्हाड़ी पाकर अपनी ईमानदारी के बल पर अमीर बन गया।

पाठ-20

अनुच्छेद लेखन

(क) मेरे आदर्श अध्यापक/अध्यापिका

मेरे आदर्श अध्यापक हमारे हिन्दी के शिक्षक श्री. एस. के. मिश्रा जी हैं। उन्हें अपने विद्यार्थियों से बहुत प्यार है। विद्यार्थी भी उनका साथ पाकर खुश होते हैं। उनके गुणों ने ही उन्हें अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है। वह सादा जीवन और उच्च विचारों में विश्वास करते हैं। वह हमेशा स्वच्छ और साफ कपड़े पहनते हैं। उनका शरीर स्वस्थ और सुडौल है। उनका शिष्टाचार मनभावन है। अपने विद्यार्थियों के प्रति उनका दृष्टिकोण हमेशा सहानुभूतिपूर्ण होता है। श्री. एस. के. मिश्रा अपने विद्यार्थियों के अच्छे मित्र और मार्गदर्शक हैं। वह अपने शिक्षण कार्य को अत्यधिक रोचक बना देते हैं। हिन्दी व्याकरण को वह बहुत आसान तरीके से सिखाते हैं, जिससे कमजोर विद्यार्थी भी आसानी से समझ जाते हैं। उनमें अपने कर्त्तव्य की गहरी समझ है। वह अपनी कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में सक्षम हैं। वे बहुत अच्छे लेखक और कवि हैं। विद्यालय के अन्य अध्यापक भी उनका बहुत सम्मान करते हैं। मुझे अपने प्रिय अध्यापक पर बहुत गर्व है। वह मेरे आदर्श अध्यापक हैं।

(ख) स्वच्छता अभियान

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। इस अभियान की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा की गई थी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने के लिए जागरूकता फैलाना था। इस अभियान के तहत लोगों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है और उन्हें अपने घरों, स्कूलों और सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अंतर्गत शौचालय निर्माण, स्वच्छता अभियान और जन-जागरूकता अभियान आयोजित किए जाते हैं। स्वच्छता अभियान के माध्यम से स्वच्छता को सुनिश्चित करने के साथ-साथ जल, हवा और भूमि की रक्षा भी होती है। यह अभियान भारत के स्वास्थ्य और पर्यावरण को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह अभियान न केवल स्वच्छता को बढावा दे रहा है, बल्कि भारत को स्वस्थ और स्वच्छ भविष्य की ओर अग्रसर कर रहा है।

(ग) वृक्षारोपण

वृक्ष प्रकृति की अनुपम देन हैं। ये पृथ्वी और मनुष्य के लिए वरदान हैं। मनुष्य को ईश्वर की सबसे विशिष्ट भेंट हैं। ये पृथ्वी और देश की सुंदरता बढ़ाते हैं। वृक्ष लगाना और उसे पूजना, उसकी सुरक्षा करने की महत्ता प्राचीनकाल से चली आ रही है। पुराणों के अनुसार एक वृक्ष लगाने का उतना ही पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों के सुयश से। वर्तमान में हम वृक्षों के महत्व को भूलते जा रहे हैं। वृक्षों को अंधाधुंध काटा जा रहा है। इसका सबसे बुरा प्रभाव यह हो रहा है कि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। वनों से मिलने वाले लाभ कम होते जा रहे हैं। वनों के अभाव में अनेक लोगों की रोजी-रोटी भी समाप्त हो गई है। वृक्ष भूमि का कटाव रोकने में सहायक होते हैं और नदियों की गति को भी नियंत्रित करते हैं। वृक्ष ही भूमि की उपजाऊ क्षमता को बनाए रखते हैं। वृक्ष

वायु को शुद्ध करते हैं। वर्षा कराने में सहायक होते हैं। प्रदूषण दूर करके शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। यदि मानव जाति को बचाना है तो वृक्षों को लगाना होगा। अधिक से अधिक मात्रा में वृक्षारोपण करना होगा। वृक्षारोपण का अर्थ केवल वृक्ष लगाना ही नहीं है अपितु उनकी उचित देखभाल करना भी है।

(घ) नई शिक्षा नीति

राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के लिए 34 वर्षों के बाद जुलाई 2020 में हमारी केन्द्रीय सरकार द्वारा एक नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी गई। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों की सोच और रचनात्मक क्षमता को बढ़ाकर सीखने की प्रक्रिया को और अधिक कुशल बनाना है। 29 जुलाई 2020 को कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में यह नई शिक्षा नीति बनाई गई। इसके अन्तर्गत पुस्तकों का बोझ बढ़ाने के बजाय व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ाने पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया है। यह नीति 10 + 2 सिस्टम को 5 + 3 + 3 + 4 के सिस्टम में बदल देता है, जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की प्री-स्कूलिंग होती है। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य एक बच्चे को कुशल बनाने के साथ-साथ जिस क्षेत्र में वह रुचि रखता है, उसी क्षेत्र में उसे प्रशिक्षित करना है। नई शिक्षा नीति में शिक्षक की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रक्रियाओं के सुधार पर भी जोर दिया गया है। नई शिक्षा नीति बच्चों के समग्र विकास पर केन्द्रित है।

(ङ) कोविड-19 की स्मृति

कोविड-19 महामारी एक घातक महामारी थी, जिसने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। महामारी के कारण बहुत से लोगों की जान चली गई और न जाने कितनों का रोजगार छूट गया। कईयों का पूरा परिवार ही समाप्त हो गया। कई कोविड योद्धाओं जैसे— डॉक्टर, नर्स, फ्रंटलाइन कार्यकर्त्ताओं ने महामारी के कारण अपनी जान गंवा दी। संक्रमित लोगों को उनके परिवार से अलग कर दिया गया। इसके भयंकर रूप को देखते हुए सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाए। लोगों की सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रोटोकॉल लागू किए गए। सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया गया। कन्टेनमेंट जोन घोषित कर दिए जाने के कारण लोगों का जीवन घर की चाहरदीवारी में सिमटकर रह गया। लॉकडाउन ने जहाँ लोगों को घर में बंद कर दिया वहीं स्वयं के व परिवार के बारे में सोचने का भी मौका दिया। लॉकडाउन के दौरान-प्रदूषण का स्तर भी कम हुआ। हालांकि इसके कारण बहुत-सी हानियाँ भी हुईं। कोविड के कारण देश की अर्थव्यवस्था को गम्भीर नुकसान हुआ। कोविड-19 ने न केवल लोगों को शारीरिक अपितु मानसिक रूप से भी बीमार कर दिया। इसने बच्चों की आँखों की रोशनी पर प्रभाव डाला। लोग मोबाइल फोन और टी. वी. के आदी हो गए थे। बच्चों की पढ़ाई का नुकसान हुआ। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस प्रकार की फिर कोई महामारी का सामना हमें भविष्य में न करना पड़े।

(च) ऑनलाइन कक्षा

ऑनलाइन कक्षा छात्रों के लिए स्कूल जाए बिन इंटरनेट के माध्यम से सीखने का एक सुविधाजनक तरीका है। पिछले कुछ वर्षों से छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा एक तेजी से लोकप्रिय विकल्प बन गया है। इसके सीखने का एक सुविधाजनक और सबसे अच्छा तरीका प्रदान किया है। यह सभी उम्र के व्यक्तियों को प्रभावी ढंग से सीखने के अवसर उपलब्ध कराती है। ऑनलाइन शिक्षा को ई-लर्निंग के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय में कोई भी छात्र इंटरनेट के माध्यम से किसी-भी स्थान से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकता है। ऑनलाइन क्लासेज कम्प्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल फोन की मदद से ली जाती है। ऑनलाइन शिक्षा उन व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हैं जिनकी अन्य प्रतिबद्धताएँ हैं जैसे- अंशकालिक नौकरियाँ या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ। यह एक सस्ता और अधिक सुविधाजनक तरीका है। ऑनलाइन शिक्षण एक अनुकूलित शिक्षण अनुभव प्रदान करता है। ऑनलाइन शिक्षा में कुछ समस्याएँ भी आती हैं जैसे- शिक्षक और छात्रों के मध्य वार्तालाप, प्रश्नोत्तर, सहपाठियों के साथ ग्रुप डिस्कसन, आत्म-अनुशासित होने और समय की प्रतिबद्धता आदि।

(छ) रास्ते में बाइक का खराब होना

एक दिन मैं अपने पिताजी और माताजी के साथ अपने नानाजी के गाँव से लौट रहा था। पिताजी अपनी बाइक पर लेकर हमें शाम को लेकर घर के लिए निकल पड़े। मेरे नानाजी का गाँव बहुत दूरी पर है और बीच का रास्ता बहुत शांत और सुनसान पड़ता है। इन रास्ते पर अकसर लूट का डर बना रहता है। इसी डर के साथ पिताजी बाइक चला रहे थे कि अचानक एक तेज झटके के साथ बाइक बंद हो गई। बाइक पर पीछे बैठी माताजी गिरने से बाल-बाल बचीं। पिताजी ने बाइक से नीचे उतरकर पूरा चेक किया, पर कुछ समझ नहीं आया। उन्होंने बाइक को स्टार्ट करने की बहुत कोशिश की, परंतु बाइक चालू ही नहीं हो रही थी। इधर हल्की-हल्की बूँदाबाँदी भी शुरू हो चुकी थी। मुझे और माताजी को खराब बाइक और सुनसान रास्ते को देखकर डर लग रहा था। अंत में पिताजी ने हारकर बाइक को धकेलते हुए घर ले जाने का निश्चय किया। उन्होंने मुझे बाइक पर बिठाया और खुद उसे धकेलते हुए चलाने लगे। माताजी उन्हीं के साथ पैदल चल रही थीं। कुछ दूर चलने पर पीछे से एक ट्रैक्टर के आने की आवाज आई। यह ट्रैक्टर नानाजी के गाँव से आ रहा था। उन्होंने रुककर पिताजी से समस्या पूछी और फिर हमारी बाइक को अपने ट्रैक्टर पर रख कर हमें मैकेनिक की दुकान तक छोड़ दिया। जहाँ से हम अपनी बाइक ठीक करवाकर घर पहुँचे।

(ज) परीक्षा का पहला दिन

परीक्षा वह शब्द है जिसे सुनकर अच्छे-अच्छे के माथे पर पसीना आ जाता है। जैसे-जैसे परीक्षा का पहला दिन पास आता है, यह डर और भी बढ़ जाता है। मैंने भी समय से पहले ही अपनी परीक्षाओं की तैयारी पूरी कर ली थी फिर भी थोड़ा-सा डरा हुआ था। पहले दिन की परीक्षा देने जैसे ही मैं विद्यालय पहुँचा, मेरा डर और बढ़ चुका था। कुछ समय बाद विद्यालय की घंटी बजी और हम सभी छात्र परीक्षा कक्ष में पहुँच गए। दूसरी घंटी बजाने के बाद अध्यापक ने हम सभी को पेपर और कॉपी दी। मैंने पेपर को पढ़ना शुरू किया। पेपर पढ़ते-पढ़ते मेरा सारा भय लगभग खत्म हो चुका था। पूरा पेपर मेरा पढ़ा हुआ ही आया था। यह देखकर मेरा उत्साह बढ़ गया और मैंने तेजी से अपना पेपर हल करना शुरू किया। परीक्षा का समय समाप्त होने को था और अभी दो प्रश्न हल करने शेष थे। अपने भय के कारण मैंने पेपर को पढ़ने में अधिक समय लगा दिया था, जिसके कारण मेरा पेपर समय पर पूरा नहीं हो पाया। पूरी तेजी से लिखने के बावजूद मेरा एक प्रश्न छूट ही गया। मुझे बहुत दु:ख हुआ और मैंने अपने परीक्षा के भय पर काबू पाने का निश्चय किया।

पाठ—21
निबंध लेखन

(क) मेरा मोबाइल फोन

आजकल मोबाइल फोन हमारे जीवन में प्रमुख भूमिका निभाता है। मोबाइल फोन संचार का सबसे तेज साधन माना जाता है। मोबाइल फोन से मानो पूरे विश्व की दूरियाँ समाप्त हो गयी हैं। अब तो सभी के दिन की शुरुआत और अंत मोबाइल फोन से होता है। ऐसे ही मेरे भी दिन की शुरुआत हुई, जिस दिन मेरे जन्मदिन पर मुझे मेरा पहला मोबाइल फोन उपहार के रूप में मिला। यह एक स्मार्ट फोन था। अपना पहला स्मार्टफोन पाकर मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। मैंने अपने मोबाइल फोन से बहुत सारी फोटो खींची और विडियोज भी तैयार करके अपने जन्मदिन के अवसर की यादों को सहेजा। पहले तो मोबाइल फोन से बातचीत हो पाती थी, किंतु जो स्मार्टफोन मुझे मिला, उसमें तो कंप्यूटर की भी सारी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। इससे मेरी कैमरा, घड़ी जैसी रोजमर्रा की जरुरतें भी पूरी हो गईं। इस मोबाइल के द्वारा हम दूर बैठे किसी से बातचीत के साथ-साथ उसे व उसके आस-पास की चीजों को भी देख सकते हैं। इस मोबाइल फोन से नियमित उपयोग में आने वाली वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं और साथ ही उनके पैसे भी दिए जा सकते हैं। इससे घर बैठे ट्रेन, हवाईजहाज और बस आदि की टिकट भी खरीद सकते हैं। इसकी सहायता से मेरे जैसे विद्यार्थी पढ़ाई से संबंधित

पूरी जानकारी और समस्याओं का समाधान भी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। पिताजी ने मुझे मोबाइल फोन देते समय इसके दुरुपयोग न करने की सलाह देते हुए बताया था कि मोबाइल फोन जहाँ हमें अनेक सुविधाएँ प्रदान करता है वहाँ उसका दुरुपयोग हानिकारक है। अधिक समय तक इसका उपयोग आँखों की रोशनी को प्रभावित करता है। साथ ही इससे निकलने वाली किरणें मस्तिष्क पर भी विपरीत प्रभाव डालती हैं। अधिक समय इस पर व्यतीत करने से विद्यार्थी अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं और पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कई हानियाँ होती हैं। यदि इसका उपयोग सही रूप से किया जाय तो यह एक वरदान है। पिताजी की बातें सुनने के बाद मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि मैं अपने मोबाइल फोन का सदुपयोग करूँगा। अपना ध्यान पढ़ाई पर व शारीरिक क्रियाकलापों पर भी दूँगा।

(ख) पर्यावरण प्रदूषण

भूमि, जल, वायु, आकाश, वृक्ष नदी, पर्वत, ये सभी मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। पर्यावरण मनुष्य को प्रकृति का अमूल्य वरदान है। लेकिन बढ़ते प्रदूषण ने पर्यावरण को बहुत हानि पहुँचाई है। प्रदूषण का अर्थ है—दोषयुक्त होना। पर्यावरण के किसी अंग का दूषित या मलिन होना ही प्रदूषण है। पर्यावरण प्रदूषण मुख्य तीन प्रकार का होता है—**(i)** जल प्रदूषण **(ii)** वायु प्रदूषण **(iii)** ध्वनि प्रदूषण।

(i) जल प्रदूषण—जल मानव जीवन के लिए सबसे आवश्यक तत्व है। जल के स्रोतों का गंदा या दूषित होना जल प्रदूषण कहलाता है। जल के स्रोतों के पास कपड़े धोना, पशुओं को नहलाना, मल विसर्जित करना, शव बहाना, कचरा डालना आदि से जल दूषित होता है। इनके अतिरिक्त औद्योगिक कचरा भी इन्हीं में बहा दिया जाता है। जिसके कारण जल पीने योग्य नहीं रहता है।

(ii) वायु प्रदूषण—वर्तमान समय में शुद्ध वायु मिलना भी कठिन हो गया है। वाहनों, कारखानों और सड़ते औद्योगिक कचरे ने वायु में भी जहर भर दिया है। कटते वनों के कारण भी वायु की गुणवत्ता घटती जा रही है।

(iii) ध्वनि प्रदूषण—वर्तमान में मनुष्य को ध्वनि के प्रदूषण को भी झेलना पड़ रहा है। आकाश में वायुयानों की और पृथ्वी पर चलते वाहनों, ध्वनि यंत्रों की कानफोड़ू ध्वनियाँ मनुष्य को बहरा बनाने की क्षमता रखते हैं।

इन प्रदूषणों के अतिरिक्त मृदा-प्रदूषण का एक प्रकार है जिसमें मृदा में तरह-तरह के रासायनिक उर्वरक डालकर उसे बंजर बना दिया जाता है। यदि समय रहते प्रदूषण की समस्या का समाधान नहीं किया गया तो यह प्रदूषण रूपी विशाल अजगर संपूर्ण पृथ्वी को ही निगल जाएगा। इसके लिए हम सभी को मिलकर कार्य करना होगा। उद्योगों को नगरों और नदियों से दूर बसाना होगा। इनसे निकलने वाले कचरे को भी निष्क्रिय करके ही विसर्जित करना होगा। जल स्रोतों के आस-पास गंदगी फैलाने वालो पर दंड का भी प्रावधान होना चाहिए। वाहनों में भी वायु प्रदूषण फैलाने वाले नियंत्रक का प्रयोग करना चाहिए। लाउडस्पीकर जैसे ध्वनि विस्तारक यंत्रों के अत्यधिक प्रयोग पर रोक लगानी चाहिए। जनता और प्रशासन दोनों के गंभीर प्रयासों से ही प्रदूषण से मुक्ति मिल सकती है।

(ग) विज्ञान और हम

आज विज्ञान के बल पर मनुष्य संपूर्ण प्रकृति का स्वामी बन गया है। मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चमत्कार कर दिखाए हैं। हमारी पुस्तकें, कापियाँ और लेखन-सामग्री सब कुछ मशीनों से तैयार होता है। यह विज्ञान की देन है कि आज आकाशवाणी, दूरदर्शन और मोबाइल द्वारा भी शिक्षा प्रदान की जी रही है। आजकल विज्ञान ने हमारी कृषि की उपज को भी कई गुना बढ़ा दिया है। अच्छे बीजों, रासायनिक खादों और कृषि यंत्रों की सहायता से खेती सरल और लाभदायक हो गई है। विज्ञान ने हमारी यात्राओं को भी सरल, सहज और सुगम बना दिया है। कहाँ पहले एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए महीनों लग जाते थे। वहाँ वर्तमान

में ट्रेन, हवाईजहाज तथा वाहनों के आविष्कार ने महीनों की यात्रा को दिनों में और दिनों की यात्रा को घंटों का कर दिया है।

टेलीफोन, मोबाइल फोन, मेल द्वारा समाचार भेजना अब बहुत सरल हो गया है। मोबाइल फोन के बिना तो आज हम स्वयं को अधूरा समझते हैं। इसने अनेक यंत्रों की खूबियाँ खुद में समेट ली हैं और मानव जीवन आसान बना दिया है। हमारे मनोरंजन के साधन भी विज्ञान की ही देन हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने जो प्रगति की है, उसने हमें दूसरा जीवन प्रदान कर दिया है। जानलेवा गंभीर रोगों का उपचार भी अब उपलब्ध है। विज्ञान ने जहाँ हमें अनेक लाभदायक और उपयोगी वस्तुएँ प्रदान की हैं वहीं कुछ विध्वंसक साधन भी तैयार किए हैं जिनका उपयोग युद्ध तथा जन-धन हानि के लिए किया जाता है। विज्ञान एक सेवक के समान हमारे सभी कार्य करता है, किंतु शत्रु की तरह विनाश भी करता है। अत: हमें विज्ञान के आविष्कारों का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए क्योंकि यह निर्माण के साथ-साथ विनाश भी करता है।

(घ) चुनाव का दिन

हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली में चुनाव से आशय लोगों द्वारा चुनाव में खड़े हुए प्रत्याशियों में से अपनी पसन्द के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करना होता है। प्रजातन्त्र में प्रत्येक वयस्क को अपना मत देने का अधिकार है। उसके इसी मताधिकार द्वारा ही लोकसभा, राज्यसभा और निचले स्तर पर होने वाले चुनावों में जनप्रतिनिधियों का निर्वाचन होता है। लोकतन्त्र में केन्द्र, राज्य एवं स्थानीय निकायों के लिए चुनाव की प्रक्रिया अपनाई जाती है, जिसमें जनता अपने मताधिकार द्वारा अपने क्षेत्र के उम्मीदवारों में से एक चयन जनप्रतिनिधियों के रूप में करती है। निर्वाचित जनप्रतिनिधि बहुमत के आधार पर राज्य व क्रेन्द्र में अपनी सरकार बनाकर शासन का संचालन करता है।

चुनाव के दिनों में चारों ओर अलग ही राजनैतिक वातावरण दिखाई देता है। जनता अपने-अपने उम्मीदवारों के गुणगान करती व विपक्ष के अवगुणों तथा उन पर दोषारोपण करती दिखाई देती हैं। चारों ओर राजनैतिक चर्चाएँ होती सुनाई देती हैं। हर वर्ग का व्यक्ति अपनी-अपनी राय रखता है। जगह-जगह उम्मीदवारों के समर्थन में पोस्टर-बैनर लगे दिखाई देते हैं। राजनैतिक दलों के बड़े-बड़े नेता अपनी बड़ी-बड़ी जनसभाएँ सम्बोधित करते दिखाई देते हैं। विभिन्न प्रचार साधनों एवं सामग्रियों में उन्हीं की पार्टी को वोट देने की बात कही जाती है। विभिन्न दलों के पार्टी कार्यकर्ता घर-घर जाकर जन-सम्पर्क करते हैं और अपने-अपने पक्ष में मतदान करने की जनता से अपील करते हैं।

जहाँ भी जाओ बस एक ही चर्चा होती है— यह जीतेगा, वह हारेगा। चुनाव के दिनों में यह दृश्य सुबह से शाम तक दिखाई देता है। जिस दिन चुनाव के लिए मतदान होना होता है उस दिन मतदान करने के लिए अनेक मतदान क्रेन्द्र बनाए जाते हैं। मतदान केन्द्र पर महिलाओं और पुरुषों के लिए मतदान की अलग-अलग व्यवस्था की जाती है। मतदान शुरू होते ही मतदाताओं की अलग अलग लाइनें लग जाती हैं। मतदान केन्द्र के बाहर विभिन्न पार्टियों के कार्यकर्ता हाथ जोड़कर मतदाताओं से उनके पार्टी के पक्ष में वोट (मत) डालने का विनम्र निवेदन करते हुए दिखाई देते हैं। बूथ के अन्दर एक अधिकारी मतदाओं की बायें हाथ की उँगली पर न मिटने वाली स्याही से चिह्न लगाता है। मतदाता आगे जाकर मतदान मशीन पर अपने जनप्रतिनिधि के चुनाव चिह्न के आगे बटन दबाकर अपना मत उसे प्रदान करते हैं। चुनाव के दिन का यह दृश्य लोकतन्त्र के प्रमुख पर्व जैसा दिखाई देता है, क्योंकि इसी चुनाव से ही जन-प्रतिनिधियों का चयन होता है। हमें अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करना चाहिए।

(ङ) इंटरनेट आज की आवश्यकता

आज के दौर में इंटरनेट हमारी आवश्यकता नहीं जरूरत बन गया है। बिना इंटरनेट के आज के समय में हम कुछ चीज नहीं ढूँढ़ सकते हैं। सही मामलों में इंटरनेट एक दूसरे से जुड़े बहुत सारे

कम्प्यूटरों का जाल है जो कि उपग्रहों, केवल तंतु प्रणालियों, एल.ए एल और ए. एन प्रणालियों तथा टेलीफोनों के जरिए सम्पूर्ण विश्व के करोड़ों कम्प्यूटर्स एवं नेटवर्क्स को आपस में जोड़ता है।

आसान भाषा में कहें तो सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए टी. सी. पी/आई. पी प्रोटोकॉल के द्वारा दो अथवा कई कम्प्यूटर्स को एक साथ जोड़ता है जिसको इंटरनेट कहते हैं। 1969 में टिम वर्नर्स ली ने इंटरनेट का आविष्कार किया। इसे सबसे पहले सन् 1969 में अमेरिका प्रतिरक्षा विभाग द्वारा एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी नेटवर्क के गुप्त आँकड़ों और सूचनाओं को दूर-दराज के विभिन्न राज्यों तक भेजने व प्राप्त करने में लाया गया था। हमारे देश भारत में इंटरनेट 1980 के दशक में आया था।

इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है।

इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र, वीडियो आदि दुनिया के किसी भी कोने में पल भर में भेज और प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से ई. मेल भेजे और प्राप्त किए जाते है। इंटरनेट के माध्यम से देश-दुनिया के किसी भी कोने में बैठे अपने प्रियजनों से बात करने के साथ-साथ उन्हें देख भी सकते हैं। इसके माध्यम से हम अपने विचार विश्वभर में फैला सकते हैं। वस्तुओं को खरीद व बेच सकते हैं। इंटरनेट का उपयोग हम ई. मेल भेजने, वीडियो, चैटिंग, नेट सर्फिंग, बिल जमा करना, टिकट बुक करना, शॉपिंग करना, नौकरी खोजने और प्रदान करने में भी करते हैं। वर्तमान में तो बच्चों की शिक्षा और उनके खेलने के लिए गेम्स भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अंतरिक्ष के क्षेत्र में इंटरनेट का महत्वपूर्ण योगदान है। इंटरनेट का अथाह ज्ञान, सूचना, जानकारी इसके संचालन के उपयोग को और अधिक बढ़ा देता है। इसकी इसी विशेषता के कारण उपयोगकर्ताओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

(च) नदियों में प्रदूषण

प्राचीन काल से अब तक मानव तथा अन्य स्थलीय एवं जलीय जीवों के लिए नदियों का महत्व बढ़ता ही गया और साथ-साथ इसके जलों का प्रदूषित होना भी जारी रहा। आज स्थिति यह है कि जिन नदियों को जीवन का आधार समझा जाता था तो अब धीरे-धीरे रोगों का आधार बनती जा रही हैं और यह सब उनमें बढ़ रहे प्रदूषण के कारण हो रहा है।

नदी के जल में घरेलू कूड़ा-कचरा, औद्योगिक रसायनों तथा जलीय वाहनों के अपशिष्टों एवं उनके रासायनिक रिसाव आदि का जल में मिलकर उसको दूषित करने को ही नदियों में प्रदूषण कहा जाता है। नदियों के दूषित जल में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिसके कारण यह जलीय जीवों के साथ-साथ जैव विविधता के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध होता है। इसमें उपस्थित विभिन्न औद्योगिक रसायन सिंचाई के माध्यम से कृषि भूमि की उर्वरा क्षमता को भी घटा देते हैं।

नदियों के जल में उपस्थित प्रदूषण के कारण मछलियाँ रोग ग्रसित हो जाती हैं, जिसके कारण अधिकांश मछलियाँ मर जाती हैं। यही स्थिति जलीय वनस्पति की भी होती है। नदियों का बढ़ता प्रदूषण पारिस्थितिक संतुलन को भी बिगाड़ रहा है। प्रदूषित जल पीने के कारण इंसानों में भी अनेक प्रकार की बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। वर्तमान समय में पूरा विश्व ही प्रदूषित जल की चपेट में है। इसे पूरी तरह नष्ट करना लगभग असंभव-सा है किन्तु कुछ उपायों द्वारा इसे कम अवश्य किया जा सकता है। जैसे—

(i) घरेलू कचरों व गंदे जल का उचित निष्कासन करके।

(ii) नदी प्रदूषण के लिए जिम्मेदार औद्योगिक इकाईयों के लिए कड़े नियम बनाकर उनका कठोरता से पालन करवाकर।

(iii) सामाजिक व धार्मिक रूढ़ियों पर आघात करके व जन-जागरूकता अभियान चलाकर।

(iv) जैविक खेती को प्रोत्साहित करके।

भारत सरकार ने भी समय-समय पर नदियों की सफाई के लिए कदम उठाए हैं—

(i) देशभर के विभिन्न नदियों एवं जल निकायों पर निगरानी रखने के लिए 1435 निगरानी केन्द्रों की स्थापना की है।

(ii) नमामि गंगे परियोजना चलाई है।

(iii) स्वच्छ गंगा परियोजना चलाई है।

नदियों का समस्त जीवित प्राणियों के जीवन में अपना महत्व है। मानव इसके जल का उपयोग सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन में, पशु-पक्षी इसके जल का उपयोग पीने तथा जलीय जीव इसका प्रयोग अपने आवास के रूप में करते हैं। परंतु वर्तमान समय में नदियों के जल के प्रदूषित होने से इसका उपयोग करने वाले जीवों के जीवन में काफी बदलाव आया है। नदियों की उपयोगिता को देखते हुए अगर कोई उचित कदम नहीं उठाया गया तो इनका बढ़ता प्रदूषण मानव सभ्यता के विनाश का भी कारण बन सकता है।

(छ) पुस्तकालय के लाभ

पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है— पुस्तक + आलय अर्थात पुस्तकों का घर। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के जीवन में पुस्तकों की आवश्यकता होती है, परंतु घर में विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें रखना किसी के लिए भी संभव नहीं है। साथ ही वर्तमान समय में पुस्तकें अत्यंत महँगी हैं, जिन्हें खरीदकर पढ़ना सबके लिए संभव नहीं है। लेकिन पुस्तकालय में सभी विषयों पर आधारित पुस्तकें आसानी से व कम पैसों में पढ़ने के लिए उपलब्ध हो जाती हैं। पुस्तकालय ज्ञान के असीम भंडार हैं। पुस्तकालयों में प्रत्येक पुस्तक पढ़ने के लिए उपलब्ध रहती है। हम किसी महापुरुष को जितना पुस्तकों के द्वारा जान सकते हैं, उतना उनके साथ रहने वाले भी उन्हें नहीं जान पाते हैं।

पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने वालों को कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। पुस्तकों को संभालकर पढ़ना चाहिए। पुस्तकों के पन्नों को खराब नहीं करना चाहिए। उन पर पेन या पेन्सिल नहीं चलाने चाहिए। उनके पन्ने मोड़ने व फाड़ने नहीं चाहिए। पुस्तकालय में शांतिपूर्वक बैठकर पढ़ना चाहिए।

पुस्तकालय राष्ट्र की संपत्ति हैं। इनकी देखभाल करना हमारा दायित्व है। अच्छे पुस्तकालय अच्छे नागरिकों का निर्माण करते हैं। पुस्तकालयों की अधिकाधिक स्थापना कराने में अपना योगदान देना चाहिए। पुस्तकालय ज्ञान के भंडार हैं तथा सभ्यता एवं संस्कृति की संकलित निधि हैं।

(ज) अनुशासन

हर एक के जीवन में अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण चीज है। बिना अनुशासन के कोई भी एक खुशहाल जीवन नहीं जी सकता है। कुछ नियमों और कायदों के साथ में जीवन जीने का एक तरीका है। अनुशासन वह है जो हम सही समय पर सही तरीके से करते हैं। ये हमें सही रास्ते पर ले जाता है। अनुशासित व्यक्ति आज्ञाकारी होता है और उसके पास उचित सत्ता के आज्ञापालन के लिए स्व-शासित व्यवहार होता है। अनुशासन पूरे जीवन में बहुत महत्व रखता है।

प्रत्येक व्यक्ति को अनुशासन में रहना चाहिए। अपने जीवन में सफल होने के लिए अपने शिक्षक और माता-पिता के आदेशों का पालन करना चाहिए। सुबह जल्दी उठना चाहिए, दैनिक कार्य करने चाहिए। समय की पाबंदियों का पालन करना चाहिए। अपने से बड़ों की बात का निरादर नहीं करना चाहिए। उन्हें कटुवचन बोलकर दु:खी नहीं करना चाहिए। सही समय पर विद्यालय जाना चाहिए। विद्यालय के नियमों एवं अध्यापकों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। साफ लिखावट में अपना कार्य करना चाहिए तथा सही समय पर दिये गए पाठ को अच्छे से याद करना चाहिए। कभी भी किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए। सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। बिना अनुशासन के कोई भी व्यक्ति जीवन में सफल नहीं बन सकता है। अनुशासित व्यक्ति जीवन की सबसे अधिक ऊँचाइयों की सीढ़ी पर पहुँचता है। अनुशासन ही सफलता की कुंजी है।

(झ) किसी दुर्घटना का वर्णन

एक बार विद्यालय के दो छात्र जो पूर्णावकाश होने पर अपनी-अपनी साइकिल से घर लौट रहे थे। विद्यालय के मार्ग में एक ऐसा मोड़ है जहाँ ट्रैफिक पुलिस के न होने के कारण आए-दिन दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। ये दोनों छात्र उसी मोड़

से गुजर रहे थे कि तभी एक नशे में धुत युवक ने इन दोनों छात्रों की साइकिल में अपनी गाड़ी से टक्कर मार दी। बेचारे दोनों बच्चे साइकिल से उछलकर दूर जाकर गिरे। एक बच्चे को गहरी चोट लगी और वह दुर्घटनास्थल पर ही बेहोश हो गया। दूसरे को थोड़ी चोट आई किंतु अपनी साथी की ऐसी स्थिति और बहते खून को देखकर वह घबराकर जोर-जोर से रोने लगा। टक्कर मारकर वह युवक अपनी गाड़ी तेज भगाकर ले गया। आनन-फानन में वहाँ जमा लोगों ने पुलिस को खबर की और दोनों घायल बच्चों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। जो छात्र होश में था, उससे पूछकर उनके घरवालों को उनके दुर्घटनाग्रस्त होने की सूचना पहुँचाई गई। खबर मिलते ही घरवाले भी तुरंत अस्पताल पहुँच गए। दोनों बच्चों का इलाज शुरू हो गया था। साइकिल चलाने वाले के सिर, हाथ और पैर में गंभीर चोटें आई थीं। वह अभी भी बेहोश था और दूसरे के हाथ और पैर में हल्का-सा फ्रैक्चर हुआ था। लोगों ने टक्कर मारने वाले युवक की गाड़ी का नंबर पुलिस को दे दिया। उस युवक को पकड़ लिया गया। उसे जुर्माना भरने के साथ-साथ जेल की हवा भी खानी पड़ी। दोनों बच्चे खतरे से बाहर थे। खैर जो भी हो परन्तु इस दुर्घटना को देखकर मेरा मन सिहर उठा। यदि किसी एक के साथ भी कोई अनहोनी हो गई होती तो उसके परिवार की क्या दशा होती? यह सब सोचकर भय से ही मेरे रोम खड़े हो गए।

इन दुर्घटनाओं से बचाव के लिए सख्ती से यातायात नियमों का पालन होना आवश्यक है। साथ ही ऐसे अंधे मोड़ों पर यातायात पुलिस की उचित व्यवस्था भी उतनी ही जरूरी है।

(ण) वर्षा ऋतु

भारत में वर्षा ऋतु एक बेहद ही महत्वपूर्ण ऋतु है। वर्षा ऋतु आषाढ़, श्रावण तथा भादों में मुख्य रूप से होती है। यह गर्मी के मौसम के बाद आती है। मनुष्यों के साथ पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी उत्सुकता से वर्षा ऋतु का इन्तजार करते हैं। असहनीय गर्मी के बाद वर्षा ऋतु सभी के जीवन में उम्मीद और राहत की फुहार लेकर आती है। पूरा वातावरण आकर्षक और सुंदर दिखाई देता है। सभी पेड़-पौधे नयी हरी पत्तियों से भर जाते हैं। बाग-बगीचे और मैदान हरी मखमली घास से ढक जाते हैं। जल के सभी प्राकृतिक स्रोत पानी से भर जाते हैं।

वर्षा ऋतु का किसानों के लिए विशेष महत्व है। यह फसलों के लिए बहुत फायदेमंद होती है। वर्षा ऋतु में जीव-जन्तु भी बढ़ने लगते हैं। इस मौसम में हम पके हुए आमों का लुफ्त उठाते हैं। फसलों को पानी मिलता है, पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी आसानी से इसी ऋतु में मिलता है। यह ऋतु पेड़-पौधे, घास, फसल और सब्जियों को बढ़ने में मदद करती है।

वर्षा ऋतु जहाँ खुशहाली फैलाती है, वहीं उससे कुछ कष्ट भी मिलते हैं। सड़क, खेल के मैदान आदि पानी से भरकर कीचड़ युक्त हो जाते हैं। सूरज का पर्याप्त प्रकाश न मिलने के कारण कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है। कभी-कभी वर्षा की अधिकता आपदा का कारण भी बन जाती है। जो बाढ़ के रूप में सब कुछ अपने साथ बहाकर ले जाती है। गाँव, खेत सब कुछ जलमग्न हो जाता है।

जाँच-पत्र—1

ज़रा बताइए तो

- विचारों का आदान-प्रदान तीन प्रकार से किया जाता है—1. बोलकर, 2. लिखकर, 3. संकेत के द्वारा।
- हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं। इनमें 11 स्वर, 33 व्यंजन, 2 उत्क्षिप्त व्यंजन, 2 अयोगवाह और 4 संयुक्त व्यंजन हैं।
- **यौगिक शब्द**—जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने हों और जिनके टुकड़े करने पर टुकड़ों का कोई विशेष अर्थ हो, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं जैसे—हिमालय = हिम + आलय

  योगरूढ़ शब्द—जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं और किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे—जलज = जल + ज (जल में उत्पन्न होने वाला अर्थात् कमल)

- वे शब्द जिनके द्वारा किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, जाति या भाव के नाम का बोध हो, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) मुझे भूख लगी है।

(ख) जल्दी से तुम गाना सुना दो।

2. लड़का

अभिनेत्री

सम्राज्ञी

3. (क) चिड़िया उड़ रही है।

(ख) बच्चे खेल रहे हैं।

4. (क) हे! प्रभु, रक्षा करो।

(ख) पेड़ पर तोता बैठा है।

5. (क) पीले, नीले गुलाबी **गुणवाचक**

(ख) चुटकी भर **अनिश्चत परिमाणवाचक**

6. (क) गगन, अंबर

(ख) अश्व, तुरंग

7. (क) जय

(ख) घृणा

8. जंगल में नीम का पेड़ था। उस पेड़ पर एक गिलहरी और कौआ रहते थे। एक दिन गिलहरी ने कहा-"कौआ भैया, क्यों ना हम भी खेती करके कुछ अनाज इकट्ठा कर लें।" गिलहरी की बात सुनकर कौआ बोला- "ठीक है, कल से काम शुरू करते हैं। पहले खेतों की जुताई करनी पड़ेगी।" गिलहरी ने कहा- "हाँ, कौआ भैया हम सुबह जल्दी उठकर अगर खेतों पर पहुँच जाएँगे तो शाम तक खेतों की जुताई हो जाएगी, फिर अगले दिन हम बीज बो देंगे।" अगले दिन गिलहरी कौए को खेत जोतने के लिए बुलाने गई, लेकिन कौए ने बीमारी का बहाना बना दिया। गिलहरी ने अकेले ही पूरा खेत जोता। कौआ रोज नया बहाना बना देता, जिससे उसे खेत में कोई काम न करना पड़े। बेचारी गिलहरी ने अकेले ही पूरा खेत जोता, बीज बोए, पानी दिया। आलसी कौआ बस बैठा ही रहता था। जब फसल पककर तैयार हो गई तब भी परिश्रमी गिलहरी ने अकेले ही पूरी फसल काटी। गिलहरी ने ईमानदारी से फसल के दो भाग किए। गिलहरी ने अपने हिस्से का अनाज उठाकर सम्भालकर रख लिया। कौआ अपने आलस के कारण रोज 'कल रख लूँगा' यही सोचता रहता। एक दिन बहुत जोर की बारिश हुई। इस बारिश में कौए का पूरा अनाज बह गया और आलसी कौआ पछताता रह गया।

जाँच-पत्र—2

ज़रा बताइए तो

- जिन शब्दों से काम करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। क्रिया दो प्रकार की होती हैं— 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया।
- क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

  काल के तीन भेद होते हैं: 1. भविष्यत काल, 2. वर्तमान काल 3. भूतकाल

आइए, अब लिखते हैं

1. (क) पर संबंधबोधक

(ख) जोर-जोर रीतिवाचक

2. (क) आप कहाँ से आए हैं?

(ख) पूजा, बबली और रेनू सहेलियाँ हैं।

3. (क) भीतर, भेद

(ख) वंश/पूरा, किनारा

4. (क) बढ़ई

(ख) चिकित्सक/डॉक्टर/वैद्य

5. (क) हवा से बातें करना— बहुत तेज दौड़ना।

थोड़ी ही देर में ट्रेन हवा से बातें करने लगी।

(ख) प्राणों की बाजी लगाना—बहुत साहस करना।

देश को आजाद कराने के लिए क्रांतिकारियों ने प्राणों की बाजी लगा दी।

6. (क) स्वयं मुसीबत मोल लेना

(ख) बहुत परिश्रम के बाद नाममात्र का लाभ मिलना

7. ऐसा गद्यांश, जो पहले पढ़ा न गया हो, अपठित गद्यांश कहलाता है।

8. आरव—कहो मित्र, आज सुबह ही सुबह कहाँ जा रहे हो?

समीर—मित्र, मैं पास ही के खेल-मैदान में जा रहा हूँ।

आरव—क्या आज वहाँ कोई खेल हो रहा है?

समीर—हाँ, आज वहाँ कबड्डी का खेल हो रहा है।

आरव—क्या तुम भी कबड्डी खेलते हो?

समीर—हाँ मैं भी खेलता हूँ, उसी में भाग लेने जा रहा हूँ। आओ, तुम भी साथ चलो।

आरव—हाँ-हाँ, क्यों नहीं, मैं दर्शकदीर्घा में बैठकर तुम्हारा और तुम्हारी टीम का उत्साहवर्धन भी करूँगा।

समीर—कबड्डी खेलने से शरीर स्वस्थ और तंदुरुस्त रहता है। मेरा मानना है, तुम्हें भी कबड्डी अवश्य खेलनी चाहिए।

आरव—हाँ, तुम ठीक कहते हो। आज के इस खेल के बाद तुम मुझे भी अपनी टीम में शामिल कर लेना और इस खेल से जुड़े सभी नियम भी समझाना।

समीर—अवश्य मित्र, तुम्हारा हमारी टीम में स्वागत हैं। अभी चलें, मैदान में पहुँचने में कहीं देर न हो जाए।

9. सेवा में

श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय

रा. उ. प्रा. विद्यालय,

जबलपुर

विषय—दो दिन के अवकाश प्राप्ति हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं शीतज्वर से पीड़ित हूँ। इस कारण दो दिन तक विद्यालय नहीं आ सकूँगा। अतः श्रीमान जी से प्रार्थना है कि दिनांक 20-7-20_ _ से 21-7-20_ _ तक दो दिन का अवकाश प्रदान कर मुझे अनुग्रहीत करें।

दिनांक 20-7-20_ _ आपका आज्ञाकारी शिष्य

सुदर्शन

कक्षा-5 (ब)

10. पुस्तकालय के लाभ

पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है— पुस्तक + आलय अर्थात पुस्तकों का घर। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के जीवन में पुस्तकों की आवश्यकता होती है, परंतु घर में विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें रखना किसी के लिए भी संभव नहीं है। साथ ही वर्तमान समय में पुस्तकें अत्यंत महँगी हैं, जिन्हें खरीदकर पढ़ना सबके लिए संभव नहीं है। लेकिन पुस्तकालय में सभी विषयों पर आधारित पुस्तकें आसानी से व कम पैसों में पढ़ने के लिए उपलब्ध हो जाती हैं। पुस्तकालय ज्ञान के असीम भंडार हैं। पुस्तकालयों में प्रत्येक पुस्तक पढ़ने के लिए उपलब्ध रहती है। हम किसी महापुरुष को जितना पुस्तकों के द्वारा जान सकते हैं, उतना उनके साथ रहने वाले भी उन्हें नहीं जान पाते हैं।

पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने वालों को कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। पुस्तकों को संभालकर पढ़ना चाहिए। पुस्तकों के पन्नों को खराब नहीं करना चाहिए। उन पर पेन या पेन्सिल नहीं चलाने चाहिए। उनके पन्ने मोड़ने व फाड़ने नहीं चाहिए। पुस्तकालय में शांतिपूर्वक बैठकर पढ़ना चाहिए।

पुस्तकालय राष्ट्र की संपत्ति हैं। इनकी देखभाल करना हमारा दायित्व है। अच्छे पुस्तकालय अच्छे नागरिकों का निर्माण करते हैं। पुस्तकालयों की अधिकाधिक स्थापना कराने में अपना योगदान देना चाहिए। पुस्तकालय ज्ञान के भंडार हैं तथा सभ्यता एवं संस्कृति की संकलित निधि हैं।